प्रकाशक,
गोकुलदास धूत,
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर

पहली बार · १९५१

मूल्य
अढ़ाई रुपये

मुद्रक
नैशनल प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली

प्रकाशकीय

काश्मीर का प्रश्न आज विश्वव्यापी बन गया है। सयुक्तराष्ट्र-सघ अभी तक उस गुत्थी को नही सुलझा सका है। वैसे उसकी कहानी में कोई उलझन नही है। सभी जानते है कि पाकिस्तान ने किस प्रकार, सीमा पार के कबाइलियो को धर्म के नाम पर भडकाकर इस सुन्दर प्रदेश को बरबाद करने की छुट्टी दे दी थी। उन्होने वहा क्या किया इसके बारे में बहुत-सी रोमाचकारी कहानियां लोगो ने सुनी है पर अबतक उसका कोई प्रामाणिक विवरण जनता के सामने नही आया था। ऐसा विवरण वही दे सकता है जो उस भयकर सघर्ष से गुज़रा हो। इस पुस्तक की लेखिका श्रीमती कृष्णा मेहता मुज़फ्फराबाद के तत्कालीन जिलाधीश स्व० श्री दुनीचन्द मेहता की पत्नी है। मेहता साहब ने आक्रमण के समय वीरतापूर्वक अपना कर्तव्य पूरा करते हुए मौत को गले लगाया था और तब उनकी पत्नी और बच्चो को जिस भीषण और मर्मस्पर्शी परिस्थितियो से गुज़रना पडा था उसीका निष्पक्ष वर्णन लेखिका ने किया है। श्रीमती मेहता लेखिका नहीं है परन्तु घटनाओ की तीव्रता ने उनकी लेखनी में वह शक्ति भर दी है कि शब्द स्वयं बोल उठते है। उन्होने जहां मनुष्य के भीतर जागते हुए राक्षस को देखा है वहां शैतान के भीतर शिव के दर्शन भी किये है और दोनो का समान भाव से वर्णन किया है। यह लेखिका के निष्पक्ष दृष्टिकोण का प्रमाण है।

इस पुस्तक में केवल रोमाचकारी घटनाओ का ही वर्णन नही है बल्कि एक इतिहासकार के लिए तथा राजनीति के उस विद्यार्थी के लिए, जो काश्मीर के प्रश्न की निष्पक्ष जांच करना चाहता है, बहुमूल्य और प्रामाणिक सामग्री भी है।

श्रीमती मेहता चूकि लेखिका नहीं है इसलिए पुस्तक की भाषा आदि के सशोधन में उनका अन्य बन्धुओ से सहायता लेना स्वाभाविक था। सर्वश्री विष्णु प्रभाकर तथा शम्भुनाथ भट्ट ने विशेष रूप से इस पुस्तक के संशोधन और सम्पादन में योग दिया है इसलिए वे लेखिका और प्रकाशक दोनों के धन्यवाद के अधिकारी है।

विषय-सूची

: १ :

तूफान से पहले

काश्मीर के पश्चिमोत्तर में सीमा के समीप मुज़फ्फराबाद का प्रदेश है। कबाइली हमले से पहिले यह रियासत काश्मीर का एक ज़िला था। यह छोटा-सा प्रदेश पर्वतो से घिरा हुआ और हरा-भरा है। इसके बीच से कृष्णगंगा नदी बहती है। यहाके लोगो की वेश-भूषा पंजाबियों से मिलती-जुलती है। यहाके लोग मेहनती और सरल है—प्रकृति के नियम के अनुसार धनवान भी है और निर्धन भी। इस देश के लोग—अधिकतर—देखने में सुन्दर और सुडौल है। यहासे एक रास्ता रावलपिंडी को जाता है और दूसरा एबटाबाद, ज़िला हजारे को। ये दोनों स्थान पाकिस्तान में है। रियासत काश्मीर की ओर से यहा एक वजीर-वज़ारत (जिलाधीश) और कई अफसर—सबजज, असिस्टेंट इन्स्पेक्टर पुलिस, इजीनियर, असिस्टेंट सर्जन तथा जंगलात का डिविजनल अफसर—हुआ करते थे।

मै जिन दिनो की बात लिख रही हूं वह भारत विभाजन के बाद का समय था और उन दिनो शासन की ओर से यहां एक फौज का कर्नल और उसके साथ फौज की एक टुकड़ी भी थी।

जुलाई सन् १९४७ में मेरे पति श्री दुनीचन्द मेहता को काश्मीर सरकार ने मुज़फ्फराबाद वजीर-वज़ारत बनाकर भेजा। श्रीनगर में वह असिस्टेंट गवर्नर के पद पर थे। वह जुलाई में ही अपना नया पद सम्हालने के लिए श्रीनगर से मुजफ्फराबाद गये। मै उस समय साथ जा न सकी, क्योकि हमारे यहां बहुत से अतिथि आये हुए थे। एक मास पश्चात् वे किसी सरकारी काम से श्रीनगर आये और वापसी पर बच्चो को साथ लेते गये। मुझे दो-तीन दिन के पश्चात् आने को कह गये क्योकि

हमारे अतिथि भी दो-तीन दिन वाद जानेवाले थे । मुज़फ्फरावाद पहुंचते ही उन्होने एक कर्मचारी को मुझे लेने के लिए भेजा, ताकि रास्ते में मुझे कोई कष्ट न हो ।

एक सप्ताह के पश्चात् मै भी मुजफ्फरावाद चली गई। मै वहां पहुची ज़रूर; किन्तु इस वार मुझे वहां कुछ अच्छा-सा न लगा। यह मै नही जानती थी कि वात क्या है। कोई अपरिचित जगह भी तो नही थी। हम वहा चौथी वार गये थे। परन्तु न जाने क्यो इस वार मुझे वहा हर चीज़ से डर-सा लग रहा था। मै हैरान थी कि वात क्या है । दिल इतना उदास रहा कि श्रीनगर से साथ लाया हुआ सामान तक भी मैने पूरा न खोला, कुछ आवश्यक चीजे ही खोलकर उपयोग में लाती रही। शेप सव वधी-की-वंधी रखी रही। जी चाहता था कि कही दूर भाग जाऊ । वातो-ही-वातो में मै उनसे (श्री मेहता से) अक्सर कह भी देती थी कि हमें कही जाना है, यहा नही रहना है। इस कारण मै सामान नही खोलूगी ।

मेरे पति उन दिनो काम में इतने व्यस्त थे कि उन्हे वात करने तक का अवसर नही मिलता था। कर्नल के साथ वे कभी एक सीमा पर और कभी दूसरी सीमा पर जाते, गाव-गाव फिरते परन्तु उन्होंने हमें यह कभी नही वताया कि यहा कुछ गड़वड होनेवाली है । देखते-देखते हमारी कोठी के सामने वाली पहाड़ियों पर मोर्चे वनने आरम्भ हो गए । हमारी कोठी एक छोटे से टीले पर थी । उसके चारो ओर काफी खुली जगह थी। उसके वीच में एक छोटा-सा मैदान और वाग़ था। वाग़ और कोठी के चारो ओर लकडी के तख्तों का जंगला लगा हुआ था। हमारी कोठी से थोड़ी दूर असिस्टेंट इन्स्पेक्टर पुलिस की कोठी थी। उस जगह से लगभग दो फरलांग दूर हस्पताल और डाक्टर की कोठी थी। हमारी कोठी के एक ओर कुछ दूरी पर एक मस्जिद थी और दूसरी ओर साथ ही मुसलमानों की एक ज़ियारतगाह के साथ घास और घने वृक्षों से आच्छादित घना जंगल था। पहाड़ी के वीच में से एक छोटी

सी पगडंडी हमारी कोठी को इस जियारतगाह से मिलाती थी। इस राह से मनुष्यो का आना-जाना कम ही होता था। हा, कभी-कभी जब वहां गिद्ध और उल्लू बोलते तो उनकी तलाश में कुत्ते जरूर उस राह से गुजरते देखे गये थे।

मेरे मुज़फ्फराबाद जाने के तीन दिन बाद जन्माष्टमी का त्योहार आया। हम सबने घर में व्रत रखा। शाम को मैं भगवान् के दर्शन के लिए मन्दिर में गई। पूजा की सामग्री और फल-फूल लिये नौकर साथ था। लेकिन जैसे ही वह द्वार पर पहुंचा उसने ठोकर खाई और उसके हाथ से थाल गिर पड़ा। उसी समय मेरा माथा ठनका कि हो-न-हो कुछ होने वाला है। यह भगवान् ने खतरे की घंटी दी। दो दिन तक उस घटना का असर मेरे मन पर रहा। तीसरे दिन मैं सब कुछ भूल गई। पर उस महीने मे अजीब ही बातें देखने में आई। सांप इतने निकलते थे कि हम उनकी वजह से बेहद परेशान थे। कभी वे बच्चो के झूलों पर पाये गए तो कभी बैडमिंटन खेलने की जगह पर। एक दिन तो हमारे यहां सोये हुए दो चपरासियो के मुह पर एक बड़ा साप गिर पड़ा। खैरियत यह हुई कि उसने काटा नहीं। ऐसा लगता था कि काल हर तरफ़ से हमें निगलना चाहता है। मैं अपने बच्चो सहित नित्य सायकाल को ध्यान से ईश्वर-भजन करती थी। इतना आनन्द आता था कि हर समय भजन में ही लगे रहने की चाह रहती थी।

मैं अपने घर को एक आदर्श गृहस्थी समझती थी। मैं कभी उससे ऊबी नही थी। हमें कितनी ही आर्थिक और दूसरी कठिनाइया सहनी पड़ी थी, परन्तु गृहस्वामी की सत्यनिष्ठा के कारण हम हमेशा निश्चिंत रहते थे। हम जानते थे कि हमारे घर में ऐसी कोई बात नही होती जिसके कारण दूसरो के सामने शर्मिन्दा होना पडे। यद्यपि मेरे पति एक अच्छे पद पर थे, परन्तु हमारा घरेलू-जीवन मज़दूरो का-सा था। हमारे घर में कभी कोई चीज़ मुफ्त या रिश्वत के रूप

मे नही आती थी। वे अक्सर मुझसे कहा करते थे, "मेरे पास धन नही है। मेरे बच्चे सच्चाई और मेहनत की कमाई पर पले हुए है। तुम्हें चाहिए कि तुम इनको तपस्या का जीवन बिताना सिखाओ। वही इनके काम आयेगा। सुख का जीवन मनुष्य के लिए एक बोझ बन जाता है।"

बच्चे तो उनकी देख-रेख मे ऐसे ही बने थे, पर मै उनके जीते जी अपने आपको तपस्विनी न बना सकी। एक धनी बाप की पहली संतान होने के कारण मैने अपना बचपन आराम और अमीरी में बिताया था। दास-दासियों के बीच पली हुई होने से मेरे दिमाग़ पर कुलीनता और अमीरी का भूत सवार था। शुरू मे जब मै ससुराल आई तब से मैने अपना जीवन अपने पति के जीवन के अनुरूप कष्ट-सहिष्णु बनाना चाहा, किन्तु ऐसा कर न पाई। मन चाहता था कि मै भी जीवन को वैसा ही कठोर बनाऊं, परन्तु ऐसा होता नही था। बहुत बार तो मै अपनी इस अक्षमता पर रो-रो पड़ती थी।

जब मुजफ्फराबाद मे मेरा मन नही लगा तो मैने उनसे कहा, "मै दो-चार दिन के लिए श्रीनगर जाना चाहती हू। बच्चे यही रहें, मै शीघ्र लौट आऊगी।" पहले तो वे मान गये और सीट का प्रबन्ध भी कर आये, परन्तु बाद मे कहने लगे, "अभी न जाओ। मैं कुछ फौजी अफसरो को दावत पर बुलाना चाहता हूं, यह काम करके तुम चली जाना।"

और कुछ दिन यो ही बीत गये। एक दिन उन्होने बाहर से आते ही कहा, "सुनो, आज कर्नल साहब मुझसे कह रहे थे कि मैं अपने बच्चो को श्रीनगर भेज दूं और खुद उनके यहा जाकर रहूं। कर्नल यह भी कह रहे थे कि दोमेल मे—जहा पर वे रहते थे—जीप और फोन आदि का खासा प्रबन्ध है। सूचना देने और आने-जाने के साधन की आवश्यकता पड़ने पर भी परेशान नही होना पड़ेगा।" मैने पूछा, "तो आपने उन्हे क्या जवाब दिया।" वे बोले, "मैने कर्नल से कह दिया है कि मझसे यह नही हो सकेगा कि मै जनता को तो शासन

के आदेशानुसार यहासे बाहर न जाने दूं और अपने परिवार को भेज दूं। अगर कुछ गड़बड़ी हुई तो जो हाल सारी जनता का होगा वही मेरे बीवी-बच्चो का भी होगा। मै अपने कर्तव्य-पथ से गिरना नही चाहता।" यह सुन मेरा हृदय प्रफुल्लित हो उठा और उनके प्रति श्रद्धा से मेरा सिर झुक गया। मैंने उनका उत्साह बढाते हुए कहा, "आपने जो कुछ कहा है, बिल्कुल सही कहा है। आपको अपने निश्चय पर दृढ रहना चाहिए। भगवान् आपकी सहायता करेंगे।"

यहा पर एक बात स्पष्ट करने योग्य है कि मुजफ्फराबाद सीमा प्रदेश होने पर भी शासकवर्ग की लापरवाही के कारण असुरक्षित था। और तो और, समय पर सूचना देने के साधन फोन आदि तक की व्यवस्था नही थी। हां, यह आदेश अवश्य था—लोगों को डर के कारण शहर छोड़ने नही दिया जाय।

इस समय की बातचीत से मुझे कुछ-कुछ मालूम हुआ कि यहा गडबड होनेवाली है; यह भी शक गुजरा कि वह इस बारे में सब कुछ जानते हैं। उन्होने जीवन में मुझसे कोई बात नही छिपाई थी। प्रायः प्रत्येक बात पर वह मेरी राय लेते थे। घर की खटपट मै जानती ही न थी। कभी भी मैंने ऐसा कोई काम नही किया जो उनकी इच्छा या आज्ञा के प्रतिकूल हो। उन्हें भी मुझे कभी कुछ कहने की जरूरत नही पडी थी। हम एक दूसरे की भावना इशारो-इशारो में ही समझ जाते थे। लेकिन कुछ भी हो उन दिनो उनकी सदा शात रहनेवाली तबीयत में कुछ झुझलाहट की झलक दिखाई पडती थी। वह मुझसे बाहर की बातो का भेद नही बताते थे। मै भी हैरान और परेशान थी। यही सोचकर चुप रहती थी कि काम की अधिकता के कारण वह ऐसे हो रहे हैं। परन्तु एक ओर तो यह हालत थी, दूसरी ओर वह अपने बाग में सब्जिया और फूल लगवा रहे थे। उन्हें इन बातो का बडा शौक था। वह घर की खाने-पीने की चीजों में बडी दिलचस्पी लेते थे। मुझे ऐसी कई बातो में उनसे काफी सहायता मिलती थी।

२१ अक्तूबर, १९४७ को हमारे यहां रात के समय फौज के कर्नल और कैप्टिन आदि की दावत थी। उस दिन थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो रही थी और इस कारण कुछ-कुछ सर्दी भी थी। रात के दस बज गये पर वे लोग खाने पर नही आये। सब पास ही की पुलिस सुपरिन्टेंडेंट की कोठी मे बैठे हुए थे। खाना मैंने खुद पकाया था। मैंने बुलावा भेजा। जवाब मिला कि कैप्टिन कही जीप पर गये है, उनके आने पर खाना होगा। ये जाति के मुसलमान थे और सीमा की गति विधि जानने के लिए गये थे। लौटकर उन्होने "सब ठीक है" की सूचना दी। खाना खाकर सभी अपने-अपने ठिकानो पर चले गये।

रात को साढे बारह बजे मेहता साहब अपने सोने के कमरे में आये। सोये, पर उन्हे नींद नही आई। तब वे सब बच्चो को उठा लाए और लगे सबके साथ रमी (ताश का एक खेल) खेलने। मुझे भी मजबूर होकर खेल में शामिल होना पड़ा। फिर उन्होने चाय मगवाई। मै हैरान थी कि ये आज क्या कर रहे है। मेरे न चाहने पर उस दिन उन्होंने यह कहते हुए मुझे चाय पीने के लिए मजबूर किया,"देखो, आज मै तुम्हे चाय पीने के लिए कह रहा हूं। कल से तुम्हे कोई नही कहेगा, सुना। पीछे पछताओगी।" यह सुनते ही मेरे कलेजे मे धक-धक होने लगी। मैंने चाय ली, परन्तु न जाने प्याली में क्या गिर पड़ा। मैंने उसे झट फेंक दिया और वहमी मनुष्य की तरह उनसे बार-बार पूछने लगी, "आपने अभी यह क्या कहा था।" वे कहने लगे, "कुछ नही, मुह से ऐसी ही बात निकल गई।" थी तो बात साधारण सी और कही भी उन्होंने मजाक मे ही थी, परन्तु उसने मेरे हृदय में तीव्र वेदना पैदा कर दी। मैंने खेल बन्द कर दिया, सबको बंद करना पड़ा। रात काफी हो चुकी थी। सब सोने के लिए अपने-अपने कमरो में चले गए। कुछ क्षण बाद उन्होंने मुझे आवाज़ दी कि बच्चो को कमरे में सुलाकर बेबी को मेरे पास ले आओ (बेबी मेरा सबसे छोटा लड़का है, उसकी आयु उस समय ७ वर्ष की थी)। वह उसे बहुत चाहते थे। मै उसे उठाकर ले

आई और उसे उनकी चारपाई पर सुला दिया। वह सोये हुए बेबी को देखकर कहने लगे, "देखो यह कैसा मस्त सोया पड़ा है।" मैंने इस बात का उत्तर नही दिया। मैं उनके उस दिन के विलक्षण व्यवहार को देखकर सोच में पड गई थी कि आखिर ये कर क्या रहे है। कुछ देर बाद देखते-ही-देखते वह भी गहरी नीद में सो गये।

: २ :

तूफान आगया

सवेरे के ५ बजे होगे; अचानक मेरी आख खुली। मैंने सुना गोलियों की भयानक आवाज पर्वत की ओर से चट्टानो से टकरा-टकरा कर आरही है। मै झट उनकी चारपाई के पास जाकर उन्हे जगाने लगी, किन्तु वे इतनी गहरी नींद में थे कि कई आवाजो के बाद जागे। मेरे मुह से अचानक ये शब्द निकले, "हमला होगया, आप उठते क्यो नहीं" (हालाकि मुझे कुछ खबर नही थी)। उन्होंने करवट बदलते हुए कहा, "यह हमला नहीं है। हमारी फौज चांदमारी कर रही होगी।" मैंने जल्दी से उनसे पूछा, "क्या रात को कर्नल ने चादमारी के विषय में आपसे कुछ कहा था?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं तो।" मैंने हड़बड़ाकर कहा, "तब तो हमला हुआ है। आप उठिए, क्या सोच रहे है?" उन्हे फिर भी यकीन नही आ रहा था। मेरे अनुरोध पर वे उठे और उन्होने बाहर जाकर मैदान में जो कुछ देखा उससे मालूम हुआ कि गोलियां दनादन हमारी ही कोठी की तरफ आ रही है और लकडी के जंगले से टकरा रही है। वह तेजी से आगे बढे। मैंने कहा, "आप जरा बचकर जाइये, ऐसा न हो कि कही गोली लग जाये।" उन्होने जल्दी में संक्षिप्त-सा उत्तर दिया, "मुझे गोली नही लगती।" इतना कहकर वह कपड़े पहन बाहर निकल आये।

मैं बच्चो को साथ लेकर बरामदे मे आई और गोलियो के आने

वाली दिशा की ओर देखने लगी। हमें कोई आदमी नज़र नही आ रहा था परन्तु गोलियों की बौछार निरन्तर आती दिखाई दे रही थी। कुछ गोलियां जगले के तख्तो को चीरकर भीतर तक आती थी; किन्तु बच्चों के दिल में ज़रा भी भय नही था। वे जोर-जोर से हस रहे थे। मैंने बच्चो से कहा, "जाकर कपड़े पहन आओ, सर्दी लगने का डर है।" रात को कुछ वर्षा हो जाने के कारण सर्दी होगई थी। मेरे दोनो लड़के, जिनमे से एक की आयु सात वर्ष और दूसरे की साढे आठ वर्ष की थी, जाकर थोड़ी ही देर मे कपड़े पहन आये। बड़े ने बुश शर्ट पहन रखी थी। छोटे ने एक स्वेटर भी पहना हुआ था। नगे पैर वे फिर दौड़े-दौड़े बरामदे में आये। चारो लड़कियां भी पुराने 'पुल ओवर' पहन कर नंगे पैर ही तमाशा देखने आईं। इनमे एक मेरे जेठ की लड़की थी, जो कुछ समय पहले मेरे पास श्रीनगर आई थी और हमारा तबादला होने पर मेरे साथ यहा चली आई थी। इस चौदह वर्षीय लड़की का नाम स्वदेश था। मेरी बड़ी लडकी वीना साढे चौदह साल की थी, मंझली शीला साढे दस साल की और सबसे छोटी कमलेश साढे नौ साल की थी। ये सब अबोध बालक गोलियो की आवाज पर हस-हंस कर लोट पोट हो रहे थे। न जाने क्यो मेरे मन में भी उस समय अधिक घबराहट नही थी। मैं भी बच्चो के साथ वह दृश्य देखती रही। जब गोलियो का वेग अधिक बढ़ा तब मैंने बच्चों से भीतर जाने के लिए कहा पर वे एक न माने, उल्टे मुझे ही डरपोक बताने लगे।

इधर हम इन बातो में लगे थे, उधर ग्राउन्ड के बाहर सब-इन्सपेक्टर पुलिस तेईस सिपाहियो को साथ लिये मेहता साहब से आ मिला। इन सिपाहियो में बीस मुसलमान थे और तीन हिन्दू। सब-इन्सपेक्टर स्वयं हिन्दू राजपूत था। वजीर साहब को उन्होने बताया कि हमला हो गया है और शत्रु कृष्णगंगा का पुल पारकर नगर के समीप आ रहे है। इतने मे वह भीतर आये। मैंने उनसे पूछा, "आप दोमेल जाकर फौज क्यो नही बुला रहे है?" वह बोले, "गोलियां

तेजी से चल रही है, कुछ थम जाय तो दोमेल जाऊं। तुम वच्चो को चाय वगैरा तो दो।" इतना कहकर वह फिर तेजी से वाहर निकल गये और उसके वाद वापस नही लौटे। मेरी और उनकी यह अन्तिम मुलाकात और अन्तिम वातचीत थी। हा, वाहर जाते-जाते वच्चो को देखकर वड़े जोर से हसे और वोले, "देखो! मेरे वच्चे गोलियो की आवाज सुनकर ज़रा भी नही घवराते, निर्भय होकर हस रहे है। इन्हे ऐसा ही होना चाहिए।"

इस भयानक विपत्ति के समय कोठी के सव कर्मचारी तितर-वितर होगये थे। मेरे पास केवल मेरा एक नौकर ओमप्रकाश रहा। वह हमारे ही इलाके का था और वड़ा विश्वासपात्र सेवक था।

हम अव परेशान थे कि क्या करे। नगर में चारो ओर भगदड़ मची हुई थी। गोलियों की वौछार, लोगों के चीत्कार और हाहाकार से दिल दहल रहा था। इतने में वाहर से किसी व्यक्ति ने आकर कहा, "हमलावर हस्पताल तक पहुंच गये है। वे जहां जाते है आग लगाते है। हस्पताल में आग लगा दी गई है, वेचारे असहाय रोगी भीतर ही जल रहे है।" यह सुनकर मै सहमी। हस्पताल विलकुल करीव था। मैंने वच्चो को अदर कमरे में कर लिया। हमारी कोठी एक-मंजिली थी। दोनो ओर वरामदे थे। रसोई पीछे की ओर थी और उसी तरफ से पूजा के कमरे में से होकर पीछे जियारतगाह वाली पगडंडी के सामने एक दरवाज़ा खुलता था। मैंने जल्दी में न जाने क्या सोचकर जेवर उतारे और एक पोटली में वांध लिये। उस समय मेरे तन पर सवसे पुराने और हल्के कपड़े थे। मैंने तव यह सोचा तक नही कि कोई मजवूत कपडा पहनू।

मै अभी मुश्किल से अन्दर गई थी कि आवाज़ आई, 'सुपरिन्टेंडेंट की कोठी जल रही है।' अव मेरे होश उड़े कि क्या किया जाय। कुछ समझ में नही आ रहा था कि पिछले दर्वाजे से हमारे एक मुसलमान चपरासी ने द्वार खटखटाकर कहा, "आप यहां क्या कर रही है?

हमलावर आपके सोने के कमरे का द्वार तोड़ रहे है। वे लगभग ६० आदमी है। आप कृपा कर वच्चो समेत वाहर आ जाइये। हम जियारतगाह वाली पगडंडी पर कही इन वच्चो को छिपा देंगे।" घवराहट मे मैंने उससे पूछा, "मेहता साहव कहा है ?" वह कहने लगा, "वे मोर्चे पर गये है और महफूज है। आप जल्दी आ जाइये।" मै किंकर्तव्य विमूढ-सी हो रही थी। एक ओर तो मैंने सोचा कि वे अपना कर्त्तव्य निभा रहे है। मेरे ऊपर वच्चों की रक्षा का भार है। किसी भी प्रकार उनकी रक्षा करके मुझे यह कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए। दूसरी ओर मेरे मन में यह खटका था कि उनकी गैरहाजिरी में घर छोड़ना अच्छा नही है। आखिर मै भारतीय नारी थी। मैं इसी दुविधा मे थी कि वाहर से वह फिर हड़वडाकर वोला, "जल्दी कीजिए, नही तो गजव हो जायगा। ये लोग वुरी तरह से मार-काट करते आरहे है।" यह सुनकर मुझसे न रहा गया। नगे पाव खाली हाथ एक चादर और एक गुप्ती साथ लिये वच्चों को लेकर, मै उस भरे घर से, सव कुछ छोड़छाड कर चल दी। गुप्ती इसलिए साथ रखी कि अगर कही कभी इन मासूम वच्चों की इज्जत पर हमला हो तो इससे पूर्व कि वे अपमानित हो, इस गुप्ती से वे सदा की नीद सोकर अपने मान-धन की रक्षा कर सकें।

वाहर निकलते ही हम जियारतगाह वाली पगडंडी पर चल पड़े। जाती वार मैंने उस उजड़ी हुई वस्ती पर एक निगाह डाली जहां कुछ क्षण पहले मेरी सुख-पूर्ण गृहस्थी वसी हुई थी और अव डरावना अंधकार छाता जा रहा था। गोलियां अव भी चल रही थी, इतनी जोर से, कि कानों के पर्दे फटे जारहे थे। न जाने, उस समय हम उस अलंघनीय पगडंडी से जा कैसे रहे थे। पांव फिसल जाता तो गिर कर लाश तक के टुकडे-टुकड़े हो जाते। थोड़ी दूर चलकर हम घास पर सुस्ताने वैठे। तभी जोरो से वर्षा होने लगी। जो कुछ कपड़े हमारे तन पर थे, वे भी भीग गये। वच्चे सर्दी से ठिठुरने लगे। मैंने उनके ऊपर खेस डाल दिया। वे वेचारे उसमे दुवककर वैठे रहे।

अव गोलियो की आवाज और भी नज़दीक से आने लगी । मैं एक अनजान राही की तरह वहां वैठी थी कि हस्पताल का एक वूढा कर्मचारी चरण घवराया हुआ पास से गुज़रा । मैंने पूछा, "भैया तुम इतने घवराये हुए क्यो हो ?" वह वोला, "मेरा वारह वर्ष का लड़का हस्पताल में था और वह अव जल रहा है । सुना है कि जितने मरीज वहां थे वे सवके सव उसके साथ जल रहे हैं । न जाने मेरा वच्चा कहा होगा ?" यह कहते हुए ममता भरा हृदय लेकर वह हस्पताल की ओर दौडा चला गया । वाद में पता चला कि उसकी लाश हस्पताल के करीव पडी देखी गई थी और उसकी गोद में उसका झुलसा हुआ मुर्दा वच्चा था ।

हम लगभग ढाई घटे वही पडे रहे । सर्दी के कारण वच्चो का रग उड गया, मानो उनमें खून ही नही था । इतने मे हमें ढूढता हुआ ओम् वहा आया । वह रो रहा था । मैंने एकदम उससे पूछा, "ओम् ! तुम कहां थे, रो क्यो रहे हो ?" वच्चे उसे रोता देखकर हंसने लगे, "वाह ओम् ! तुम कितने डरपोक हो । देखो हम नही डरते । तुम तो कहते थे कि तुम किसी से नही डरते । अव यह क्या हो गया है जो कायर वनकर रो रहे हो ?" वह कुछ नही वोला । मैंने उससे फिर पूछा, "वात क्या है वताओ तो, तुम इतना रो क्यो रहे हो ।" वह ज़रा रुककर वोला, "जव आप यहां आई तो मैं कोठी में ही था । साठ कवाइली वहां आये और सव जेवरात और कीमती कपड़े निकाल कर ले गये । और साहव के कपडे भी अलमारी से निकाल कर पहन रहे थे ।" मैंने उसकी वात काटते हुए कहा, "वस, इसी पर तुम इतना रो रहे हो । भाई, कपडे और जेवर हमने ही तो वनवाये थे । जिन्दा रहे तो फिर वनवा लेंगे । पर, हां, एक वात सुनो । अगर तुम कोठी में जाकर साहव का गर्म सूट ला सको तो अच्छा होगा । वे प्रात.काल ठडे कपड़ो में ही गये है, उन्हें सर्दी लग रही होगी ।" यह सुनते ही उसने एक आह भरी और जाने के लिए उठा । पर कुछ

दूर चलकर फिर लौट आया, कहने लगा, "मैं नही जा सकता। जब मैं यहा आ रहा था तो कोठी मे से किसीके कराहने की-सी आवाज सुनी थी।" इतना कहते-कहते वह सहसा रुक गया। तब न जाने क्या सोचकर मैंने भी उससे कहा, "अच्छा, रहने दो।" इतने मे हमारी कोठी जलती हुई दिखाई पड़ी। हमारे साथ के चपरासी ने कहा, "देखिये, आपका घर जल रहा है।" यह देखकर मेरी छोटी लड़की कमलेश घबराई हुई कहने लगी, "माताजी, मैं क्या करू ? मेरी गुड़ियो का घर जल रहा होगा और बीच में बेचारी गुड़ियां भी जल गई होंगी।" नन्ही बालिका को तो गुड़ियो के ही ससार का परिचय था। पर मैं यह देखकर स्तब्ध रह गई। "हे भगवान्, अब मै क्या करूं ? जाने वह किस हाल मे और कहा होंगे ? अब मै इन नन्हें बच्चो को लेकर कहां जाऊं ?" इधर मेरी परेशानी बढ़ रही थी, उधर अब बच्चो की हसी गायब थी। उन्हें लग रहा था कि विपत्ति आ रही है परन्तु वे मौन थे। चपरासी कहने लगा, "माताजी, चलिए मै आपको कही महफूज़ जगह पहुचा आऊ, नही तो ये बच्चे सर्दी के मारे मर जायगे। और कही हमलावर भी आप सबको ढूढने यहा आये तो क्या बनेगा। हमें यहा से चलना चाहिए।" हम सब उठ खडे हुए और अपना सर्वस्व गवाकर दर-दर की ठोकरे खाने चल पड़े। बच्चे चल रहे थे, नगे पैर— मुड़-मुड़कर जलते हुए घर के काले धुए को आकाश से बाते करते देखते हुए। आहे भरने के सिवा हमारे पास अब धरा ही क्या था।

चलते-चलते हम एक नाले पर पहुचे। सामने से दस-ग्यारह आदमी हमारी ओर आते हुए दिखाई दिये। हममें सबसे आगे सुरेश था। उन्होने उसे रोककर पूछा, "बता तू किसका लडका है और कहां जारहा है ?" सुरेश ने उत्तर दिया, "मै यहां के वजीर का लड़का हूं।" वह जानता था कि ऐसा कहने में ख़तरे का डर है; किन्तु उसे सच बोलने की दीक्षा मिली थी। इसलिए वह झूठ न बोल सका। यह जवाब सुनते ही उन्होंने कहा, "हां, हा, तुम सब जल्दी जाओ।

तुम्हारे लिए वजीर साहब ने नवावा चपरासी के यहा ठहरने का इतजाम किया है।" यह नवावा तहसील का चपरासी था। हम गिरते-पडते नवावा के घर पहुचे। यह मकान हमारी कोठी से आधे मील की दूरी पर एक ऐसी ऊची जगह था, जहा से सारा शहर नज़र आता था।

मेरे वहा पहुचते ही उसका सब परिवार और शहर के कई मुसलमान जो भाग कर यहा आये थे, बाहर निकले और मुझे आदर से भीतर ले गये। कहने लगे, "तू हमारे नेक हाकिम की स्त्री है। हमारी आखो में तेरी इज्जत वैसी ही कायम है। घर अपना है—बैठिये।" मैं अदर गई। कई औरतो ने मेरे बच्चो की हालत देखकर आसू बहाये और हमलावरो को जली-कटी सुनाने लगी। मैंने उन लोगो से मेहता साहब के बारे में पूछा, "वे कहा है ?" वे बेरुखी से बोले, "हमें मालूम नही कि वे कहा है।" कुछ देर बाद वहा सुपरिन्टेंडेंट पुलिस का अर्दली शिवदयाल आया। यह बारामूला का रहनेवाला था, हमारी कोठी पर अक्सर आया करता था। आते ही वह ओम् से मिला। दोनो कुछ बातचीत करने लगे। मैंने शिवदयाल से पूछा, "भाई, तुम्हे मालूम है कि मेहता साहब कहा है ? तुम तो तब वही थे, जब वह घर से बाहर निकले थे।" वह बोला, "वे साहब (सुपरिन्टेंडेट पुलिस) के साथ तेईस सिपाही लेकर हाईस्कूल की तरफ गये है। वहा सैनिको ने कई दिन पहिले एक तोप गाड रखी है और वे वहा महफूज है।"

इधर बच्चे सर्दी के मारे थर-थर काप रहे थे। यह देखकर नवावा की औरत ने आग जलाई। मैंने बच्चो के गीले कपडे उतार-उतार कर उसपर सुखाये, अच्छी तरह तो क्या सूखते, फिर भी कुछ अन्तर जरूर हुआ।

वहा से शहर के जलने का भयानक दृश्य देखकर यही प्रतीत होता था कि प्रलय हो रही है। चारो ओर हाहाकार मचा हुआ था। पहाडियो पर लोग अपने परिवारो समेत भागते नजर आ रहे थे। आग की लपटें आसमान से बातें कर रही थी। आकाश धुए से ढक गया

था। जहां मै थी वहां पर भी वहुत से आदमी आसपास से आकर इकट्ठे हो गये। मै पागलो की तरह हरएक व्यक्ति से मेहता साहव का हाल पूछती थी। कोई कुछ कहता तो कोई कुछ। सही उत्तर कोई नही देता था। आनेवाले वस इतना कहते जाते थे कि हमलावर मर्दो को मार रहे है, औरतो और लड़कियो को पकड़कर ले जारहे है। जिस मकान में घुसते है लूटकर फिर उसमें आग लगा देते है।

चार वज गये। वच्चो ने प्रात.काल से कुछ भी नही खाया था। भूख से वे निढाल हो रहे थे। घर की मालिकन ने यह देखकर मकई के आटे की एक रोटी वनाई और वच्चो के लिए मुझे दी। मैंने उस रोटी के छ. हिस्से किये और प्रत्येक वच्चे को एक-एक हिस्सा दे दिया।

: ३ :

बीच भंवर में

रात के दस वजे तक हम इसी तरह वैठे रहे। दस वजे नवाबा आया और अपनी स्त्री को वाहर वुलाकर कुछ कहने लगा। वह जव लौटकर आई तो मुझसे कहने लगी, "आप हमारे यहांसे अभी चली जाइये, आप यहां नही रह सकती। हमलावर यहां आकर हमें तुम्हें पनाह देने पर मार देंगे।" मैंने कहा, "मै इस अधेरी रात में कहा जाऊ। मै यहां किसी को नही जानती।" परन्तु उसने मेरी एक वात नही सुनी। इतने में उसके पति ने भी अन्दर आकर कहा, "आप जल्दी यहासे चली जाइये। वजीर साहव और पुलिस सुपरिन्टेंडेंट दोनो जीप में ऊडी गये है।" मुझे उसकी यह वात मनगढ़न्त लगी। मैने उससे तत्काल कहा, "तू गलत कहता है, वे ऐसे भागनेवाले नही है।" उसने झट कुरानपाक की कसम खाकर कहा कि नही वे ऊड़ी गये है।

मैं जव दिन मे यहां आई थी तव उन्होने मुझे इज्जत से वैठाया था। पर अव रात के घोर अंधकार में वे मुझे निकाल रहे थे। मैंने मन-ही-मन

कहा, "मनुष्य कितनी जल्दी वदल जाता है। अभी देवता होता है तो अभी राक्षस वन जाता है।" पर मैं कर क्या सकती थी। लाचार होकर मैंने उससे कहा, "अगर तुम्हें मेरे कारण नुकसान पहुंचने का डर है, तो मैं अभी यहा से चली जाती हूं। जो होगा, सहन कर लूगी; परन्तु अपने लिए किसीको मुसीवत में नही डालूंगी। पर एक वात है तुम्हें हमारे साथ आना होगा। मै अपनी कोठी के चौकीदार के घर जाना चाहती हू।" वह कुछ दिन पहले छुट्टी पर गया था। वह जाति का मुसलमान था और वड़ा सज्जन था। उसका घर यहां से काफी दूर था। नवावा कहने लगा, "अच्छा मै जोगियो के गांव तक आपको पहुंचा आऊगा। सुवह वहा का नम्वरदार आपको उस चौकीदार के गाव तक पहुंचा देगा। यह जोगियो का गाव प्रसिद्ध गुडो का गाव था। मैं उसके कहने के ढग से उसकी शरारत भाप गई। इसलिए मैंने अपने साथ ओम् और शिवदयाल को लिया। उनके अतिरिक्त वह चपरासी जो हमें कोठी से निकाल लाया था, साथ आया।

रास्ता पहाड़ी था—कांटो और ककरो से भरपूर। इतना भयानक कि पैर फिसला और हड्डी-पसली चूर। उसपर हिंसक जंतुओ की आवाजें सुनाई दे रही थी। सामने शहर जलता हुआ दिखाई दे रहा था। जलती आग की रोशनी में जलते हुए मकान काले ठूठ के समान लग रहे थे। गोलिया अव भी चल रही थी।

मैं अपने इस छोटे से काफिले में सवसे पीछे थी। यह हमारी विपत्ति-यात्रा का पहला सफर था। न जाने क्या सोचते हुए हम इस भयानक रात में चल रहे थे। कुछ दूर चलकर हम एक पहाडी वस्ती पर चढे। नवावा ने वहा एक आदमी को वुलाकर कहा, "भाई, हम सुवह तक तुम्हारे यहां ठहरना चाहते है।" उसने हमें अपने यहां ठहराया। असल में वह उसका कोई रिश्तेदार था। वच्चे इस कदर थके हुए थे कि आगे चलने की तनिक भी शक्ति नही थी। वेचारे सर्दी से पहिले ही परेशान थे—उसपर कपड़े कुछ-कुछ गीले थे। इसलिए

उनके दात वज रहे थे। घरवालो ने एक खाट और एक रजाई दी। वच्चों को एक मोटी-सी मकई की रोटी भी खाने को दी। मैंने लेने से इन्कार करना चाहा पर वच्चों की ललचाई आंखें देखकर मै ऐसा न कर सकी। लाचार मैंने रोटी लेकर वच्चो में वाट दी। उसे खाकर वे खाट पर लेटते ही गहरी नीद में सो गये। मै भी वच्चो के पास पड़ी रही। जो रजाई हमे ओढ़ने को मिली थी यदि कुछ समय पहले वह हमें कोठी के आसपास कही पड़ी हुई मिलती तो उसे दूर फिकवाना तो मामूली वात थी, हम उस जगह तक को साफ करवाते; पर अव यह अवस्था थी कि उसी रजाई के लिए हमें दिल से उनका धन्यवाद करना पड़ा।

इस कमरे मे वहुत से तेज धारवाले भाले चमक रहे थे, उन्हें देखकर दिल दहल उठता था। हम लगभग आधा घंटा लेटे होगे कि मुझे वाहर से कुछ आदमियो की कानाफूसी सुनाई दी। मै उठी और किवाड़ खोलकर देखने लगी। वहा तीन व्यक्ति आपसमे धीरे-धीरे कुछ वातें कर रहे थे। उनमें से एक नवावा था। वाकी दो मेरे परिचित नही थे। उन दोनो मे से एक के हाथ मे पैनी धार का भाला था और दूसरे के हाथ में एक कुल्हाड़ा। मैंने उनसे पूछा, "तुम क्या सलाह कर रहे हो?" नवावा उठा और जल्दी से कहने लगा, "आप यहा भी नही रह सकती क्योंकि सवेरे यहा पर भी हमलावर आनेवाले है। आपकी खातिर वे इनको भी तवाह कर देंगे। आपको अभी यहासे चले जाना चाहिए।" यह सुनकर मेरा सिर चकरा उठा। सवेरे से मैंने पानी तक नही पिया था। चिन्ताएं इतनी थीं कि कुछ सूझता नही था फिर भी—इनपर हमारे कारण कोई विपत्ति न आये, यह ख़याल अवश्य आया। इसी कारण मैंने उत्तर दिया, "मुझे रास्ता मालूम नही है, तुम्हें साथ चलना पडेगा।" वह कहने लगा, "मै तो नही चल सकता। मेरे वच्चे अकेले है। हा, मै यहा से एक आदमी आपके साथ कर दूगा। पर आपको उसे वीस रुपये देने होगे।" मैंने कहा, "भाई! मै घर से वीस पैसे भी लेकर नहीं चली हू, वीस रुपये कहा से दू।" वह वोला, "पर उसे इसमे क्या, वह तो रुपये लेगा,

आप कहीं से दे ।" मै परेशान थी कि रुपये कहा से दू । हममें से किसी के पास रुपये नही थे । सब एक दूसरे का मुह ताकने लगे । वह व्यक्ति उस समय इतना कठोर बन गया कि उसने साफ कह दिया, "मै फिर आपकी कोई सहायता नही कर सकता । आप यहां से निकल जाये ।" तब एकदम मेरा ध्यान जेवरो पर गया । मैंने कान का एक जेवर (टाप्स) उसे दिखाया और कहा, "यह लो, मै तुम्हे यह देती हू ।" बस माया ने उसे जकड लिया । वह झट बाहर से एक व्यक्ति को लाया और बोला, "यह इसे दे ।" मैंने कहा, "यहा तो मै नही दू गी; ठिकाने पर पहुच कर ही दू गी ।" वे चाहते तो सब कुछ छीनकर मुझे निकाल देते । पर उन्हें इस बात का खयाल नही रहा कि मेरे पास कुछ और भी है । मैंने बच्चो को जगाया । बेचारे हडबड़ाकर उठ बैठे और आनेवाली विपत्ति की राह देखने लगे । मैंने उनसे कहा, "उठो चलें । घबराने की कोई बात नहीं । मुसीबत का मुकाबिला करना हम लोगो का फर्ज है ।"

हम उस नये आदमी के साथ चल पड़े । नवाबा साथ नही आया । रात के एक बजे हम सब अधेरे में रास्ता टटोलते हुए जारहे थे । वहां सड़क नही थी । काटो और ककडो से भरपूर पहाडी पगडडी थी । प्रभु की कृपा से हमे न तो कही काटा ही चुभा और न ठोकर ही लगी ।

कुछ दूर चलकर पीछे से हमे एक आवाज़ सुनाई दी । मैंने पीछे मुडकर देखा, एक सिख नवजवान टार्च जलाये हुए हमारे पीछे-पीछे आरहा था । मेरे साथी उसे पहचानते थे । उन्होने उससे पूछा, "कहां जारहे हो ?" उसने एक नामी सिख सरदार का नाम लेते हुए कहा, "वह और उसका परिवार इस रास्ते से भाग रहे थे कि उनका दस साल का बच्चा पहाडी से गिर पडा । उसकी दशा बडी शोचनीय है । क्षणो का मेहमान है । आप भी अपने बच्चो को हिफाज़त से ले जाइये ।" मै उस समय क्या कर सकती थी । चारों ओर मौत ही मौत दिखाई दे

रही थी। सब बच्चे आगे थे और मैं सबसे पीछे थी। अंधेरे मे कभी-कभी हम एक दूसरे से बिछुड़ जाते थे। तब बड़ा परेशान होना पड़ता था।

चलते-चलते शिवदयाल पास आकर कहने लगा, "मैं कुछ आगे गया था, वहा कुछ हिन्दू मिले थे। उनके साथ मुजफ्फराबाद का एक नामी रईस भी है। उन्होंने मुझसे कहा है कि अगर तुम लोग अपना भला चाहते हो तो अपने साथी मुसलमानो को अलग कर दो और हमारे साथ आओ। उसने मुझे उन लोगो की बात मान लेने को कहा। मैंने भी यही उचित समझा और मुसलमान भाई से कहा, "भाई ! अब तुम जाओ, अपने बाल-बच्चो को सम्भालो। हमे जहा किस्मत ले जायेगी वहां चले जायेंगे।" और प्रतिज्ञानुसार मैंने कान का जेवर उसे दे दिया। उसने प्रसन्नता से लिया और बड़े अदब से सलाम करके लौट गया। जाते समय एक दर्द भरी दृष्टि उसने मेरी और मेरे बच्चो की ओर डाली। लगता था कि वह भी हमारे दु ख से दु खी है। मानव-मन के कितने रग है।

हम कुछ आगे बढे। देखा कि कुछ पुरुष, स्त्री और बच्चो का एक काफिला जा रहा है। हम भी उसके साथ आ मिले। रास्ते में एक पुरुप ने मेरे छोटे बच्चे पर दया करके उसे गोदी मे उठा लिया। वह बहुत थक गया था। चलते-चलते हम एक स्थान पर पहुंचे। उसका नाम 'बोथा' था। वहां गुरुद्वारा था। हम सब उसीमे ठहरे। हमसे पहले वहां और कुछ आदमी थे। अंधेरे मे कुछ सुझाई न देता था। प्यास के मारे जान निकल रही थी। साथ वाले आदमियों ने थोड़ा-सा पानी पिलाया। परन्तु देखते ही देखते वहा से एक-एक करके सब आदमी चले गये। किसीने हमे साथ चलने तक को नही कहा। हमने भी साथवालों को ढूढा परन्तु वहां तो हरएक को अपनी-अपनी पड़ी हुई थी। मैंने शिवदयाल से कहा, "भाई, तुम भी साथ न छोड़ देना। कही ठिकाने पर पहुंचा कर ही जाना।" वह बोला, "मा, मैं जब तक हूं कभी इस दुःख में तुम्हारा और इन बच्चों का साथ नही छोड़ूंगा।"

मैंने उससे कहा, "हमे यहां नही रहना चाहिए क्योंकि वे लोग गुरुद्वारा जलाने के लिए प्रातःकाल ही आवेंगे। हमें कही आगे चलना चाहिए।" परन्तु हम कहा जायें, किस रास्ते जायें इसका हमें कुछ पता नही था। फिर भी वहां रहना हमनें ठीक नही समझा। हम उठे और चल पड़े। जो रास्ता सामने दिखाई दिया उसीको हमने पकड़ा।

कुछ देर चलने के वाद थोड़ी-थोड़ी रोशनी होने लगी। हम लगातार चलते चले गये। आगे एक पहाड़ी पर चलते हुए हमें लाठियां लिये कुछ व्यक्ति दिखाई दिए। उन्होंने हमें पहाडी पर चढ़ने से रोका। कहने लगे, "तुम कहां जा रहे हो?" हमने चौकीदार के गांव का नाम वताया। उन्होंने कहा, "खवरदार! आगे एक कदम न रखना, सरकार का हुक्म है कि कोई इस रास्ते न जाय।" हम जहां के तहां खड़े रहे। पूछा "हम कहा जायें?" पर उन्हें इस वात से कोई मतलव नही था। उस समय उनकी आखो में खून उतरा हुआ था। वे सव मुज़फ्फरावाद के किसान थे। अगर वे चाहते तो हमें लाठिया मार-मार कर वही ढेर कर देते। पर न जाने क्यो उनका हाथ हम पर नही उठा। उन्होंने हमें जाने दिया। हम चढ़ाई से नीचे उतरने लगे। अव हममें एक कदम चलने की भी हिम्मत नही रही थी। सर्दी के कारण वच्चो का रंग नीला हो गया था, और दांत कटकटा रहे थे।

नीचे उतरकर हमें एक वूढ़ा मुसलमान मिला। मैंने उससे कहा, "वावा, अगर तुम एक घंटे के लिए हमें अपने घर ले चलो तो वड़ा उपकार होगा। ये वच्चे हाथ गर्मा लेंगे।" उसे कुछ दया आई। वह हमें अपने घर ले गया। उसका घर मुजफ्फरावाद से लगभग १० मील दूर था। वह एक गरीव किसान था। उसके मकान में अगले भाग में एक वरामदा था। कमरे में एक ओर गाय-भैंसें वधी हुई थी। उसीमे एक तरफ चूल्हा था। कुछ टूटे-फूटे वर्तन थे और दो-चार फटे-पुराने लिहाफ। दो एक खाटें भी थी। एक तलवार भी खूंटी पर लटक रही थी। उसके परिवार

मे दो लड़के, तीन लड़किया और घरवाली थी। भीतर लेजाकर उसन हमे आदर से विठाया और अपनी स्त्री से कहा, "ये हमारे मेहमान है, इनका अदव करना हमारा फर्ज है। देखो तो इनकी क्या हालत है? खुदा रहम करे।" वच्चे आग देखते ही चूल्हे से चिमट गये। हम सवने हाथ गर्माये। उसका लडका मेरे वड़े लड़के का सहपाठी निकला। उसने वाप से जाकर कहा कि यह वजीर साहव का लडका है। वे दोनों आपस में गले मिले। उस समय इन मासूम वच्चो का कैसा अजीव मिलन था। अव उसकी मां हमारे लिए खाना पकाने की चिंता मे लगी। उसने चाय और मकई की रोटी वनाई। साथ ही कुछ भुट्टे भूनकर दिये, वच्चो ने चाय पी और रोटी खाई। मैंने सिर्फ भुट्टे के कुछ दाने खाये। इच्छा तो कुछ खाने की न थी पर खाये इसलिए कि मेरे दात भी वैठ रहे थे। हमे वहां पहुंच कर इतना सुख मिला कि मैं वर्णन नही कर सकती।

वे खाना वनाने मे लगे। मुझसे पूछा, "तुम सव हमारे हाथ का पका हुआ भोजन खाओगी कि नहीं? अगर नही तो खुद वनाओ।" मैंने कहा कि मुझे इस वात का परहेज नहीं है, परन्तु मैं खाना नही खाऊगी। वच्चे खा लेंगे। उनके पास जो कुछ था सो उन्होने निकाला, पकाया। पर गरीव की झोपड़ी मे इतना कहा कि सवका पेट भर जाय। फिर भी जो टुकडा-टुकड़ा वच्चो के हिस्से मे आया उससे उनका जीवन वना रहा, यही क्या कम था। उसके वाद उन्होने कमरे मे हमे एक खाट दी। मैं और वच्चे मुर्दो की तरह उसपर पड़ गये। शिवदयाल और ओम् जमीन पर सोये। इतने में वाहर से यह शोर सुनाई दिया कि हमलावर कही नजदीक आ पहुचे हैं। मैंने उठकर शिवदयाल से कहा, "भाई, सुनो, यह तलवार सामने लटक रही है। जव वे लोग यहा आवेंगे तो तुम फौरन इन सव लड़कियो को इससे कत्ल कर देना।" लड़कियां भी वेचारी तैयार थीं। किन्तु कुदरत को कुछ और ही मजूर था। जिसके घर मे हम ठहरे हुए थे उसके पड़ोसी उसके खिलाफ हो गये।

वे उसपर दवाव डालने लगे कि वह हमे अपने यहां से निकाल दे। वह भला आदमी था। कहने लगा, "भाई घर पर आये मेहमान को मै नही निकाल सकता। हमारा मजहव हमे यह नही सिखाता। तुम लोगो ने इस समय खुदा को भुला दिया है। याद रखो खुदा सव देख रहा है।" परन्तु उसकी कौन सुनता था। वे तो अपने आग्रह पर डटे रहे।

कुछ देर वाद घर का मालिक कही वाहर चला गया। तव उसके एक करीवी रिश्तेदार ने उसकी स्त्री और वच्चो से कुछ सलाह की और वन्दूक हाथ में लेकर भीतर आया। हम सव खाट से उतर कर नीचे खडे होगये। उसने वन्दूक तानकर कहा, "यहा से निकल जाओ नही तो अभी फायर कर दूंगा।" यह व्यक्ति सीमा-प्रात में पहले कही फौज में रह चुका था। मैंने दिल में सोचा कि अच्छा है कि यह फायर कर दे, हम वहादुरी से गोलिया खायेंगे। और उससे कहा, "तुम फायर करदो, तो अच्छा है; मै इन समय कहा जाऊ?" हममें दस कदम चलने की भी हिम्मत नही थी। उसने हमे वहुत धमकाया परन्तु हमारा उत्तर यही मिला कि वह फायर करदे। कुछ देर वाद वह वोला, "अच्छा तुम और तुम्हारे वच्चे यहां रह सकते है किन्तु यह दो मर्द यहा नही रह सकते।" वह दोनो भी जाना चाहते थे क्योकि उनको मार दिये जाने का डर था। मैंने उनसे कहा, "भाई, जाओ। मेरे लिये अपने आपको विपत्ति में न डालो। भगवान् सव अच्छा ही करेगा।" वे दोनो वच्चो को देखते हुए और आसू वहाते हुए विवश होकर चले गये। और हम सव एक ठंडी आह भरकर खाट पर वैठे रहे। साथ लाई हुई गुप्ती ओम् अपने साथ ले गया। सारा दिन हम वही पडे रहे। वच्चो को दो दिन से पेट भर खाना नही मिला था। वार-वार वे आहें भर रहे थे। मैंने अव वच्चो से कहा, "घवराओ मत, हिम्मत से काम लो। यह तुम्हारी परीक्षा है। देखो, मै तुम्हें अक्सर अपनी प्राचीन संस्कृति की कहानिया सुनाया करती थी। क्या था हमारी प्राचीन संस्कृति का

आदर्श ? अपने आत्म-गौरव के लिए मौत स खेलना, बस । वही तुम्हें भी करना है।"

गांव के सब लोग लूट-खसोट करने बाहर गये हुए थे । केवल स्त्रियां घरो मे थी । दिन भर यही कोलाहल मचा रहा कि अब यहां पहुंचे और अब वहां । फलां गांव जलाया, अमुक गांव लूटा । बेचारी स्त्रियां भय से काप रही थी और कबाइलियो को भरपेट कोस रही थीं । इसीमें रात हो गई । कोई सोया नही । घर का मालिक कही से थोड़ा सा आटा लाया और अपने परिचित जनो को थोड़ा-थोड़ा दे आया ।

: ४ :

मुंहबोला भाई

बारह बजे तक हम लोग बैठे रहे। बारह बजे घर की मालिकन और उसका एक रिश्तेदार भीतर आकर कहने लगे, "यहां से अभी निकल जाइये। हम तुम्हें यहां नही रख सकते।" मैंने कहा, "अभी-अभी तो हमारे साथियो को निकाल दिया । अब रात के बारह बजे मैं इन बच्चो को लेकर कहां जाऊं। रातभर रहने दीजिए। सवेरे हम चले जायेंगे।" वे कुछ सुनने को तैयार न थे। मुझे वह आदमी शरारती नजर आ रहा था । कहने लगा, "हम तुम्हे उस ऊंची पहाड़ी पर पहुचा देंगे जहां गर्मी के दिनो मे हम मवेशी रखते हैं। वहा पत्थरों की एक कन्दरा है । उसमें तुम और बच्चे रहना । कभी-कभी हम लोग तुम्हें यहा से खाना पहुंचा देंगे।" मुझे कुछ सूझ नही रहा था कि क्या करू और कहा जाऊं? जाने किन पापो का प्रायश्चित करना पड रहा है। परन्तु भगवान् भी समय-समय पर इस तरह बचाता है कि आश्चर्य से चकित रह जाना पड़ता है। वे जब हमको बहुत ही तंग करने लगे तो एक नवयुवक वहां आया और मेरी ओर

आसू भरी आखो से देखकर कहने लगा, "वहिन! मैं एक मामूली आदमी हू! क्या तुम मेरी एक वात मानोगी—मैं तुम्हे अपनी वहिन समझता हू और जहा तक मुझसे हो सकेगा, अपने ऊपर आपत्तिया झेलकर मैं तुम्हारी रक्षा करूगा। मेरे हृदय की आवाज मुझे मजबूर कर रही है कि तुम्हारी कुछ मदद करू।" मुझे न जाने क्या सूझी। मैंने सहसा फिर सिर के डुपट्टे का आचल फाड़ा और उसके हाथों में राखी वाधी। अगुली से खून निकाला और उससे उसके माथे पर तिलक लगाया। उसने भी यह सब चुपचाप करने दिया। मुझे यह सब करने से एक अद्भुत सुख का अनुभव हो रहा था। मैंने उससे कहा, "भैया, यह हमारी पुरानी सभ्यता है। हुमायू के समय में भी यह रस्म हुई थी और भाई को वहिन का कौल निभाना पडा था। मैं भी तुम्हें अपना भाई समझ रही हू। आशा है कि तुम इस प्रतिज्ञा को निभाओगे।"

कुछ देर वाद उसने उन घरवालो से कहा, "रात भर इन्हें यहां रहने दीजिये। प्रात:काल मैं इनको अपने घर ले जाऊगा।" और यह कहकर वह चला गया।

उसके चले जाने के वाद हम सोये रहे।

प्रात:काल जव मैं उठी तो मेरा मन वहुत दु:खी हो रहा था। रह-रहकर रोना आता था। मन में उठ रहा था कि उनकी (मेहताजी) जान सलामत नही है। पर दूसरे ही क्षण मन में विचार आया, "यह आसू वच्चो के लिए वहुत हानिकर होंगे। उनका मन टूट जायेगा और फिर वे वहादुरी से विपत्तियो का सामना नही कर सकेंगे।" यह सोचकर मैंने रोना वन्द कर दिया और जाकर वच्चो के पास वैठ गई।

घर का मालिक और मालिकन कही वाहर चले गये थे और उनके पीछे उनके वारह वर्षीय लडके ने हमें घर से निकाल दिया। उसने कहा "यहा से चले जाओ, हम तुम्हें यहा नही रहने देंगे।" हमें निकलना पड़ा। वह समय वडा भयानक था। मैंने सुना कि उस गांव की हिन्दू

स्त्रियो और कन्याओ ने एक मकान मे अग्नि प्रज्वलित की और स्वच्छ कपड़े पहन कर मंत्र-पाठ करते हुए उसमे कूद पडी । इस तरह उन्होने हसते-हसते जौहर की प्रथा का अनुकरण किया। कहते हैं वाद मे हमलावरों ने जलती हुई लाशे खीचकर वाहर निकाली और उनके शरीर से जेवर उतारे। जिस समय पास के गाव में यह सव हो रहा था उसी समय उन्होने हमें घर से निकाल दिया। मैंने वच्चों को आगे चलने को कहा और खुद उनके पीछे-पीछे चलने लगी। कहां जाऊ, यह कुछ समझ मे नही आ रहा था। पर चलना था सो सीधे ही चल पड़ी। कुछ दूर चलकर एक पहाड़ी पर चलना पडा। रास्ते में चट्टान की आड़ मे एक कन्दरा दीख पड़ी । वच्चो को मैंने उसके भीतर विठाया। खुद सामने वैठ गई।

वच्चो को कदरा में इसलिए विठाया कि आनेजानेवालो को लड़कियो के वारे मे मालूम न हो। हम वहा लगभग २॥ घटे ठहरे। आसपास से गोलियो की आवाज़ आरही थी किन्तु हमें कोई नहीं लगी। कुछ देर वाद रातवाला मेरा मुहवोला भाई मुझे खोजता हुआ वहा आ पहुचा। उसे देखते ही वच्चे खुश हुए और कहने लगे, "देखो मां, तुम्हारा भाई आगया।" उसने पास आते ही हमे जल्दी चलने को कहा। हम सव उसके साथ हो लिये। जव हम उसके घर पहुचे तो उसने सन्तोप की सास ली और कहा, "सवेरे मै दोमेल हमलावरो से यह पूछने गया था कि कुछ स्त्रियो को अपने यहां रखू या नहीं? उन्होने रखने की इजाज़त दे दी है। अव मैं खुले तौर पर तुम्हारी मदद कर सकूगा। पर न जाने कव कौनसी पार्टी यहां आजाय और पूछे कि ये कौन है तो उस समय क्या कहूगा। क्योंकि तुम्हारी शक्ल सूरत हमसे नहीं मिलती है। मेरा विचार है कि जव वे पूछे कि यह कौन है तो मैं कहूगा, मेरी वहिन है और इसकी शादी स्यालकोट में हुई है। क्या तुम्हे यह तजवीज़ पसद है? इसमें कुछ हर्ज नही है। लड़कियो के वचाने के लिए तुम्हें यह सव करना पडेगा। तुम फिक्र मत करो। खुदा पर यकीन रखो। सव ठीक होगा।"

यह सुनते समय मेरा रोम-रोम उसका धन्यवाद कर रहा था। वह भी तो मुसलमान था। उसने तत्काल हमें दूध और रोटी लाकर दी। उसके परिवार मे कुल ७ सदस्य थे। दो छोटी-छोटी लड़किया, विमाता, और पिता। एक विवाहित बहिन और एक छोटा भाई। एक बरामदे और दो कमरो का उसका मकान था जिसमें उसके मवेशी भी साथ-साथ ही बंधे रहते थे। उसकी आर्थिक दशा दयनीय थी पर हृदय विशाल था।

हमारे लिए उसने मवेशीवाले कमरे मे एक ओर एक खाट बिछादी। चारपाई के नीचे गोबर पर एक चटाई डालदी गई। हम लोगो को उसी चटाई पर लेटना पडा। वहा गोबर की इतनी दुर्गन्ध थी कि दम घुटने लगता था। दूसरी ओर मन मे आशका थी कि न जाने अब क्या सलूक हो। प्यास बेहद लग रही थी। घडी-घड़ी गला सूखता था। सास जोर से लेने तक की मनाही थी। इधर बच्चो को पानी पीने के कारण पेशाब ज्यादा आता था। पेशाबघर तो वहा था नही इसलिए उन्हे बार-बार बाहर जाना पडता था। डर था कि कोई गाववाला देख न ले।

हमलावर मुकामी मुसलमानो में यह प्रचार कर रहे थे, "मुसलमानो, तुम्हें तैयार रहना चाहिए। सिख तुम पर हमला करेंगे।" बस फिर क्या था, गाव के सभी मर्द लाठियां, भाले, फरसे, बर्छे और बन्दूकें ले-लेकर घरो के बाहर घूम रहे थे। ऐसा मालूम हो रहा था कि सबके सब राक्षस खड़े हुए है। मनुष्यता उनमें नाम को नही रही थी।

इस प्रकार वह दिन भी बीत गया। थाड़ा अंधेरा हुआ तो उन्होंने हमें उस कैदखाने से निकाला। हम बाहर बरामदे में बैठ गये। उसकी बहिन बाप के वहा न आने पर रोने लगी। मैंने उसे ढाढस बंधाते हुए कहा, "बेटी, रोने से क्या होगा, उठकर रोटी बनाओ।" ये बेचारे गुर्बत के पजे में इतने जकड़े हुए थे कि उस समय उनके पास खाने का सामान तक न था। फसल तैयार थी पर वह सब खेतो में बिना कटे पड़ी थी। इस समय आटा कहा से आये, यह समस्या थी। बड़ी मुश्किल से कही से वह भाई थोडा सा आटा, चावल और काशीफल

११५९९

लाया। काशीफल का एक हिस्सा मैंने चूल्हे की राख मे भूनने को रख दिया। उनके बच्चे पूरी खुराक न मिलने के कारण बहुत कमजोर थे। भूख की ज्वाला शांत करनेके लिये वे भुट्टे भून-भून कर खाते थे।

और लोग लूटमार में व्यस्त थे किन्तु मेरा भाई इन बातो से नफरत करता था। वह सचमुच एक उच्च कोटि का व्यक्ति था। कुछ देर ठहर कर मैंने अपने बच्चो से कहा, "देखो, बिना काम किये कुछ खाना पाप है। हमे भी कुछ करना चाहिए।" यह सुनकर सुरेश और वीणा दोनो लडकियां उसकी बहिन के साथ चक्की में आटा पीसने गईं। बाकी बच्चों ने हाथो से मकई के भुट्टे छीलने शुरु किये। मैने शाली के कुछ बाल लिये और उसकी स्त्री से उनमे से चावल निकालने की विधि पूछी। उसने बताया, "आप इन्हे पैरों तले मसले तो कुछ चावल निकल आवेगे।" वह खुद भैसो को भूसा-चारा देने गई। नंगे पैर हमने काफी सफर किया था। न जाने इस कारण या वह काम करने का तरीका न आने के कारण मेरे दोनो पैरो से खून बहने लगा। मुझे अपने आपसे घृणा होने लगी। सोचा हमने अपने आपको कितना आराम-पसन्द बना लिया है। मैं कुछ भी काम नही कर सकती। बच्चो को कैसे रक्खूंगी? कैसे मजदूरी करूगी? यह सोचते-सोचते मेरी आंखो से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। इतने में घर की मालिकन आई। उसे मेरे जख्मी पैरों को देखकर बड़ा दुःख हुआ। आखो में आंसू भरकर उसने कहा, "बहिन! छोड दो। मै तुम्हारा यह हाल नही देख सकती। जब तक हम है तुम्हें कुछ करने की जरूरत नही।" मैं सिर झुकाकर एक ओर बैठ गई और आने वाले सफर के दिनो का ध्यान करने लगी। इतने मे दोनों बच्चियां चक्की से आटा पीस लाईं, दोनो मुस्करा रही थी। मेरी नजर उनके हाथों पर पड़ी, देखती क्या हूं कि दोनो के हाथो मे छाले पड़े है। यह देखकर मै मौन हो गई। क्या कहती कुछ कहते नही बना।

खाना तैयार हुआ। बच्चो ने भी खाया परन्तु इतना कम कि न खाने के बराबर था। मैंने भी जो राख में काशीफल भूना था, वह

खाया। उनके बच्चो को भी पूरी खुराक नही मिली। परन्तु वे प्रसन्न थे। इन गरीब किसानो में कितनी सहनशीलता होती है।

उन्होने हमें एक खाट दी । हम सब मवेशियोवाले कमरे में लेट गये । सारी रात लोगो में बडी बेचैनी रही। कुछ घंटे खाट पर बैठे-बैठे हम अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करते रहे । रह-रह कर बच्चे पिताजी की बात करते थे । मै उन्हें इन बातोका क्या उत्तर देती । थोडी देर के लिए मेरी आंख लग गई । मेरे सिरहाने के साथ ही एक गाय बंधी थी । उसने सोते में ही मेरे सिर के बाल चाटने और चबाने आरम्भ किये । मेरी आख खुल गई । बालो में बडे जोर से दर्द हो रहा था ।

सवेरा हुआ। हम उठे। बच्चो को बहुत भूख लग रही थी। खाने को उनके पास कुछ नही था । बच्चे मकई के भुट्टो के दाने निकालने लगे। उनके हाथो मे छाले पहिले ही पडे हुए थे। अब छोटे बच्चे के हाथ से भी खून बहने लगा । वह कपड़े से खून पोछता जाता था । मेरी नजर उसके नन्हें हाथो पर जा पड़ी तो मैंने उसे रोकना चाहा परन्तु वह न माना और बराबर दाने निकालता रहा। मैंने उठकर उसे प्यार से समझाया, वह कहने लगा, "मा, तुमने ही तो कहा था कि काम किये बिना खाना पाप है। अब मुझे क्यो रोकती हो?" मैंने कहा, "बेटा देखो, तुम्हारे हाथो से खून बह रहा है, यह मकई के दाने भी लाल हो रहे हैं।" वह कहने लगा, "ममी, क्या हाथ भी हमें काम नही करने देते?" इतने में घर की मालिकन आई और बच्चे को देखकर कहने लगी, "तुम मा का दिल नही रखती हो, बहिन। देखो, इन सब बच्चो के हाथो में कितने छाले पड़ गये है।" यह कहकर उसने बच्चो को काम करने से रोका ।

थोड़ी देर बाद ही एक स्त्री आई और कहने लगी, "न जाने तुम्हारे पति है या नही। अब तुम्हारा क्या होगा? चलो अब इन बच्चों को मांगने के लिए भेज दिया करो। कोई रहम खाकर कुछ दे ही देगा।

तुम्हारा काम चल जायगा। तुम कही वैठ जाओ तो अच्छा है, वच्चे भी वच जायंगे।" वैठ जाने का मतलव मै समझती थी। मै एकदम काप उठी परन्तु चुप रही। उस सीधी-सादी औरत को क्या मालूम कि आत्मगौरव के आगे कठिन-से-कठिन वलिदान भी कुछ कीमत नही रखता। वे तो पेट पालना भर जानती थी चाहे कैसे भी पले। इतने मे मेरा भाई वाहर से आया साथ ही उसका वाप भी था। दोनो कुछ घवराये से थे। मैने पूछा, "क्या वात है ?" उसका वाप कहने लगा, "पड़ौस के कुछ आदमियो ने तुम लोगो को यहां देख लिया है और कवाइलियो से जाकर कहा है कि इनके यहा कुछ हिन्दू स्त्रिया है। वडा गज़व हुआ। अव लडकियो का क्या होगा ? वहिन सुनो, अगर तुम वुरा न मानो तो इन लड़कियो के वचाव की एक तरकीव है सो यह कि जव ये आये तो ये कलमा पढ़ दे और कहें कि हम मुसलमान है।" वच्चो ने कही स्कूल में पढ़-सुनकर कलमा सीखा था। कहने लगे, "भला कलमा पढने से कही कोई मुसलमान वनता है ?" मैने भाई से कहा, "झूठ कभी छिपता नही। यह न समझो कि मै कलमा पढना नही चाहती। सिखाओ मुझे—मै पढती हूं। परन्तु मै झूठ नही वोलूगी। मेरे मुह से उस समय एक शब्द भी नही निकलेगा। चाहे तुम कितना ही रटाओ। तुम घवराओ नही। भगवान् सव ठीक करेगे।" वह कहने लगा, "आज वे घर-घर मे से छिपी हुई हिन्दू स्त्रियो को निकाल कर वुरी तरह ले जारहे है। न जाने खुदा अव क्या करना चाहता है ?"

खाना चूल्हे पर धरें का धरा रह गया। डर के मारे भूख मर गई। उन लोगो को अपनी भी वडी चिंता थी, क्योंकि कवाइली हिन्दू स्त्रियो को ढूढने के वहाने मुसलमानो के घरो मे घुसकर उन्हे भी लूटते थे। कही-कही तो उनकी स्त्रियों का भी अपहरण करते थे। देखते-देखते चार वज गये। तभी हट्टे-कट्टे दो मुसलमान हाथो मे वन्दूकें लिये वहां आ पहुचे। उनमें एक उस गाव का नम्वरदार था दूसरा अक्सर हमारे घर शहर मे दूध देने आया करता था। मैने उसे पहचाना, पर मै कुछ

वोली नही। उन्होने आते ही गरजकर कहा, "निकालो इन्हे यहां से। कवाइली तुम लोगो को वुला रहे हैं।" हम सव घर से निकले। वे साथ आये। रास्ते मे जल्दी-जल्दी चलने की डाट भी वता रहे थे। मैने दोनो लडको से कहा, "वेटो! तुम्हारी मुझे चिन्ता नही है। सिर्फ एक वात समझाती हूं। सुनो! मौत से मत डरना। वह हमारी दोस्त है। अगर तुम पर कोई फायर करदे, तो छाती आगे करना। भागकर पीठ पर गोली न खाना।" दोनो एक दूसरे की तरफ देखकर कहने लगे, "हम मौत से नही डरते।" मैने फिर वडी लडकियो से कहा, "पुत्रियो! समय ने हमें सव कुछ दिखाया। अभी न जाने और क्या होगा। तुम्हें सोच समझकर काम करना चाहिए। भारत को वीर वालायें समय पड़ने पर मौत से खेली है यह ध्यान रखना।"

कुछ दूर चलकर वे हमें एक स्थान पर ले गये। वहा पहले से ही कई हिन्दू व सिख मर्द तथा स्त्रिया वैठी थी। सामने दो कवाइली खड़े थे। कारतूसो की माला पहिने वे वदूकें लिये हुए वहा पहरा दे रहे थे। हमें भी उस टोली में विठाया गया। इतने में और कवाइली आये, उनका रूप वड़ा भयानक था। उन्होने कुछ देर आपस मे मन्त्रणा की और फिर स्थानीय मुसलमानो से वोले, "देखो, इन्हें रात भर यही रखो और एक वछडा मारो। वह इन काफिरो को खिलाओ ताकि ये सव मुसलमान वन जाय।" इतना कहकर वे चले गये और मैं भगवान् का स्मरण करने लगी, "प्रभो! हमारी लाज तुम्हारे हाथो में है। मुझे तुमपर विश्वास है। तुम ही अन्त तक वचाने वाले हो।"

कुछ देर वाद मेरा भाई आया और कहने लगा, "वहिन! तुम चिता मत करो। जवतक मैं हू मुझे तुम्हारी चिता है।" मैंने उसे अपने वे गहने दे दिये जो मैंने घर से निकलते समय तन मे उतार कर रख लिये थ। उसने उन्हें लेते हुए कहा, "यह तुम्हारी अमानत है, वहिन! जव चाहो ले लेना।" हम वात कर ही रहे थे कि वह व्यक्ति जो नम्वरदार के साथ अभी हमारे पास आया था मेरे समीप आया। कहने लगा,

"आपने मुझे पहचाना? मैं आपके यहां दूध बेचने आया करता था। तब आप हम लोगों के सामने बाहर नहीं आती थी।" मैंने कहा, "मुझे खेद है कि मैं घर से कुछ भी साथ नहीं लाई। मुझे याद है कि हमें तुम्हारे कुछ रुपये देने है। यह तुम्हारा ऋण हम पर रहेगा।" वह कहने लगा, "मुझे अफसोस है कि आपको कुछ मदद नहीं कर सकता। हमें कबाइलियों का हुक्म मानना पड़ता है। मुझे माफ करना।"

: ५ :

इस्लाम की शिक्षा

कुछ क्षण के बाद वे दोनों कबाइली नवयुवक आये और कहने लगे, "इन्हें हम आज दोमेल ले जायेंगे इसलिए बछड़ा न मारो।" और फिर एक-एक स्त्री-पुरुष की बुरी तरह तलाशी होने लगी। जिसके पास पैसा सोना जो कुछ भी था वे सब छीन रहे थे। लोग भागते हुए घरों से काफी चीजें साथ ले आये थे। कई स्त्रियों ने कमीजो के बार्डरो और सिलवारो में नोट सी रखे थे, कइयो ने कमर से जेवर बांध रखे थे। जिनकी कमर से जेवर बंधे हुए मिले, उनकी सख्ती से तलाशी ली गई। जिनकी कमीजो के बार्डरों में से धन छिपा मिला, उनकी कमीजें उतरवा ली गई।

मेरी भी बारी आई। जब एक कबाइली ने मेरी कलाई पकड़ी तो मेरे मुंह से राम निकला। उसने झटका देकर मेरी कलाई छोड़ दी और कहा, "तुम इस झूठे मज़हब को छोड़ दो। सच्चा मज़हब इस्लाम है। जाओ उस तरफ खड़ी हो जाओ।" वे फिर बच्चो की तलाशी लेने लगे। एक ने बच्चो की जेबे देखी, जब कुछ न मिला तो सबको मेरे पास खड़ा किया। इतने में मेरा भाई वहां आया। उसने कबाइलियो से कहा, "खां, इन्हें मैं घर ले जाऊंगा, इजाजत है?" उन्होंने कहा, "ले जाओ।"

पर साथ ही एक ने जब मेरी दो बड़ी लड़कियो को देखा तो कहा, "सबको नहीं जाना होगा।" मै रुक गई। भाई आखो मे आसू भर कर विदा हुआ।

तलाशी चल रही थी। जिन्होने अच्छे कपड़े पहन हुए थे उनके कपड़े ही उतार लिये जाते थे। बच्चो के गरम कोट, पुरुषो के 'पुलोवर', स्त्रियो के शाल, जो चीज़ मिलती, लेकर रख देते। उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि किसी के पास वस्त्र रहा है या नही। भगवान् ने हमे पहले ही बुद्धि दी थी। हम घर से कुछ भी साथ लेकर नही चले। सयोग से हमने कपड़े भी ऐसे पहिने थे जिन्हें देखकर कोई यह नही जान सकता था कि हम किसी अच्छे घराने से सम्बन्ध रखते है।

तलाशी समाप्त हुई, तो सबको चलने का हुक्म हुआ। सब चल पड़े। आगे-आगे वे खुद चले और पीछे मेरी दोनो बड़ी लड़कियों से चलने को कहा। मुझे उनकी नीयत पर सदेह हुआ। मैंने धीरे-धीरे लड़कियो से कहा, "देखो! मौत से कभी न डरना। जब समय मिले, नदी में या पहाड़ से कूद कर जान दे देना लेकिन जीतेजी अपने खानदान पर आंच न आने देना। तुम उस भारत की सन्तान हो जहां स्त्रिया जिन्दा सती हो जाया करती थी।" मेरी बड़ी लड़की वीणा बोली, "माताजी, तुम चिन्ता मत करो। केवल हमारे इन नन्हें भाइयों का ध्यान रखो। हमें कुछ समझाने की आवश्यकता नही है। हमें अपने दिल और दिमाग़ से काम लेने दो। जो अपने दिल और दिमाग़ से काम नहीं लेता, दूसरा उसे कब तक रास्ता दिखा सकता है।" इस चौदह साल की बच्ची के मुख से ये शब्द सुनकर मुझे अचंभा हुआ और कुछ शान्ति भी हुई। एक कबाइली ने हमें बातें करते देखकर डांटा और लड़कियों को अपने समीप पीछे-पीछे आने को कहा। मैं उन्हें अकेले आगे नही भेजना चाहती थी। इधर बच्चो से तेज़ चला नही जा रहा था। प्रातःकाल से वे भी भूखे थे परन्तु मै लड़कियो के साथ रहने के लिए उन्हें भी अपने साथ घसीटे ले जारही थी। उनके चेहरे मुर्झा रहे थे। मौत सामने खड़ी थी, तनिक पैर फिसल जाय तो धम से नदी में गिरने

का डर था। दूसरी ओर यदि कोई चल न सके तो उस भयानक जंगल मे अकेले रह जाने का डर था। उस समय सबको अपनी-अपनी पड़ी हुई थी। न मां बच्चे की सहायता कर सकती थी और न पति पत्नी की सुध ले सकता था।

मैंने फिर कबाइलियो के पास जाकर बाते करनी आरम्भ की। अंधेरा हो चला था और वे सबको तेज चलने को डांट रहे थे। टोली में कई औरतें गर्भवती थी। डर के मारे उन्हे गर्भ-वेदना हो रही थी। मैंने कबाइलियो से कहा, "मैंने सुना है कि पठान कौम बहादुर और वायदे की पक्की होती है। और बहादुर कौम स्त्रियो और मासूम बच्चों पर अत्याचार नही किया करती। परन्तु तुम इन मासूम बच्चो को डाट रहे हो। क्या तुमने खुदा को भुला दिया है? क्या तुम्हारा इस्लाम तुम्हे यही सिखाता है? समय का कुछ पता नही। अभी दो दिन पहले मेरा पति यहा का वजीर था, अब न जाने वह कहा है? मै और ये बच्चे दर-दर की ठोकरे खारहे है। हमें इस जिन्दगी से अपनी इज्जत और अस्मत बहुत प्यारी है। जहा तक होगा हम इसकी रक्षा करेगे; मगर तुम मेरी एक बात मान लो तो मै तुम्हारा एहसान मानूगी, वह यह कि तुम मुझे अपने सरदार के पास ले चलो।" ये दोनो हिन्दुस्तानी समझते थे। मेरी बातें सुनकर कहने लगे, "वाकई हमारा इस्लाम यह नही बताता परन्तु हम क्या करे। हमे आज्ञा ही ऐसी है।" उनका दिल अब कुछ-कुछ पिघल गया था। अब वे हम सबको धीरे-धीरे चलने देने लगे। कुछ क्षण बाद वे फिर बोले, "हम कितनी दूर से यहा लडने के लिए आये है। हम अपना परिवार वही छोड़ आये है। हमारे भी मां, बाप, भाई-बहिन, है। अभी हमारी शादी नहीं हुई है।" मैंने कहा, "तुम परिवार वाले हो, सबका दु:ख दर्द जानते हो और हो भी जाति के बहादुर पठान। तुमसे तो हम नेकी की ही आशा रखते है।" यह सुनकर वे एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

मेरी बड़ी लड़की इनके साथ-साथ चल रही थी। मै जरा पीछे रह

गई क्योंकि मेरा बड़ा लड़का थक गया था। मैं न उसे छोड़ सकती थी और न लड़की को। पर लड़की पर मुझे भरोसा था। मैं इसी उधेड़बुन में थी कि लड़की और एक युवक लौटकर मेरे पास आये। युवक कहने लगा, "जहा आज रात हम आप लोगो को ले जारहे है, वहा बड़े जुल्म हो रहे हैं परन्तु हम कसम खाकर कहते है कि हम तेरी और तेरे इन बच्चो की हिफाजत करेंगे। तू हमारी मा है और ये लड़किया हमारी बहनें।" मै हैरान थी कि यह परिवर्तन कैसे हुआ? लडकी ने उनसे क्या कहा जो वे राक्षस से देवता बन गये। अब वह धीरे-धीरे चलने लगे थे और हम सबको भी धीरे-धीरे चलने को कह रहे थे। उनमें मनुष्यता जाग उठी थी। शायद उन्हें इस्लाम की शिक्षा याद आरही थी।

दस बजे हम दोमेल पहुचे। वहा काश्मीर रियासत का एक जानवरो का अस्पताल था जो जलने से रह गया था। यह कृष्णगंगा के किनारे पर था। इस मकान के कमरे अच्छे बड़े-बड़े थे। इन्ही में से एक में हम रखे गये। वहा तीन दिन से और भी हिन्दू बच्चे और स्त्रियां रखी गई थी। कमरे में इतना अंधकार और इतनी भीड़ थी कि दम घुटता था। जैसे ही हमारी टोली कमरे में आई वैसे ही वहशी कबाइली और डोगरा रेजिमेंट के कुछ बागी मुसलमान फौजी तूफान की तरह अन्दर आये और स्त्रियो और लड़कियों को टार्चों से देख देखकर ले जाने लगे। देखते-देखते एक कोहराम मच गया। वे बालायें और स्त्रियां उनके साथ जाने से इन्कार कर रही थी और चीख रही थी। परन्तु पाकिस्तान के भेजे हुए मुजाहिद कब तरस खानेवाले थे। उस समय लग रहा था कि नरक यदि कही है तो यही है परन्तु इसी नरक के बीच में वे दोनों नवयुवक हमें एक कोने में ठहरा कर खुद हमारे सामने खड़े होगये। हमारे पास ही बाहर जाने का एक दर्वाजा था। मै और बच्चे यह अत्याचार देखकर सिहर उठे थे। मैं फिर भी बच्चो से कह रही थी, "राम को पुकारो, वही रक्षा करेगा।" नवयुवक कबाइली कहने

लगे, "घवराओ मत। हम तुम्हारी हिफाजत करने का वायदा कर चुके है। जहा तक वन पडेगा हम उसे पूरा करेंगे।"

और उन्होंने उस ओर किसीको नही आने दिया। वहा वहुत शोर मच गया था। उसे सुनकर वाहर से उनका एक अफसर आया। उसने कहा, "थोड़ी देर के लिए सवको छोड़ दो।" पर वे कहां मानने वाले थे।

थोड़ी देर वाद जव वे कुछ औरतो और लड़कियो को ले गये तो उन दो नवयुवक पहरेदारो के अतिरिक्त उनका कोई और आदमी वहां नही रहा। तव उन्होंने हमे द्वार के पास वैठाया और स्वय वदूकें लेकर द्वार के वीच मे वैठ गये। उसी समय पास के कमरो से लोगों की चीख-पुकार आने लगी। यहा तीन दिन से विना अन्न-पानी के लोग वंद थे, उनमें कई व्यक्ति अपनी अन्तिम घड़िया गिन रहे थे पर वहा कौन सुनता? मै यह देखकर चुप न रह सकी। मैंने अपने पहरेदारो से कहा, 'भाई इन असहाय लोगो को पानी दो, खुदा तुम्हारा भला करेगा।" सचमुच वे देवता वन गये थे। उठे और वारी-वारी घड़ो में पानी लाकर उन्हे दे आये। अधेरे मे किसे मिला किसे नही यह नही मालूम। परन्तु फिर भी कुछ व्यक्तियो के प्राण अवश्य वच गए। शेष मनुष्यता की दुहाई देते हुए इस असार ससार से कूच कर गये।

अनेक नारियां कोनो में दुवकी हुई पड़ी थी। उनके वच्चे रो रहे थे। उनमे से कइयो ने तो अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने वच्चो तक का गला घोंट दिया था। कई देविया शौच के वहाने वाहर गई और कृष्णगंगा की गोद मे सोगईं। अनेको माताओ ने अपने जिंदा वच्चे इस नदी की भेंट कर दिये।

यह खवरे कवाइली सरदारो के पास पहुंची। उन्हे स्त्रियो का इस तरह मरना मंजूर नही था, वे उन्हे घुल-घुल कर मरते देखना चाहते थे। पहरा कडा कर दिया गया। एक और पार्टी आगई। वे सव पुरुषो को पकड़-पकड़ कर दूसरे कमरे में ले गये। वे निहत्थे पुरुष यह समझ रहे थे कि ये लोग हमे मारने के लिए ले जारहे है। अन्तिम विदा का वह

दृश्य वडा करुण था। वच्चे उनसे लिपट-लिपट जाते थे, पर वहां तरस खानेवाला कौन था ?

मेरे पास दो तीन स्त्रिया वैठी थी। एक मां-वेटी थी। वेटी गर्भवती थी और उस समय उसे प्रसव-पीड़ा हो रही थी। वे लोग उसके पति को भी ले गये। जव सव चले गये तो उन दो नवयुवको ने दरवाजे के वाहर मेरी दो लडकियो को सुलाकर उनपर कम्वल डाल दिया। जो भी वहा से गुज़रता और पूछता, "यह क्या है ?" तो वे दोनो उत्तर देते, "कुछ नही, सिपाही सो रहे है।" मैंने उनसे पूछा, "तुम खाना नही खाओगे ?" कहने लगे, "हमें कई-कई दिन ऐसे ही विताने पडते है। और अगर हम यहा से चले भी जाय, तो तुम मुसीवत में फंस जाओगी।"

इतने में फिर कई कवाइली मीरपुरी और जम्मू निवासी मुसलमान वागी फौजियो के साथ टार्च हाथ में लिये वहां आये। वे भी टार्चों से देख-कर स्त्रियो को ले जाने लगे। फिर हाहाकार मच गया। कवाइलियो से अधिक निर्दयी वे वागी फौजी थे, उन्होने स्त्रियो की गोद से वच्चे छीन-छीन कर नीचे पटक दिये और खुद उनकी माओ को घसीट कर ले गये। जो नारी विरोध करती थी और कहती थी, "मुझे जान से मार डालो, मुझे ले मत जाओ, मै नही जाऊगी," उसे कई आदमी उठाकर ले जाते थे। जिस ओर हम वैठी हुई थी कई वार उन्होने उस ओर आने की भी चेष्टा की पर हर वार उन दो वहादुर पठानो ने वन्दूको के कुदो से उन्हें मारा और डाट-कर कहा, "अगर तुम लोगो ने इस तरफ आख उठाई तो तवाह हो जाओगे।"

मै अपने मन में सोचने लगी, कवतक ये लोग इन्हें रोके रखेंगे। मुझे भी वच्चो को लेकर कृष्णगंगा की गोद में समा जाना चाहिए पर फिर सोचा, "अगर मेरे वाद एक भी वच्चा जीवित रहा तो उसकी क्या दशा होगी। मेरे पति कितने दुःखी होगे।" साथ ही यह विचार भी मन में आता था कि जव तक भगवान् हमारी रक्षा करेंगे तव तक मै आत्महत्या नहीं करूंगी। यदि मुझे मरना ही है तो मैं कुछ करके मरना चाहती हूं। जिस मौत का कोई उद्देश्य नही, उससे मुझे नफ़रत थी।

आधी रात के वाद कुछ शांति हुई। तब उन दोनो नवयुवको ने कहा, "अब हम अपनी जगह अपने ही दूसरे दोस्तो को छोडे जाते है। हम चाहते है कि इन लडकियो को तुमसे कही अलग रखे। सुबह होते-होते यदि इनपर किसी की नज़र पड गई तो गज़व हो जायगा। तुम्हे एतबार हो तो हम इन्हें अपने साथ ले जायेगे और जब तुम किसी ठिकाने पर पहुच जाओगी तब हम इन्हे तुम्हारे पास पहुंचा देगे। तुम चिंता मत करो। ख़ुदा तुम्हारी मदद करेगा।" यह कहकर वे चले गये और अपनी जगह दो वृद्ध पठानो को छोड़ गये। उन्होंने आते ही वच्चो को अपने पास से सेव, अखरोट और ख़ुमानियां दी। वच्चे भूखे थे, खाने लगे। मैंने इन नये पहरेदारों से कहा, "क्या तुम वता सकते हो कि यहां के जिला-अफमरो के साथ कैसा सलूक हुआ। मेरा पति उन्हीमे था। वह यहा का वजीर था।" उनमे से एक वोला, "उसकी तो हमें पहचान नही। पर हमें सबसे पहले अफसरो को खत्म करने का हुक्म था। हमने आते ही सवको मार डाला।" यह सुनकर मेरा सिर चकराने लगा फिर वह कहने लगा, "न जाने क्यों मेरा दिल मुझे तुम्हारी और इन वच्चों की मदद करने को मजवूर कर रहा है।" मैंने किसी तरह संभलकर कहा, "ख़ुदा को याद करो। इस समय यहा इन्सानियत सिसक-सिसक कर दम तोड़ रही है। कौन जानता है कि हमारी सहायता के लिए ख़ुदा ने तुम्हारे रूप मे फरिश्तो को भेजा हो।" यह सुनकर वे कलमा पढ़ने लगे। मुझसे कहा, "तुम भी पढो।" मैंने कहा, "मुझे नहीं आता।" वे मुझे सिखाने लगे।

तभी वाहर से एक और गिरोह आया। कमरे मे फिर वही करुण-क्रंदन शुरू हुआ। जिस ओर दरवाजे के पास हम बैठे थे उस ओर भी दो लुटेरे आये और पूछने लगे, "यहा कौन है?" तब इन दोनों पठानो ने चिल्लाकर कहा, "यहा पर मत आना। तबाह हो जाओगे।" वे लोग दूसरी राह से भीतर आकर औरतो को ले जाने लगे। मेरे पास तीन स्त्रियां और थी। वे भी उन नेक पठानो की दया मे वची रही। कुछ देर

वाद उन नेक पठानो ने मुझसे कहा, "क्या तुम हमारे मुल्क आना पसंद करोगी ? हम तुम्हे वहा पर एक जियारत पर रक्खेंगे। देखो, इस मुसीवत के वक्त मे खुदा तुम्हारी कितनी मदद कर रहा है।" मैंने कहा, "मै अपना वतन छोडकर तुम्हारे देश कैसे जा सकती हूं ? मेरा पति है, ये वच्चे है। अभी मेरी अवस्था जियारत पर वैठने की नहीं है।"

हम ये वाते कर ही रहे थे कि कमरे में से फिर सिसकने की और कराहने की आवाजें आने लगी। देखा—कुछ युवतिया वाहर जा रही है और विछुडते समय दूसरी नारियो से क्षमा माग रही है। "हमारे अपराध क्षमा करना ! न जाने किन पापो का फल अव हमें मिल रहा है। हम अव जीना नही चाहती।"

सुनकर मेरा माथा ठनका। आखिर ये क्या करनें जारही है। पर उस समय न पूछने का समय था न कुछ करने का। मैं भोर होने की राह देखने लगी।

: ६ :

कृष्णगंगा की गोद में

पौ फटी। वे दोनो नवयुवक अपने कहे के अनुसार मेरी दोनो लड़कियों को अपने साथ ले गये। मुझे अपनी लडकियो पर तो पूरा भरोसा था ही, पर उन वहादुर नौजवानो पर भी कम नही था। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर हमें वचाया था। साथ की स्त्रिया मुझसे कहने लगी, "क्या तुम्हें इनपर भरोसा है ?" यह सुनकर मैं हैरान रह गई। रातभर उन्होंने इनकी रक्षा की थी। वे चाहते तो उन्हें विना रोकटोक उठाकर ले जाते। परन्तु भगवान् ने इनकी वुद्धि वदल दी थी। यही विचारकर मैंने कहा, "उनसे मुझे किसी प्रकार की आशका नहीं है और अपनी लडकियो पर मुझे पूरा भरोसा है। समय पड़ने पर वे जान पर खेलना जानती है।"

पूरी रोशनी हो जाने पर शेष सव स्त्रियो को वाहर निकाला गया। वे सव दोमेल पुल के पास, कृष्णगगा तट पर, शौचादि के लिये ले

जायी गईं। मै भी उनके साथ थी। मैंने वहां वह रोमाचकारी और अद्‌भुत दृश्य देखा जिसे मै कभी नही भूल सकती। कुछ स्त्रिया किनारे पर खडी हुई थी और कुछ पानी के बीच चट्‌टानो पर। उनमें से अनेक मातायें अपने वच्चो को नदी मे फेंक रही थी। कुछ वच्चे तो नि.सहाय एकाध डुवकी खाकर वह जाते थे पर कुछ तट के पास ही अपनी माओ से चिपट जाते थे और वे मातायें अपने ही हृदय के उन टुकडो को फिर पानी मे फेंक देती थी। उस समय उन देवियो की आकृति वहुत भयानक हो उठी थी। उनकी आंखे सूज गई थी और उनके चेहरे मुर्दों की भाति भावहीन, रक्तहीन और चेष्टाहीन होरहे थे। वे यही नही रुकी। देखते ही देखते उन्होने स्वय भी नदी के तीव्र प्रवाह मे छलागे लगानी शुरू कर दी। यह देखकर किनारे पर खड़े हुए कवाइली दौडे पर इससे पहले वे कुछ कर सकें चट्‌टानो पर वैठी नारियां जोर से चीखी और धम से नदी में कूद पडी। तव कई कवाइली पुल पर वन्दूकें तानकर खड़े हो गये और उन वहती हुई लाशो पर फायर करने लगे।

मै ठीक नही वता सकती कि कितनी स्त्रियां और वच्चे नदी की भेंट हो गये। इतना भर याद है कि रात को हम जितनी स्त्रिया कमरे में वची थी उनमे से केवल मै और वे तीन स्त्रिया जो मेरे पास वैठी थी नदी मे नही कूदी। हृदय पर पत्थर रखे सज्ञाहीन-सी मै यह करुण दृश्य देख रही थी और यन्त्रवत् सोच रही थी कि भारतीय नारी में आज भी आत्मवलिदान की इतनी प्रवल भावना वर्तमान है। अपनी मानरक्षा के लिए वह कुछ भी कर सकती है कि इतने में मेरा वारह साल का लडका दौड़कर नदी के किनारे पहुंचा। मैने उसे देखा और मै उसके पीछे दौडी। मैंने उसे पकड लिया। वह वोला, "मां, मुझे छोड़ दो। मै भी नदी मे कूदकर मरना चाहता हूं। मै यह सहन नही कर सकता कि कोई मेरी वहनों की तरफ आंख उठाकर भी देखे।" इतना कहते-कहते वह तेजी से आगे सरका परन्तु मैंने उसे जोर से पीछे की ओर खीचा और कहा, "तुम कायर हो। तुम वुजदिलो की तरह कुछ किये विना

ही मरना चाहते हो! मैं तुम्हें मौत से डरने के लिए नही कहती; परन्तु ऐसी मौत ढूढो जो तुम्हें अमर कर दे।" पर वह शान्त नही हुआ, बोला, "कोई खानदानी स्त्री जिन्दा नही रही, सब नदी में कूदकर मर गई। जाओ मां, तुम भी इन लडकियो समेत नदी में कूद पड़ो। हम दोनों भाइयो को छोड़ दो। नही तो मैं जाता हू। मैं यह अत्याचार नही देख सकता।" मै बड़े शशोपंज मे पड गई। क्या करूं, न तो दोनो लड़कियां ही मेरे पास थी और न मेरा मन ही मुझे आत्महत्या करने को आज्ञा देता था। मुझे यह भी विश्वास था कि चाहे कुछ भी क्यो न हो भगवान् हमारी सहायता करेंगे। इसलिए मैंने उसे समझाकर कहा, "बेटा, तुम क्यो हठ कर रहे हो? मै नदी में कैसे कूद सकती हूं। तुम जानते हो कि यह समाचार पढकर तुम्हारे पापा दु खी होगे। कम-से-कम जब तक मुझे उनके बारे में पूरी जानकारी नही मिल जाती तब तक मैं कुछ नही कर सकती।"

इतने में एक कबाइली मेरे पास आया और कहने लगा, "तुम छलाग क्यो नहीं लगाती? लगाओ हम नही रोकते।" मैंने कहा, "मै ऐसा नही करूंगी।" यह कहकर मैं किनारे से हटकर सड़क पर आ गई। मैंने देखा—कई कबाइलियो की आखो से आंसू बह रहे है। मैं समझ गई कि यह हत्याकाड देखकर ये लोग अपने किये पर पछता रहे है। मेरा साहस बढा और मै बेधड़क एक टोली में जाकर कहने लगी, "अब क्यो आंसू बहाते हो? अपने किये पर पछता रहे हो न? क्या तुम ऐसी ही लडाई यहां लड़ने आये हो? क्या यह काम करते हुए तुम अपने आपको कामयाब समझते हो? क्या तुमने खुदा को भी भुला दिया है? याद रखो, यह खून तुम्हारे सिरो पर सवार होकर बोलेगा? तुम्हें अपने किये का फल मिलेगा।" मेरी यह बातें सुनकर साथ की स्त्रियो ने टोक कर कहा, "चुप रहो। तुम इन्हें क्या कह रही हो? अपने ऊपर मुसीबत क्यो मोल ले रही हो?" मुझे नही मालूम कि उनमें से कितनों ने मेरी बात समझी परन्तु एक आदमी मेरे समीप आया और बोला, "तुम जो कुछ कह रही हो ठीक कह रही हो। मुझे बताओ मै तुम्हारी क्या

सहायता करूं?" वह कोई ओहदेदार मालूम पड़ता था। मै उससे क्या कहती। लड़कियो का ध्यान आया। वे कहां होगी? उनसे कैसे मिलूगी? मै यही सोच रही थी कि वह फिर वोला, "मै तुम्हारे साथ एक शरीफ आदमी भेजता हूं। वह आराम से तुम्हे जेल मे पहुचा आयेगा। वहां और भी वचे हुए हिन्दू वन्द है।" मैने उसे धन्यवाद दिया और वच्चो को लेकर चल पड़ी।

जव हम जरा आगे वढ़े तो तीनो स्त्रियां भी हमारे पीछे-पीछे आई और साथ ही कुछ लोग और भी आये जो रात को हमारे कमरे में से छाट कर अलग किये गये थे। साथवाली एक देवी को गर्भ-वेदना हो रही थी। इस कारण उसे एक कदम भी चलना दूभर हो रहा था। परन्तु ज्यो-त्यो करके रोती-चिल्लाती वह चली आ रही थी।

हमें अव शहर की ओर जाना था। वही पर एक छोटी-सी पहाड़ी के आंचल में जेल थी। सारा मार्ग जले हुए मकानो के खंडहरो से भरा हुआ था। हमारे साथ दो-एक सिपाही भी आये थे। उनके पास वंदूके थी। वे सव लोगो से 'पाकिस्तान जिन्दावाद' कहलवाते थे और जो नही कहता था उसे डांट देते थे।

जो शरीफ कवाइली मेरे साथ खास तौर से आया था, उसकी आयु मुश्किल से वाईस वर्ष की थी। चलते-चलते मै उससे ऐसे ही वातें करने लगी। मैने पूछा, "तुम इतनी दूर यहां कैसे आये?" वह कहने लगा, "पाकिस्तान के हुक्मरानो ने कवाइलियो में इस वात को फैला रखा है कि इस्लाम खतरे में है और रियासत मे मुसलमानों पर वड़े जुल्म हो रहे है। हमारी वहू-वेटियां महफूज नही है।" इसपर मैने उसे वताया, "चार दिन पहले रियासत में सव ठीक था परन्तु तुम लोगो ने आकर यहां यह तूफान पैदा कर दिया है।" उसने फिर वही जवाव दिया कि पठान यह नही सह सकते थे कि उनके होते हुए कोई उनकी वहू-वेटियो पर उंगली उठा सके। पाकिस्तान वरावर यह कह रहा है कि रियासत मे हमारी मा-वहनो पर हमले हो रहे हैं। मै क्या

कहती, कुछ क्षण वाद मैंने फिर पूछा, "क्या तुम्हें कुछ वेतन मिलता है?" वह कहने लगा, "अभी तक कुछ फैसला नही हुआ है। उन्होने हमे सिर्फ यही कहा है कि हिन्दुओं को कत्ल कर दो। उनकी जो औरत या लडकी तुम्हें पसन्द आवे ले जाओ। जो माल तुम्हे मिले लूट लो। घर जला दो। हमें सिर्फ जमीन चाहिए।" मैंने कहा, "भाई, बुरा न मानना। हमने सुना था कि पठान कौम बडी बहादुर होती है पर जो कुछ हमने देखा वह तो कोई बुजदिल और जलील भी नही करेगा। तुमने अपने ईमान को भुलाकर ये सब खून किये है। ये तुम्हारी गर्दनो पर सवार रहेंगे।" वह बोला, "हमारे वतन से बहुत से लोग लूट-मार के लिए आये है। हमने सुना है कि काश्मीर में जर (सोना) बहुत है।" मैंने पूछा, "तुम लोग हमें जेलो मे क्यो ठूस रहे हो?" वह मेरी बात का कुछ उत्तर न देते हुए कहने लगा, "मर्दों को तो हमने तकरीबन खत्म कर दिया है। जो पहले दिन इधर-उधर छिप गये थे वही थोड से वच गये है। जो औरतें बची है वे या तो बडी-बूढी है या जख्मी है। हा, कुछ जवान औरते भी जेल में कैद कर रखी है।"

राह चलते हमें बराबर स्थानीय मुसलमान मिलते रहे। उनमें से कुछ हमारी दशा पर दुखित थे तो कुछ खुश भी थे। कही-कही कबाइलियों की टोलियो की टोलिया दीख पड़ती थी। कोई नंगे पैर तो कोई फटा पुराना जूता पहने। कन्धो पर बन्दूकें और गले में कारतूसो की माला लिये हुए। जहा-तहा विकराल हसी हसते घूम रहे थे वे। कही-कही तो वे लोग लूट के माल पर आपस में झगड़ भी रहे थे।

एक स्थान पर वे मेरे लडके विमल और लड़की कमलेश को देखकर कहने लगे, "बच्चो की यह जोड़ी कितनी सुन्दर है। हम चाहते है कि इन्हें अपने साथ ले जायें।" हमारे साथ के सिपाही ने अपनी जबान में उनसे कुछ कहा जो हमारी समझ में नही आया। वे बोले, "तुम जब इन्हें जेल से छोड़ोगे तो हम वहा से इनको उठा लावेंगे।" यदि वे चाहते तो बलात् उन्हें छीनकर ले जा सकते थे पर ईश्वर जिनकी सहायता करते

है उनका बाल भी बाका नही हो सकता। वे ललचाई आखो से बच्चों को देखते रह गये और हम आगे बढ़ गये।

अब हम उस जगह पहुंचे जहा से हमारी कोठी की दीवार नज़र आरही थी। हमने वहां खड़े होकर अपने उजडे घर को देखा। यह रसोईवाला भाग था जो जलने से रह गया था। मैंने अपने साथ के सिपाही से कहा, "वह हमारा घर है।" वह बोला, "आजकल वहां हमारे आदमी है।" हमे इस स्थान से आगे जाना था। मन चाहता था कि यही बैठकर अपने उजड़े घर को देखते रहें, किन्तु अब उस ओर देखना अपराध था। लाचार हम आगे बढे। कुछ ही देर बाद जेल के फाटक पर पहुंच गये।

वहां पर कुछ लोग पहरा दे रहे थे। हम अन्दर भेजे गये। हमारे साथ के सिपाही ने सलाम करके हमसे विदा ली। अन्दर जाकर देखा-वहा औरते, बच्चे और पुरुष भरे पड़े है। भीड़-की-भीड़ इकट्ठी है। अनेको के हाथ, टांग और बाजुओ पर छः-छः सात-सात गोलिया लगी है जो बदन के भीतर रहने के कारण उनके लिए असह्य पीड़ा का कारण बन रही है। एक ओर नन्हे-नन्हे बच्चें चार चार दिन के भूखे-प्यासे तड़प रहे है। कही कोई अपने बच्चे को लिये रो रहा है तो कोई परिवार के लिए। किसी की लड़की छीन ली गई है इस कारण वह विलाप कर रहा है। अनेक नवयुवतियो ने अपने चेहरो पर सूरत बिगाडने के लिए गोबर, मिट्टी और कीचड़ मल रखी है। यह दृश्य देखकर मुझे कंपकपी आने लगी पर तभी मैंने वहां शिवदयाल और ओमप्रकाश को देखा। वे हमारे पास आये और हमे एक कमरे में ले गये। कमरा क्या वह नरक-कुड था।

: ७ :

वज़ीर साहब का बलिदान

मै कमरे में एक ओर एक टूटी चारपाई पर बच्चो को लेकर बैठ गई। बैठते ही मैंने शिवदयाल और ओमप्रकाश से मेहता साहब के बारे में पूछा। उनके साथ जेल का भूतपूर्व दारोगा था। वह बोला, "माताजी, क्या कहू। कुछ कहते नही बनता। मेहता साहब को तो पहले दिन ही..............।"

क्षण भर में मै सब कुछ समझ गई। मेरी आखो के आगे अंधेरा छा गया। सारा बदन कांपने लगा। ऐसा मालूम होने लगा कि मेरे प्राण अभी निकल जायेंगे। पांच मिनट तक मेरी ऐसी ही दशा रही। फिर मैंने अपने आप को सभाला और उससे पूछा, "क्या तुम पूरा हाल बता सकते हो?" इसपर ओम् बोला, "मैं उस समय वही पर था पर मैंने जानबूझ कर आपसे नही कहा। मै जानता था कि आप यह सुनकर आपे से बाहर हो जायंगी। क्या ताज्जुब कि आप उस वक्त बच्चों को लेकर कोठी मे आजाती या आग मे कूद पड़ती। आप जरूर कुछ-न-कुछ कर गुजरती और ये बच्चे बरबाद हो जाते। यदि आप कही बची भी रहती तब भी आपकी हिम्मत टूट जाती। सोचिए आप इतनी मुसीबतें कैसे सहन कर पाती।" मैंने रोते हुए कहा, "तुमने यह क्या किया। उन्होने तो वतन के लिये अपने को मिटा दिया, पर मैंने क्या किया। मैंने यह प्रण कर रखा था कि जीते-जी कभी उनका साथ न छोडूंगी। तुम अगर उस समय मुझसे कह देते तो मैं कोठी में जाकर बच्चो समेत वही स्वाहा हो जाती। पर अब मै क्या कर सकती हूं। पास में मौत का कोई साधन नही। लड़किया भी अभी तक नही आई है।" मुझे इस प्रकार विलाप करते देख वह बोला, "मैं कसम खाकर कहता हूं कि जब आप मर जायेंगी तब मैं उसी जगह जहा वजीर साहब का संस्कार हुआ है, आपका भी सस्कार कर दूगा। चाहे इसके लिये

मुझे कितना भी कष्ट क्यो न उठाना पड़े।" भोला ओम् शायद यह समझ रहा था कि यह खवर मुनते ही मेरे प्राण पखेरू उड जायगे। काश कि ऐसा हो पाता परन्तु अभी तो मुझे वहुत कुछ करना और देखना शेष था। मैंने कहा, "इस समय मौत भी हमसे नफरत करती है, वह हमारे पास नही फटकती। अच्छा, लेकिन तुम यह तो वताओ कि यह सव कैसे हुआ ?" यह सुनकर दारोगा वोला, "वाहर सव लोगो में वजीर साहव के वलिदान की चर्चा है। उन्होंने वड़ी वहादुरी से सच्चाई पर जान दी है। आप ओम् से पूछिए।" दरोगा कहता गया, "जव वजीर साहव अपनी कोठी से वाहर निकले तो वे सुपरिन्टेंडेंट पुलिस, सव-इन्स-पेक्टर पुलिस और तेईस पुलिस के सिपाहियो को साथ लेकर हाई स्कूल की ओर गये जहां कुछ दिन पहले एक तोप गाड़ कर रखी गई थी। वहां नौ डोगरे सिपाही नियत थे। पर वे भाग आये थे। सवने मेहता साहव को वहां जाने से रोका पर उन्होने एक न मुनी और चल दिए। वहां कोई सिपाही नही था। हां, कुछ वही के मुसलमान जमा हो गये थे। वे वजीर साहव से कहने लगे, 'तूने कभी किसी का कुछ नही विगाड़ा है। हमें तेरी शराफत का लिहाज़ है। हम चाहते है कि तू अपनी जान यूही न गंवा। इस समय तू कुछ नहीं कर सकता। पाकिस्तानी हजारो की गिनती मे आये है। तेरे साथ हम वायदा करते है कि कही-न-कही छिपाकर हम तुझे वचायेंगे।' परन्तु उन्होने किसी की वात न मानी वल्कि उनसे कहा, 'तुम्हारे मुल्क पर मुसीवत आई है इसे मिलकर वचाओ। तुम लोग उल्टा मुझे छिपने के लिए कह रहे हो। चलो जहा पुलिस है वहां जाकर हम मोर्चा लगावे,' पर वहां उनकी कौन मुनता था। उन्होंने पुकार-पुकार कर सवको मुकावले के लिए लाना चाहा पर सव लोग, यहा तक कि पुलिस के सिपाही भी, तितर-वितर होगये। कुछ थोड़े से आदमी उनके साथ वहां आये जहां पुलिस ग्रुप था। वहां भी किसी ने मोर्चा नही वनाया। जव वहां उनकी कोई मानने वाला

ही न था तब वह क्या करते? विवश होकर उन्होंने कहा, 'मैंने मुकाबला करने की बहुत कोशिश की पर कोई सुनता ही नही है। सबको अपनी-अपनी पड़ी है। अब मैं तुम्हे नही बचा सकता। मैं अब घर जाता हूं। वहां जाना भी मेरा फर्ज है।' लोगो ने कहा, 'तुम्हारे घर में बहुत से कबाइली घुस गये है वहा मत जाओ।' पर वह कब माननेवाले थे। वह अपनी कोठी की तरफ आये। साथ में एक राजपूत पुलिस सब-इन्स्पेक्टर था। वह फाटक के बाहर रहा और वजीर साहब भीतर गये।" इतना कहने के बाद वह चुप होगया। उसका गला भर आया, कहने लगा, "आगे का हाल ओम् से पूछिये।" मैंने मशीन की तरह ओम की ओर देखा। वह भी रो रहा था। उसने रूंधे कंठ से कहा, "जब मेहता साहब अंदर आये, तब मै बाथरूम में छिपा हुआ था। मैंने उन्हे खिड़की के शीशे में से भीतर आते देखा। उनकी नजर मुझपर पड़ी, पूछा, 'ओम, तुम्हारी माताजी कहा है?' मैंने उन्हें हाथ से जियारत की ओर इशारा किया। मेरे इशारे का मतलब समझ कर पुलिस अफसर तो पीछे वापिस मुड गया परन्तु वे वैसे ही खड़े रहे। मुझसे कहने लगे, 'तुम्हारी माताजी क्यो भागी? यह भागने का नहीं बलिदान का समय था। मै घर इसीलिए आया था कि सब मिलकर मौत को गले लगायेंगे।' मैंने धीरे से कहा, 'आप यहा से चले जाइये। अन्दर साठ कबाइली है।' परन्तु वे वही डटे रहे।" यह कहते हुए ओम् बच्चो की तरह रोने लगा। मैंने उससे कहा, "ओम्, वे जानते थे कि मौत की साथिन मौत ही है और कोई नही। मै बुज़दिल थी जो भाग आई। अब उसका फल भुगत रही हू। अच्छा, आगे क्या हुआ?" वह बोला, "इतने में कबाइली बाहर निकल आये। वजीर साहब को देखकर सबने बन्दूकें तान ली और कहा, 'काफर, पाकिस्तान मजूर करो और अपने सर से हैट उतारो।' वे चुप रहे। फिर वे कहने लगे 'बता तू हिन्दू है या मुसलमान।' फिर भी वे चुप रहे। इतने में हमारे

पड़ौस का एक मुसलमान वहां आया और वजीर साहव से कहने लगा, "साहव, कह दो मैं मुसलमान हू, वच जाओगे। तुम्हारे छोटे-छोटे वच्चे है। क्यो अपनी जान से हाथ धोते हो?" इतने मे कवाइलियो ने फिर पूछा, "तुम हिन्दू हो या मुसलमान?" उस वार वजीर साहव ने कहा, "मै हिन्दू हू, मुसलमान नही।" वस फिर क्या था। सवने वन्दूकें तान ली। एक....दो....तीन.... फायर पर फायर हुए। छाती आगे किये वे मुहं से राम....राम कहते गये। चौथी गोली लगने पर वे नीचे गिर पड़े। मै यह हत्याकाड देखकर भागा-भागा तुम्हारे पास आया। मुझे उस समय कुछ भी दिखाई नही दे रहा था, तभी तो मैं उस समय रो रहा था।" वह चुप हो गया। मैंने यत्रवत् फिर पूछा, "तुम्हें इससे आगे का कुछ हाल मालूम है?" वह वोला, "शिवदयाल को मालूम है।" मैंने शिवदयाल से पूछा," कहो शिवदयाल, उस शव का क्या हुआ? वह कहां है?" वह कहने लगा, "मेरे साथ का दूसरा साथी रामचंद आपकी कोठी के रास्ते से ही भागा था। रास्ते में उसने वजीर साहव की लाश पड़ी देखी। वह वही खडा होगया। उसी समय वहां पड़ौस का एक मुसलमान आया। उन दोनो ने लाश को उठाकर आपकी कोठी के सोने के कमरे में रखा और उनके पांव की चप्पल खोल दी। वाद में कोठी को आग लगाई गई तो शव का दाह-संस्कार भी वहीं होगया। मैंने वहुत से मुसलमानो से सुना है कि जव कवाइली उन्हें मारकर वाहर आये तो कहते थे, "कि आज हमनें एक डोगरा जवान मारा है। उसकी वहादुरी हमें देर तक याद रहेगी। हमें उसे ज़िंदा गिरफ्तार करने का आर्डर था पर उसने ऐसे जवाव दिये कि हमें गुस्सा आगया और हमने फायर करके उसे खत्म कर दिया।" मैंने पूछा, "क्या उन्हें मालूम था कि वे यहां के वजीर हैं?" शिवदयाल वोला, "वे तो उनका इम्तहान ले रहे थे। वरना वे लोग जानते थे कि वे वजीर है और यह उनका मकान है।" यह सुनकर मेरी आंखो से रुके हुए आंसू फिर फूट पड़े परन्तु शीघ्र ही मैं

संभली और बोली, "मुझे खुशी है कि उन्होने अपना फर्ज पूरा किया। सचमुच उन्हें छिपना शोभा नही देता । वे शुरू से ही सच्चाई के पुजारी थे, अत में भी उन्होने सत्य को ही वरा और उसके लिए अपने प्राण तक दे दिये।" मैंने वच्चो से भी कहा, "वेटा, देखो तुम्हारे पापा की कैसी शानदार मौत हुई। यह सवक तुम्हें भी सीखना है। सुनो, मुझे तव खुशी होगी जव हम सव उन्हींकी तरह अपना फर्ज निभाते हुए हंसते-हंसते अपना वलिदान कर देंगे। तुम खुश-नसीव वच्चे हो। तुम्हारा वाप वहादुर था।" तव हम सबने प्रण किया कि हम ऐसा कोई काम नही करेंगे जिससे उनके पवित्र नाम पर धव्वा लगे या जिससे उनकी आत्मा को दुःख पहुचे। उस समय मैं पागल की तरह उन्हें उपदेश दे रही थी। क्या वे मासूम वच्चे मेरी वात को पूरी तरह समझते थे ? मैं हृदय का वोझ हलका कर रही थी। रोकर नही वल्कि उनकी वीरता की वातें याद करके। जव आदमी को चारो ओर से वहुत सी मुसीवतें घेर लेती है तव आप ही आप उसका धैर्य वंध जाता है। मेरे साथ भी यही हुआ परन्तु जैसे-जैसे समय वीत रहा था लड़कियो के लिए मेरी चिंता वढती जारही थी।

: ८ :

मेरी दुर्वलता और मेरी शक्ति

जिस जेल में हम वन्दी थे उसमें वरावर तीन दिन से ला-लाकर व्यक्ति वन्द किये जा रहे थे। तीसरे दिन उन्हें कुछ गोश्त-रोटी दी गई। वह किसी-किसी ने खाई। कइयो ने तो उसे लेने से इकार कर दिया। उनके लिये राशन का प्रवन्ध हो रहा था। अनेक स्त्री-पुरुष पास के खेतो में जाकर कमाद (गन्ने) तोड़ लेते थे और उन्हीसे अपना पेट भर लेते थे। वह एक अद्भुत दृश्य था, स्त्रियां रोती भी जाती थी और खाती भी जाती थी।

अचानक वहां हलचल मच गई। मेरे पूछने पर साथ की स्त्रिया कहने

लगी, "देखो, वे पाकिस्तानी आ रहे है। ये लोग दिन के समय कमरों में घूम-घूम कर स्त्रियो को पसन्द करते है फिर रात को लेजाते है। तीन दिन से यहा पर यही हो रहा है। बाप के देखते बेटी को, पति के देखते पत्नी को उठा लिया जाता है। मांओ की कोखो से बच्चे फेक दिये जाते है। तंग आकर कई स्त्रिया जहर खाकर मर गई। कइयों ने खिड़कियो के शीशो का चूर्ण खाकर प्राण देने का प्रयत्न किया और अभी वे पूरी तरह मर भी नही पाई थी कि उनके मा-बाप उन्हे कृष्णगंगा में फेक आये। कई नारिया स्वय नदी में कूद पड़ी पर पाकिस्तानी उनमें से कुछ को निकाल लाये और अब उन्हें तंग करते है :"

इतने मे कुछ व्यक्ति हमारे कमरे में आये और चारों तरफ घूर-घूर कर देखने लगे। उन्हें देख कर औरतो के होश उड़ गये। वे आपस मे कहने लगी, "न जाने अब किसको ले जायेंगे।" पाकिस्तानियो ने कुछ हिन्दू चुने थे और उन्हें राशन आदि के काम पर लगाया गया। खाने-पीने मे लोग इस तरह व्यस्त थे कि जान पड़ता था संसार में पेट की ज्वाला से तीव्र और कोई ज्वाला नही।

शिवदयाल और ओम् भी कही से गन्ने और भुट्टे ले आये। बच्चों को दो दिन से कुछ नही मिला था। वे खाने लगे। मैंने चार दिन से सिवाय भुने हुए काशीफल के एक टुकड़े और कुछ मक्की के दानो के और कुछ नही खाया था। दो दिन से पानी तक नही पिया था। खाने की कुछ इच्छा भी नहीं थी। मैंने ऊपर से चाहे कितनी ही हिम्मत बाब रखी थी परन्तु भीतर से उनके वियोग में मेरा हृदय टूक-टूक हो गया था। जीवन फीका-सा लग रहा था। मन इसी दुविधा में था कि मैंने उस समय घरसे निकल कर अच्छा किया या बुरा। कहीं मैंने उनके साथ धोखा तो नही किया। अगर वे स्वप्न में एक बार भी यह कह दें कि मै निर्दोष हू, मैंने जो कुछ किया अच्छा किया, तो मुझे बड़ी शान्ति मिले। फिर सोचती उन्होने तो अपना कर्त्तव्य पूरा किया। उनके बलिदान के कारण मेरा मस्तक सदा गौरव से ऊंचा रहेगा। अब

मेरा कर्त्तव्य है कि चाहे मुझे कितनी ही कठिनाइया क्यो न झेलनी पडें मैं रोकर या कायर बनकर उनके बलिदान को कलंकित न करू। और कभी बच्चो के सामने भीरुता की बातें न करूं। यदि मैं इन्हें प्रोत्साहित करती रही तो शायद एक दिन इनका नाम भी उज्ज्वल होगा। मुसीबत इन्हें अच्छे-बुरे का भेद समझा देगी।

मैं जेल में मुश्किल से ३ घटे बैठी हूगी कि इतने मे एक युवक चमनलाल मेरे पास आया और कहने लगा, "जो, वजीर साहब से हमारे संबन्ध बहुत अच्छे थे पर अब ईश्वर को जो मंजूर था वह हो गया। मैं आपसे इस समय एक विशेष बात कहने आया हू । आपकी कोठी में पाकिस्तानियो के दो सरदार ठहरे है। उनके पास कुछ फौज भी है। इस समय मुजफ्फराबाद का सब प्रबन्ध इन्ही के हाथ मे है। इन्हीं-में से एक सरदार ने आपको बुलाने के लिए अपना भाई भेजा है। आप चलिये।" यह सुनकर मुझे न जाने क्या हुआ। अच्छे-बुरे का ज्ञान जाता रहा। मैंने अपने बालों से धीरे-धीरे एक लाल रेशम की डोरी, जो शादी के समय सुसरालवालो से मिली थी, खींची। मैंने नजर बचा कर इसे अपने गले में डाला और इतने जोर से खींचा कि मैं बेहोश होकर गिर पडी। अचेत होते ही मेरे दात बैठ गये, आखें पथरा गई पर मैं मरी नही। बच्चे और ओम् मेरी यह दशा देखकर बिलख-बिलख कर रोने लगे। कोई मुह पर पानी छिडकने लगा, कोई मेरे हाथ पैर मसलने लगा। चमन को कुछ शक हुआ। उसने मेरे सर के दुपट्टे को सरकाया तो देखा कि गले मे फासी है। जल्दी से उसने गाठ खोल दी। कुछ क्षण बाद मुझे होश तो आगया परन्तु कमजोरी बहुत महसूस होने लगी। उस क्षण मैंने सोचा, इस समय मौत भी मुझे अपने पास नही बुलाती, वह भी मुझसे नफरत करती है, पर दूसरे ही क्षण एक विचार बिजली की तरह मेरे मन में कौंध गया—हे! तूने यह क्या किया—तू तो कई बार पति के सामने यह दावा करती थी कि अगर स्त्री में शक्ति है, तो हज़ारो आदमियो को उसके आगे झुकना पड़ेगा। वे यह सुनकर हस देते थे।

आज मेरे उसी दावे की परीक्षा हो रही थी पर मै डर गई। यह विचार मन में आते ही मै सहसा उठ खडी हुई और चमन से वोली, "कहां है सरदार का भाई ? उसे जल्दी वुलाओ।" फांसी से दम घुटने के कारण मेरे चेहरे का रग वदल गया था। ऊपर का हिस्सा कुछ सफेद और नीचे का कुछ नीला-सा धव्वेदार हो गया था। कुछ मिनट वाद चमन दो आदमियों को अन्दर लाया। आते ही उन्होने सलाम किया और कहा, "आपको हमारे सरदार याद कर रहे है।" मैने कहा, "मै सवके साथ चलने को तैयार हूं।"

और मै सवको साथ लेकर पहली वार अपने उजडे सदन को देखने चल पड़ी। मन में न भय था न सोच। उसी रास्ते पर जहा हम कभी वड़ी शान से चला करते थे आज नगे पैर और फटे हाल जा रहे थे। मनुप्य-जीवन भी क्या है। कभी अर्श पर कभी फर्श पर!!! हम कोठी पहुचे। वह जलकर राख हो गई थी। केवल रसोईघर और मेहमानो के कुछ कमरे वचे हुए थे। कई कवाइली वन्दूकें लिए इधर-उधर घूम रहे थे। वाहर के मैदान में उनका सरदार भी इधर-उधर घूम रहा था। लगभग पचास वर्ष का वह कवाइली शिलवार-कमीज पहने पिस्तौल और कारतूसो से सुसज्जित था।

हम पहुचे तो हमारे साथ का आदमी पहले सूचना देने के लिए उसके पास गया। सरदार ने हमें आने की आज्ञा दी। मैने उसके पास जाकर कहा, "सरदार, फकीर की सलाम।" उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा, "यह आप क्या कह रही है। मुझे वजीर साहव के मरने का अफसोस है। वह एक शेरदिल इन्सान था।" वह यह कह ही रहा था कि मैने किसी अज्ञात प्रेरणावश उसकी वात काटते हुए कहा, "खा, तुम किसके लिए खेद प्रकट कर रहे हो ? क्या वे कायर थे ? क्या उन्होने भय के कारण धर्म से मुह मोड़ा ? खेद तो तव होता जव वे झुक जाते या चार दिन की जिंदगी के लिए अपना कर्त्तव्य भूल जाते। मैं एक खुश नसीव स्त्री हूं क्योकि मेरे देवता ने कर्त्तव्य का पालन किया है। उस

दिन मैं अपने आपको और भी खुशनसीब मानूंगी जिस दिन मेरे दोनों पुत्र अपने पिता की तरह हंसते हुए वतन की भेंट हो जायेंगे। अगर तुम्हारा इस्लाम तुम्हें आज्ञा देता है तो अपने इन आदमियों से इनपर फायर करने को कहो। तुम देखोगे कि ये भी अपने पिता की तरह अपनी छातियों पर गोलियां खाना जानते हैं।" यह कहकर मैंने दोनों को आगे किया और उनसे कहा, "बेटा! मौत के स्वागत के लिए तैयार हो जाओ। दिखाओ इन्हें कि वीर लोग कैसे अपनी छाती पर गोलियां खाते हैं।" दोनों लड़के सामने आये। आंखें बंद कर वे छाती तान कर खड़े होगये और कहने लगे, "खां, अपने आदमियों को आज्ञा दो कि वे हमपर वार करें।"

बच्चों की हिम्मत देखकर सब दंग रह गये। जो आदमी हमारे सामने खड़ा था वह बंदूक नीचे करके बच्चों के पास आया। उसने मेरे बड़े लड़के को बड़े प्यार से छाती से लगा लिया। यह देखकर सब उपस्थित व्यक्तियों की आंखों से आंसू झरने लगे। खान खुद भी बहुत रोया, और कहने लगा, "बहन! तुम खुशनसीब हो। खुदा तुम्हारे बच्चों को सलामत रखे। एक दिन मुल्क में इनका नाम रोशन होगा। कितने बेखौफ हैं ये मासूम बच्चे! तुमने इनके दिलों पर क्या जादू कर दिया है? इन चार दिनों में हमने ऐसा कोई भी इन्सान नहीं देखा जो हमारे सामने इनकी तरह तनकर खड़ा हुआ हो।" मैंने कहा, "मैं कुछ नहीं जानती कि यह सब क्या है। पर मैंने शुरू से ही बच्चों को फर्ज पूरा करना सिखाया है। हम सब मर मिटेंगे किन्तु फर्ज से मुंह नहीं मोड़ेंगे।" वह बोला, 'सुनो बहन, आज भी तुम हमारी वैसी वजीरानी हो जैसे अपने मालिक के जीते जी थीं। हमारे दिल में तुम्हारी इज्जत है। हम यह कमरे तुम्हारे लिए खाली किये देते हैं, तुम यहां आराम से रहो। तुम्हारी बच्चियां कहां हैं, यह हमें मालूम है। हम अभी उन्हें तुम्हारे पास मंगवा देते हैं। यहां से कुछ दूरी पर यहीं का एक मुसलमान खानदान रहता है। वहां हमारा एक आदमी किसी काम से गया था। वहीं वे दोनों लड़कियां उसने देखीं। उसने उनसे पूछा कि तुम किसकी लड़कियां हो। उन्होंने जवाब दिया

कि वजीर साहब की। साथ ही कहा कि हमे दो कबाइली यहा छोड़ गये है और घरवालो को हमें अच्छी तरह रखने की हिदायत कर गये है। वे अब तक नही आये, हम उनकी इंतजार में है। इसपर मेरे आदमी ने उनसे पूछा, 'क्या तुम्हे उनपर भरोसा है?' लड़कियो ने जवाब दिया, 'हां, उन्होने अबतक हमारे साथ जैसा वर्ताव किया है उसे देखकर हमे उनपर पूरा भरोसा है। वे सबरे हमें हमारी मा के पास से ले आये थे। पहिले वे हमें एक घर मे ले गये। घरवालो से पूछा कि वहा कबाइली तो नही आते। 'आते है' ऐसा जवाब पाते ही हमे वे दूसरे घर मे ले गये, वहां भी ठीक जगह न देखकर वे हमे यहा तीसरी जगह लाकर रख गये है। हमारे आदमी ने उनसे पूछा, 'क्या तुम्हे यकीन है कि तुम्हारी मां जेल मे है?' उन्होने कहा, 'हा! उन दोनो ने हमे ऐसा ही बताया था।' फिर मेरे आदमी ने तुम्हारी पहचान के लिए निशानी पूछी। उन्होंने वह बताई। तब उस आदमी ने उन्हे साथ आने को कहा पर वे नही मानी, कहने लगी 'जबतक हमारी मा हमे हुक्म न देगी तब तक हम तुम्हारे साथ नही आ सकेंगी।' यह सब बातें उसने मुझे आकर कही। तब मैंने जेल मे तुम्हारी तलाश करवाई। अब मै अपने आदमी को उन्हे यहां लाने के लिए भेज रहा हूं पर साथ में तुम्हारी कोई निशानी चाहिए ताकि उन्हें तुम्हारे हुक्म का यकीन हो।" मैंने वैसा ही किया और वह आदमी मेरी लड़कियो को लेने को चला गया।

: ६ :

वे पवित्र फूल

मेरे धैर्य की एक और परीक्षा हुई। मै अपने शयनगृह की ओर गई। वहां उनका दाह सस्कार हुआ था। वह कमरा सारा जल गया था और वह सुन्दर शरीर भी, जो चार दिन पहले अच्छी हालत में था, उसीके

साथ जलकर राख होगया था। ऊपर से छत के गिरने के कारण फूल द्वार तक फैले पडे थे। मैं यह सब देखकर दीवानी-सी हो चली। मैंने द्वार पर जाते ही कहा,"धन्य हो प्रभु! तुमने मेरी यह प्रतिज्ञा भी पूरी की।" सब लोग देख रहे थे। मैंने उनसे कहा, "मुझे रोकना मत। मैं शव संस्कार की अन्तिम रस्म पूरी करना चाहती हू।" इसपर उन्होंने प्रश्न किया "क्या तुम्हे यकीन है कि यह तुम्हारे मालिक की ही लाश है?" मैंने उसी उन्माद में उत्तर दिया, "हां, मेरा हाथ दूसरों के फूलों को नहीं छू सकता।" एक व्यक्ति ने फिर मेरी परीक्षा लेनी चाही। कहने लगा,"सुनो उनकी लाश को हमने भगियो से नीचे फिकवा दिया था।" मैंने उसे उत्तर दिया, "नहीं, तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे धोखा मत दो। ये मेरे पति के फूल हैं, देखो! मुझे इनमें से सुगन्धि आरही है।"

इसके बाद उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैंने अपनी चुनरिया फाड़ी। उसमें सब फूल बांधे। तब बाहर आई। वहा खान था। लडकियां भी उतनी देर में आगई थी। मैंने उन्हें देखकर यूही आवेश में आकर कहा, "तुम कायर हो। मै समझी थी, कि तुम खत्म हो चुकी होगी पर तुम अभी तक जिंदा हो।" लडकियो ने उत्तर दिया, "मा, अगर हमपर कोई आफत आती तो तुम कभी हमें जिंदा न पाती। यदि कभी समय आया तो तुम देख लेना मा! कि तुम्हारी लड़कियां हसते-हसते प्राण देना जानती है।" खान का आदमी बोला, "तुम किस्मतवाली हो, तुम्हारी बेटिया हर तरह से महफूज हैं। इनकी हिम्मत मैंने तभी देख ली थी जब तुम्हारे हुक्म के बिना इन्होंने आने से इन्कार कर दिया था।"

यह बातें समाप्त होते ही दोनो लडकिया पिता के विषय मे पूछने लगी। मैंने कपड़े में बधे हुए फूल दिखाकर कहा, "ये है तुम्हारे पापा।" वे रोने लगी। मैंने रोने की मनाही करते हुए कहा, "देखो ऐसे शानदार बलिदान पर रोकर इसकी शान न घटाओ।" और तो सब चुप होगये पर सुदेश बहुत रोई। मैंने उसके पास जाकर धीरे-धीरे कहा, "सुन सुदेश, यह रोने का अवसर नहीं है। और यह एक

दिन का रोना नही है। यह तो जन्म भर का रोना है किन्तु जिन लोगोने उन्हें मारा है, उनके सामने मत रोओ।" यह सुनकर वह भी चुप होगई।

अपनी गोद में गठरी रखे मै वही मैदान में वैठ गई और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी, "हे सर्व शक्तिमान ! तुम्हारी अमानत मै खुशी से तुम्हें देती हूं। मुझे शक्ति दो कि यह यातना मै सहन करूं। मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया, भागे नही, यही उनकी शोभा थी। इसी प्रकार, हे भगवान्! परीक्षा चाहे कितनी कठिन लेना लेकिन मुझे धैर्यहीन न करना। नाथ, मुझे वल दो कि मै भी अपने कर्त्तव्य का पालन करूं।" यह सव मै उच्च स्वर से कह रही थी और वे सव लोग सुन रहे थे, आखें फाड़-फाड कर देख रहे थे। शायद वे मुझे पगली समझ रहे थे।

सरदार ने हमारे लिये कमरे खाली करने की आज्ञा दी। तीन कमरे खाली हुए। रसोई घर में हमारे जो वर्तन थे, वे हमे दे दिये गये। खाने-पीने की सव सामग्री मिली। विस्तरे लाकर मेरे सामने रख दिये गये। मैंने उनसे कहा, "कृपाकर मेरे सामने से यह सव सामान हटालो। आज मै इन चीजो में से किसी को भी हाथ नही लगाऊगी। उनकी पवित्र देह के अवशेष मेरे हाथ मे है। जवतक इनको ठिकाने न लगादू, इन लूट की वस्तुओ को मै नहीं छुऊगी। उन्हे ऐसी वस्तुओ से वडी नफरत थी।" उन्होने सव चीजें उठाकर कमरे मे रख दी।

तभी मुझे याद आया कि यहां के जंगल के डी. एफ. ओ. सतराम मोदी की पत्नी भी जेल में है। मै उसे वचपन से जानती थी और उसे मौसी कहती थी। वह वडी शरीफ और सीधी-सादी स्त्री थी। मैंने सरदार से कहा, "मेरी मौसी जेल में है, कृपाकर उसे भी यहा वुलवा दीजिए।"

थोड़ी देर में कुछ आदमी उसे एक घास की वुनी हुई खाट पर ले आये। उसके साथ उसका एक नौकर और मोदीजी के दफ्तर के एक क्लर्क की लड़की कमला थी। इस लडकी की आयु मेरी वडी लडकी जितनी थी।

वे आदमी मौसी को कमरे में ले आये । उसके कपडे रक्त से लाल थे। उसके पेट में गोली लगी थी, उसीसे रक्त वह रहा था। खासी उसे जोरो की थी । सास वडी मुश्किल से ले सकती थी । मैंने पास जाकर उससे उसके पति, लडके और साथवाली लड़की के पिता आदि के वारे मे पूछा । उसने कमला के वारे मे कहा, "इसका वाप इसे मेरे हवाले कर गया था । सुना है कि वह मारा गया है। वह एक काश्मीरी पडित था ।"

अब हम सब मिलकर वारह व्यक्ति होगये। मात वच्चे और पाच वडे । सबको जोरो की भूख लग रही थी । मैंने ओम् आदि को भोजन वनाने के लिये विवश किया । कहा, "उठो, भोजन वनाओ । जब तक दुनिया में जीना है सब कुछ करना है ।" वे उठे, सवने मिलकर भोजन वनाया। आज वच्चो को चार दिन वाद भरपेट खाना मिला था परन्तु श्रीमती मोदी और मैंने कुछ नही खाया ।

सरदार ने अपना डेरा पास ही डाक्टर की कोठी के वचे-खुचे कमरो में लगाया परन्तु उनके आने जानेवाले सिपाहियो और कवाइलियो की रसोई हमारी कोठी मे ही होती रही । जब सरदार जाने लगा तो कमरे के वाहर खड़े होकर उसने हमसे पूछा, "वहन ! किसी चीज की जरूरत हो तो वताओ ।" मैंने उसको धन्यवाद दिया । वह कहने लगा, "रात को यहां अकेले रहना अच्छा नही है । हम वाहर दो सिपाहियो का पहरा लगा रहे है ।"

रात हुई तो सव वच्चे विस्तरे विछाकर सोगये । वेचारो को कई दिन के वाद आराम की नीद नसीव हुई थी। वे भूल गये कि उनपर विपत्ति का पहाड टूट पडा है । मैं रात भर गोदी मे फूल लिए वैठी रही और ईश-वंदना करती रही । कभी-कभी मुझे ऐसा भ्रम होता कि मेरी गोदी म फूल हिल रहे है ।

सवेरे सव उठे । मैंने दोनो लड़को से कहा, "तुम्हे कृष्णगगा मे फूल विसर्जित करने दोमेल जाना होगा । इसी कारण तुम्हारे पापा ने तुम्हारा

यज्ञोपवीत किया था।" मैंने शिवदयाल से भी उनके साथ जाने को कहा। वे बोले, "माताजी, हम जाते तो हैं पर तुम जानती हो कि हिन्दुओं को देखते ही वे मार देते है। हां, अगर खान हमारे साथ सिपाही कर दे तो काम बन सकता है।" मैंने बड़े लड़के को खान के पास भेजा। सरदार ने अपनी मोटर दी। दोनों लड़के और शिवदयाल एक सिपाही को साथ लेकर मोटर पर दोमेल गये। कैसी अजीब सी बात है कि जिन लोगों ने वजीर साहब को मौत के घाट उतारा वे ही उनके फूलों के विसर्जनार्थ मोटर दे गये।

घंटे भर बाद वे उन फूलो को संगम पर विसर्जित करके लौट आये। कुछ देर बाद दोनो सरदार भी आये और बाहर खड़े-खड़े उन्होंने कहा, "तुम बेफिकर होकर रहो। अब कोई डर नहीं है। खुदा तुम्हारा मददगार है। हम अब मोर्चे पर जा रहे है, शाम को लौट आवेंगे। हमारे लिए दुआ कीजिए कि हमें कामयाबी मिले।" मैंने कहा, "भगवान् तुम्हे नेक कामो में लगाये, मेरा यही आशीर्वाद है। परन्तु मैं आपसे पूछती हू कि क्या किसी देश पर विजय प्राप्त करने का यही तरीका है कि वहा की जनता को मार, घरबार जला, स्त्रियों पर अनाचार कर और अन्याय का डंका बजाते हुये आगे बढ़ो? क्षमा करना, यह गड्ढा जिन्होने खोदा है, वे खुद उसमें गिरेंगे। आखिर हम सब ईश्वर की संतान है। हमें भले-बुरे की पहचान करनी चाहिए।" बातें कड़वी थी पर वे क्रुद्ध नहीं हुए। उन्होंने बड़ी शांति से जवाब दिया, "अब तक जो हुआ सो हुआ, पर अब सब ठीक होगा।" और वे चले गये।

: १० :

फिर उजड़े सदन में

दस बज गये थे। मैं स्नान करना चाहती थी परन्तु मेरे पास बदलने के लिए दूसरा कपडा न था। तन पर के कपड़ो से दुर्गन्ध आ रही

थीं । अचानक मुझे याद आया कि कुछ दिन पहले एक स्थानीय धोबी के पास हमारे कपडे गये थे । शायद वह दे दे इस आशा से मैंने एक सिपाही के साथ शिवदयाल को वहा भेजा । परन्तु धोबी ने यह कहकर कि उसके सब कपड़े लूट लिए गये है, इकार कर दिया । जब उन लोगो ने बहुत कहा तो उसने एक धोती और एक ऊपर दिया । मैंने स्नान किया । साबुन तो था नही, आटा मला । उसीसे सिर के बाल धोये । स्नान के बाद मुझे कमजोरी कुछ अधिक प्रतीत होने लगी । पाच दिन से भोजन नही किया था । ऐसा लगता था कि गश खाकर गिर पड़ूगी । मेरी यह हालत देखकर श्रीमती मोदी का नौकर जोधा खाना पकाने लगा ।

मै सोचने लगी, जिन्होने मेरे पति को मारा, क्या अब मुझे उन्हीं के यहा भोजन करना पड़ेगा । मै कितनी पापिन हू । मुझे अपने आपसे घृणा होने लगी । बहुत सोच-विचार के बाद मैंने बच्चो को समझाना शुरू किया, "मै जानती हू कि मुफ्त का खाना अच्छा नही है । इसलिये सरदार से कहकर कोई छोटा-मोटा काम तुम्हें दिला दूगी जिससे हमारे मनमें भी यह भाव रहे कि हम हक का खा रहे है । यद्यपि हमने सब कुछ गंवा दिया है किन्तु आत्मगौरव नही गंवाया है । तुम किसी की धौंस न सहना । कोई कुछ पूछे तो सही उत्तर देना । यदि तुम सत्य पर अडे रहे और योद्धाओ की भाति विपत्तियो का सामना किया तो तुम्हारा देश तुम पर गर्व करेगा ।"

इतने में भोजन बन गया । जोधा खाने का अनुरोध करने लगा । हमारी इच्छा तो नही थी किन्तु कमजोरी के कारण ऐसा लग रहा था कि खाये बिना रहना मुश्किल है । यह सोचकर हम दोनो ने भोजन किया । किन्तु साथ ही जन्म भर दिन में एक ही बार अन्न खाने का व्रत लिया ।

उस दिन बहुत से स्थानीय मुसलमान वहा आकर वजीर साहब के निधन पर शोक प्रकट करने लगे । मुझे यह बुरा लगा । मैंने उन्हे ऐसा करने की मनाही की । इसपर वे लोग उनकी बातें सुनाने लगे । एक बोला, "हम उस दिन उन्हे शहर मे इधर-उधर घूमते हुए देखते रहे ।

उन्होंने बहुत चाहा कि कही इत्तला दें पर कुछ हो न पाया। कितनी ही बार हमने उनसे छिप जाने को कहा पर वे एक न माने। उनकी बहादुरी की मौत की चर्चा सबकी ज़बान पर है।"

उसके बाद जो भी मेरे पास आता शोक प्रकट न कर उनके बलिदान की सराहना करता था।

कबाइलियो का लगर अभी हमारी कोठी की रसोईशाला में ही था। वहा टोलियो-की-टोलिया कबाइली आते रहते थे और हमें खिड़कियो में से घूर-घूर कर देखते थे। पहरेदारो के मना करने पर भी वे नही मानते थे। कभी-कभी तो कोई क्रुद्ध होकर कह देता, "मगरिकी पजाब में सिक्खों ने हमारी बहनों पर जो जुल्म किये हैं, उसका बदला हम यहा इनसे लेरहे है।" मैं उत्तर देती, "क्या वहा का बदला यहां लेना इन्साफ है ?" परन्तु उन्होने मेरी इस बात पर कभी कोई ध्यान नही दिया।

उस रात श्रीमती मोदी को जोर की खासी आई, साथ ही बुखार भी चढ़ा। कई दिन से उसे ऐसा हीं हो रहा था। उसका घाव बहुत गहरा था। कमला के पैर में भी गोली लगी थी किन्तु उसका घाव अधिक गहरा नही था। प्रातःकाल वे दोनो सरदार आये। कहने लगे "बहन ! अगर आप एबटाबाद जाकर रहें तो ज्यादा अच्छा है। वहा आपको किसी तरह की तकलीफ नही होगी। हम आपको वहा एक कोठी देंगे। बच्चो की पढ़ाई का इन्तजाम भी हो जायगा। जब आपका लड़का बडा होगा तो उसे पिता की जगह मिलेगी। ये बच्चे एक दिन बडे लायक बनेंगे और आपके दिन फिरेंगे।" मैंने उत्तर दिया, "मैं अभी कही नही जाऊंगी। वही रहूगी जहा मेरे पति मुझे छोड़ गये है। हा, मेरी एक बात मानिए—उन स्त्रियो पर जो जेल मे है आप कृपा कीजिए।" वे बोले, "हमने शहर के सब लोग जेल से निकालकर घरों में बसा दिये है।" मैने फिर कहा, "हमे भी कोई काम दीजिये ताकि हम मेहनत की कमाई खाये। क्या मै दुःखी लोगों की देखभाल कर सकती हू ?" वह कहने लगे, "नही, अभी आप आराम कीजिये। यह काम

आपके करने लायक नही है।" और वे दोनो चले गये। जाते समय वे रसोई से होकर गये और वहां के लोगो से कह गये, "देखो! भाई, मुर्गा वगैरह वनाना हो, वनाना पर गाय का गोश्त तव तक न वनाना जव तक ये यहां है। अगर तुमने इनका दिल दुखाया तो अच्छा न होगा।"

मैंने उनके आदमी से श्रीमती मोदी के लिए डाक्टर वुलाने को कहा। उस समय वहा कोई डाक्टर नही था। केवल दो काश्मीरी कम्पाउण्डर जीते वचे थे। वे उन्ही को ले आये। उन्होंने श्रीमती मोदी और कमला के घावो पर दवाई लगाई।

इधर जब मेरे मुहवोले भाई को मेरा हाल मालूम हुआ तो वह और उसका वाप दोनो मुझसे मिलने के लिए आये। भाई ने ईश्वर को वहुत धन्यवाद दिया और कहा, "आपपर खुदा की वडी महरवानी है, वहन! जव उस दिन मैं आपके पास था तो मेरे पीछे मेरे घर में से कवाइलियों ने तलाशी लेते हुए मेरी औरत के सव जेवर-कपड़े छीन लिये। लेकिन आपके जेवर मेरे घर में मौजूद है। वह आपकी अमानत है। कल मैं उन्हें साथ लेता आऊंगा।" मैंने उत्तर दिया, "मैने तो तुम्हे दे दिये है।" वह कसम खाकर वोला, "मै उनमे से एक भी न लूगा। तुम्ही उन्हे अपने पास रखो। किसी समय इन वच्चो के काम आवेंगे।" अव और क्या कहती, वोली, "अच्छा कल ला देना। जव कभी अपने देश जाऊगी तव तुम्हारे लिए जो कुछ भी भेज सकूगी, भेजूगी।" वह चला गया।

सुरेश खान के आदमियो के साथ फिरता रहता था। एक दिन वाहर से आकर पूछने लगा—"मा! हमारी क्या जाति है?" मैंने कहा, "तुम्हें तो मालूम है। हम वैश्य-महाजन है।" "देखो माताजी," वह वोला, "ये लोग मुझसे मेरी जाति पूछ रहे थे। मैंने वता दिया कि हम महाजन है। इसपर वे आपस में कहने लगे, 'महाजन कौम वडी वहादुर होती है। यह लड़का ज़रा भी नही डरता। इसके पापा ने भी वड़ी वहादुरी से गोलियां खाई।' पर मा, तुम तो कहती थी राजपूत लोग वहादुर होते है।" मैंने उत्तर दिया, "हा, वेटा राजपूत

तो बहादुर होते ही हैं, पर और जातियो में से भी ऐसे लोग निकल आते है जो उस कौम की शान बढ़ाते है।" फिर वह मरी आखों की ओर एकटक देखने लगा। मैंने दूसरी ओर मुंह फेरा तो वह भी उधर देखने लगा। मैंने कहा, "सुरेश बेटा! तुम यह क्या कर रहे हो ?" वह बोला. "मां! मुझे अपनी आंखो की ओर देखने दो।" मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्यों क्या बात है ?" वह कहने लगा, "जो व्यक्ति हमें जेल में बुलाने आया था वह सरदार का भाई है। वह मुझसे कह रहा था कि तुम्हारी मा कोई साधारण स्त्री नहीं है। हम उसकी आंखों की तरफ नही देख सकते। ऐसा लगता है कि उसकी आखो में आग है। मां, तुम्हारी आंखों में मैं वही आग खोज रहा हूं। पर मुझे तो कुछ दिखाई नही देता।" मुझे बड़ा अजीब-सा लगा, मैंने उसे समझाया, 'बेटा, बात यह है कि जब वे मेरे पास आते है तो मै उन्हें उनके अत्याचारो की याद दिलाती हू। उन्हें अपने पापों का भान होता है। शायद उन्हें मेरी आखो में अपनी पापमूर्ति दिखाई देती है। वैसे आग कभी किसी की आंखो में नहीं होती।" मै अभी उससे बात कर ही रही थी कि हमारे तीन साथी बाहर से घबराये हुए आये और कहने लगे, "माताजी! बारामूले तक तो ये लोग पहुच चुके है। बड़ी सख्त लड़ाई हो रही है। कहते है कि एक-दो दिन में श्रीनगर पहुच जायेंगे।" मैंने कहा, "चाहे लाख यत्न करें, ये लोग कभी श्रीनगर नही पहुच सकते।" वे तीनों हसने लगे, "आप इन्हे क्या समझ रही है? बस दो दिन और लगेंगे।

उसके बाद जब वे दोनो सरदार आये तो उनके साथ दो पाकिस्तानी अफसर भी थे। उनमें एक हमारे जिले की पुलिस का कप्तान था। वह जाति का पठान था। दूसरा था, रहमदाद खां, जिसे लोग हजारा जिले का 'एक्स्ट्रा कमिश्नर' कहते थे। दोनो ने आते ही द्वार पर खड़े होकर सलाम किया। फिर रहमदाद खां बोला "मुझे आप लोगों के इस हाल पर और वजीर साहब की मौत पर

अफसोस है।" मैंने सदा की तरह उत्तर दिया, "क्या कभी योद्धाओ की मौत पर शोक प्रकट किया जाता है ? आप भी ऐसा न करें। मुझे अपनी हालत पर जरा भी दुःख नही है। मुझे तो आपसे एक बात कहनी है। आप निहत्थो पर विशेषकर स्त्रियो पर अत्याचार क्यो करते है ? आप तो पठान है।" इसपर कप्तान बोला, "अब बहादुरो की तरह लडाई होगी और आलमगीर लडाई होगी। एक तरफ हवाई जहाज होगे, दूसरी तरफ बदूकें। हम दुनिया को बता देंगे कि बहादुर कैसे लडते है।" रहमदादखा कहने लगा, "मैने इन बच्चो की हिम्मत की बातें सुनी है। खुदा इन्हे बचाये। एक दिन इनका नाम रौशन होगा। पठान बहादुरो की इज्जत करते है। बहन, मै तुम्हारी हिम्मत देखकर बहुत खुश हू। पठान तुम्हे बहन कह चुका है। वह इस रिश्ते को आखिर तक निभायेगा। तुम यहा खुशी से रहो। जो होना था सो होगया। अब यहा का वजीर तुम्हारी देखभाल करेगा। वह तुम्हारे लिए राशन का और हर चीज का इन्तिजाम करेगा।" मैने कहा, "तुमने मुझे बहन कहा है। अब बहन की एक प्रार्थना भी सुन लो। शहर में जो अत्याचार होरहे है, उन्हे ईश्वर के लिए बद करवा दो।" "मै सब ठीक कर दूगा," वह बोला, "अब किसी किस्म का जुल्म नही होगा।"

कप्तान-पुलिस ने मुझसे पूछा, "यहा के कप्तान का क्या हुआ ?" मैने कहा, "उसका परिवार यहा नही था।" वह बोला, "हा, इस हमले से तीन दिन पहले मै यहा आया था। सबसे मिलकर गया था। काश्मीर से भी कई अफसर आये थे। उन सबसे भी मिला था।" यह कहकर वह अपनी विजय पर मुस्कराया। मैने दिल-ही-दिल में कहा, "आप तो यहा का हाल-चाल देखने आये थे पर यहा का शासक विभाग लम्बी करवट सोया था।"

कुछ दिनो के बाद फिर आने की बात कहकर वे दोनो चले गये। जिस कप्तान पुलिस का यह जिक्र कर रहे थे वह मेहता साहब के साथ ही घर से निकला था और किसी दोस्त के यहां छिप

गया था। पाकिस्तानियों ने उसे ढूढ निकाला और डोमेल डाकवगले के पास जव वह नदी पर पानी पीने जारहा था, गोली से मार दिया। इसी तरह और अनेक अफसरो को उन्होने मौत के घाट उतार दिया था। वहा का तहसीलदार पंडित ताराचंद कही छिप गया था। नये शासको ने उसे खोज निकाला और मुकामी वजीर वनाया। सुना जाता था कि उन्हे काश्मीरी पडितो से रिआयत करने की हिदायत है। नये प्रवंव ने कई मुसलमानों को भी छोटी-छोटी नौकरियों पर नियुक्त कर दिया था। रिटायर्ड फौजी मुसलमानो से वे यह अपील करते थे कि रुपये में से चार आने हमें सहायता दो। जव वे इसपर भी राजी नही होते थे तो फिर वार-वार 'इस्लाम खतरे मे है' का नारा लगाकर उन्हे मजहव के नाम पर उभारते थे।

: ११ :

मुसलमान भी डरने लगे

इस प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। हर समय खतरा वना रहता था क्योकि इन लोगों का कोई भरोसा नही था। कोई भी आकर कुछ कर सकता था। पर जव वे मेरे पास आते तो शायद रहमदादखा के डर के कारण अदव से पेश आते थे।

एक दिन अनायास ही मेरे मुंह से एक वात निकली, काश कि उनका एक फोटो ही वचा होता। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जव आध घंटा वाद हाथ में एक फोटो लिए सुरेश दौड़ा-दौड़ा मेरे पास आया। मैंने देखा वह नेगेटिव सहित उनका फोटो था। पूछा, "यह तुम्हे कहां मिला ?" वह वोला, "मै वाहर मैदान में घूम रहा था। फूलो की उस झाडी के नीचे मैंने कुछ चमकती चीज़ देखी। पास गया तो ये मिले।"

हमें राशन की वड़ी तकलीफ थी। जो कुछ वहा मिलता था वह काफी नही था। ऐसी अवस्था में एक दिन रहमदादखां ने दो मन आटे

को एक बोरी, कुछ घी, दाल और चाय आदि भिजवाई। पति के हत्यारो से मुफ्त की चीजें लेते मुझे अपार वेदना होती थी परन्तु न लेती तो बच्चे क्या खाते! फिर रहमदाद खां मुझे बहन कह चुका था। मुझे वे चीजें लेनी पड़ी। रहमदाद खां के कारण हर अफसर हमसे कुशल-मगल पूछ जाता था। एक दिन नया वजीर, भूतपूर्व माल अफसर और नायब तहसीलदार (जो अब तहसीलदार बनाया गया था) ये सब हमारे पास आये। माल अफसर और तहसीलदार दोनो काश्मीरी मुसलमान थे। उन्होंने मुझसे सवेदना प्रकट की और अपनी दशा पर दुःख प्रकट करते हुए वे बोले, "हम तो यहां जीते जी नरक भोग रहे हैं। इससे तो मरना ही भला।" उनकी बातो से मैंने जाना कि अफसर बनने पर भी उन्हे अवश्य कुछ तकलीफ है। मैंने भी उन्हें सान्त्वना दी, कहा, "कल की चिंता मत करो। जो भगवान् करेगा अच्छा ही करेगा। अपना फर्ज अदा करते जाओ। मुझे ही देखो, सिवाय भगवान् के मेरा और कौन है? लड़कियों के साथ इन लोगों मे रह रही हूं। सिर तलवार की धार के नीचे है पर घबराती नही हू। मुझे कायरता से चिढ़ है।" वे बोले, "अब तक आपने जो कुछ किया वह सब हम सुन चुके है। ये लोग तुम्हारी बड़ी इज्जत करते है। रहमदाद खां ने सबको तुम्हारी देखभाल करने को कहा है।" रहमदाद खां ने एक डाक्टर और कम्पाउन्डर को भी श्रीमती मोदी के इलाज के लिए भेजा। ये दोनो फौजी पठान थे, देखने आये और दवाई देकर चले गये।

बच्चे वैसे तो ठीक चल रहे थे पर सबसे छोटा बच्चा सवेरे उठकर खाने के लिए कुछ मागता था। मै उसके लिए रात की बासी रोटी रख छोड़ती थी। वह बहुत सख्त बन जाती थी। चबाते-चबाते एक दिन उसके गले में दर्द होने लगा। वह कहने लगा, "मां, यह रोटी चबाई नही जाती। गले में लगती है।" यह कहते-कहते उसकी आंखों से आंसू झरने लगे। मुझे भी दुःख हुआ पर मैंने उसे समझाते हुए कहा, "बेटा तू तो हर समय कहा करता है कि मैं वीर बनूंगा। क्या यही तेरी वीरता

है ? तुझे तो सूखी रोटी खाने को मिल जाती है पर तेरे हजारो भाई-बहन इसके एक-एक टुकडे के लिए तरसते रहते है।" चार दिन बाद वह बोला, "मा, अब मुझे यह रोटी बिस्कुट की जैसी लग रही है।"

एक दिन विमल को जोर का बुखार आगया। दो दिन तक उतरा ही नही। बच्चा भूख और बुखार से छटपटा रहा था। मेरे पास दूध या दवा मगाने के लिए भी पैसे न थे। बस केवल ईश्वर का भरोसा था। मै हर समय उसीसे प्रार्थना करती रहती थी। इत्तफाक से एक दिन सरदार रहमदाद खा वहा आया। बच्चे को तड़पता देखकर वह दस रुपये दूध के लिए देने लगा। जब मैंने रुपये देखे तो मै सिर से पैर तक काप उठी, सोचा "क्या अब इनसे रुपये भी लेने होगे ?" मुझे इस असमजस में देखकर उसने ठडी आह भरी और बोला, "बहन ! मै तुम्हारी तकलीफ समझता हू परन्तु इन्सान वही है जो हालात के मुताबिक अपने को बदल ले। क्या तुम मुझे भाई नही समझती ? अगर समझती हो तो लो। अगर तुम्हारे वालिद या भाई तुम्हे कोई चीज़ देते तो क्या तुम न लेती ?" उसने रुपये विमल के हाथ मे थमा दिये और मुझसे कहा, "बहन ! मै बारामूला जा रहा हू। वहा भी तुम्हे याद रखूगा। वहा से आने पर तुम्हारा सब इन्तिजाम ठीक करूगा।"

उस समय बारमूले मे घोर युद्ध हो रहा था। उसके कुछ दिनो बाद अचानक हमारे यहा से सरदारो का लगर बद होगया। कोई पहरा नही रहा। अब वे दो सरदार भी दिखाई नही देते थे। केवल हम ही हम उस उजडे मकान मे रह गए। कुछ समझ मे नही आता था—क्या बात है ? इधर कबाइली शहर के चद पुनर्वासित हिन्दुओं को फिर लूटने और तग करने लगे। शहर मे बेचैनी फैल गई। अब स्थानीय मुसलमान भी इनसे तग आगए थे। वे पाकिस्तानी चाल समझ गए थे। उनमे से कुछ लोग हिन्दुओ से कहने लगे, "जब वे लोग तुम्हारी लडकियां लगे तो हम उनके मुकाबले मे तुम्हारा साथ देगे।" वास्तव में उन्हे हिन्दुस्तानी फौज के मुकाबले पर आने का पता लग

चुका था। वे डर रहे थे कि अगर हमने हिन्दुओ का साथ न दिया तो न जाने हिन्दुस्तानी फौज हमारे साथ कैसा सलूक करे! अपने बचाव का उन्हें यही उपाय सूझा।

एक दिन चमनलाल आकर मुझसे कहने लगा, "आप यहा न रहें, यह जगह सड़क के पास है। सुन रहे हैं कि ये लोग पीछे हट रहे हैं। मुज़फ्फराबाद मे इस समय मुकामी निवासियों और कुछ मामूली अफ्सरो के अलावा और कोई नही है। हारकर पीछे हटते समय ये लोग लूट-मार कर रहे है। आप हमारे घर चलिए।"

मैंने कहा, "दो दिन बाद सोचकर जवाब दूगी।"

: १२ :

ये नेक इन्सान

आखिर हिन्दुस्तानी लड़ाके जहाज आकाश मे मडराने लगे। उनके प्रतिदिन नगर के ऊपर उड़ान करते समय हमे लगता था कि वे हमारी कोठी पर चक्कर लगाते हैं। दोमेल पर बम गिरने की दिल दहला देनेवाली आवाज से सभी चौंक उठते थे। लगता था कि हमारी छत अभी गिरी। कबाइलियो ने हवाई जहाज का नाम 'खुदा का बच्चा' रखा हुआ था। इससे वे लोग बहुत घबराते थे। हम बहुत चाहते थे कि उन्हे कुछ सकेत करें किन्तु कैसे करे, यह नही जानते थे।

एक दिन हम सन्ध्या के समय तेल का दिया जलाये बैठे थे। यह असाधारण-सी बात थी क्योंकि अक्सर हम अंधेरे में ही बैठा करते थे। तभी दस-बीस पाकिस्तानी फौजी हमारे अहाते मे आये। हमने उनकी पदचाप सुनते ही दिया बुझा दिया। यह देखकर वे बिगड़ उठे। मैंने बैठे-बैठे ही उनसे कहा, "देखो भाई, हमारा इसमे क्या दोष है? आप ही बताइये, हमारे पास इतना तेल कहा है जो दिया जलाये रखे। अगर आपको जरूरत हो तो जलाये देते हैं। क्या मैं दरवाजा खोलू?" यह सुनकर वे ठडे पड

गये और कहने लगे, "नही, हमें कुछ नही, चाहिये। सिर्फ यह पूछना है कि यहां जो फौजी लंगर था, वह कहा गया ?" मैंने कहा, "कई दिन से उनका कोई पता नही है।"

"अच्छा, तो हम जाते है।"—यह कहकर वे चले गये। उनके इस तरह जाने से सबको आश्चर्य हुआ।

इन्ही दिनो नगर मे भी एक दिन बडा कोलाहल मचा। बात यह थी कि पाकिस्तानी लोग लडकियो को घरो से निकाल निकाल कर ले जाने लगे थे। उस समय कई शरीफ मुसलमानो ने हिन्दुओ का साथ दिया। अगर वे कही शुरू से ही इस प्रकार साथ देते तो क्या मजाल कि किसीका बाल भी बांका होता। फिर भी उनमे से बहुत-से आदमी इस हत्याकाण्ड के विरुद्ध थे, पर उनकी कौन सुनता था। ऐसी अवस्था मे श्रीमती मोदी मुझसे कहने लगीं, "तुम्हारा बेमतलब का हठ मुझे अच्छा नहीं लगता। कौन जानता है इन लडकियो पर कब क्या आफत आजाए।" उसकी बातें सुनकर मैं भी घबरा गई और चमनलाल के घर सामान लेजाने की अनुमति देदी। सामान लेकर वे तीनो आदमी चले ही थे कि रास्ते मे पुलिस का अधिकारी उन्हे मिल गया। उसने पूछा, "कहा जा रहे हो?" वे बोले, "किसीके घर रहेगे। माताजी कहती है कि इस उजाड़ में रहना अच्छा नही।" इसपर पुलिसवाले ने कहा, "नही, माताजी से कहो, कि हम उन्हे कही नही जाने देंगे। उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी हमपर है। मैं रात को पहरा लगवा दूगा।" वे बिस्तरा लेकर वापिस लौटे और मुझे सारी बात सुनाई। रात भर देखते रहे, कोई पहरेदार नही आया। सुबह सुना कि जहा हम जा रहे थे वहा से कबाइलियो ने उसी रात लडकियां छीन ली और सामान लूट लिया। उस मकान मे कई हिन्दू परिवार रह रहे थे। जब मैंने यह सुना तो मेरे मन मे पक्का विश्वास होगया कि दिव्य शक्ति हमारी रक्षा कर रही है। बाद मे हमने उस पुलिस अफसर को कभी नही देखा। हमने वे तीन-चार दिन बहुत बेचैनी और घबराहट में काटे।

बाद मे खबर आई कि हिन्दुस्तानी बहादुरो ने शत्रुओ मे बारामूला

छीन लिया है। कबाइलियों के पैर उखड़ गये। पाकिस्तानी सेना के अधिकारी उन्हें पीट-पीट कर, जबर्दस्ती मोर्चे पर जाने को विवश करने लगे पर वे हजारो की संख्या में वापस भागे। लौटते समय रास्ते में जो कुछ मिलता था वही वे लूट कर ले जाते थे। हमने यहां तक सुना कि उनकी जेबो मे बहुत से कटे हाथ और कान देखे गये। बात यह थी कि भागते हुए उनके पास इतना समय नही था कि वे तसल्ली से गहने उतारते इसलिये वे तल-वार से गहनो समेत कान और हाथ काट लेते थे। इस बीभत्स दृश्य से मुजफ्फराबाद वासी बहुत आतंकित हुए।

हमें अब अपनी कोठी मे आये सतरह दिन होचुके थे। एक रोज हमे दिन के चार बजे हृदय-द्रावक चीख-पुकार सुनाई दी। उसे सुनकर श्रीमती मोदी कहने लगी, "मालूम होता है, लुटेरे भारी सख्या मे लडकिया ले जा रहे है। न जाने अब हमारी इन मासूम बच्चियो का क्या होगा?" मैंने भी घबराहट मे कहा, "अब क्या करु? नदी पास होती तो हम सब उसमें डूब मरती। अब ये रोज-रोज की कठिनाइया नही सही जाती।" मै यह कह ही रही थी कि कोठी के सामने से आवाज आई, "बहन जी, लडकियों को साथ लेकर जल्दी आइये। देखो, ये जालिम लुटेरे स्त्रियो और मासूम लडकियो को लिये जा रहे है।" मैं हैरान थी कि यह कौन बुला रहा है। सिर उठाकर देखा तो पास की मसजिद का मौलवी आवाज दे रहा था। मैं उसे विशेष रूप से नही जानती थी। श्रीमती मोदी पहिले तो अनजान मुसलमान पर विश्वास न करने को कहने लगी, पर जब मैंने उसे यकीन दिलाया कि हम वहा पर सुरक्षित रहेगे तो वह मान गई और हम सब शीघ्रता से मौलवी के घर पहुचे। मौलवी ने बताया, "मैं घर में बैठा हुआ था। जब चीख-पुकार सुनी तो मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे आपके घर की तरफ धकेल रहा है। इसीलिये मैंने आपको पुकारा। यहा आप अच्छी तरह रह सकती है क्योंकि यहां कोई नही आयेगा।"

दूसरे दिन सुना कि उस रात कुछ लुटेरे हमारी कोठी में घुसे थे। शुक्र है कि हम बच गये।

हमने देखा कि मौलवी के घर हमारी कोठी का कुछ फरनीचर था। बच्चे देखकर कहने लगे, "मा! देखो ये हमारी चीजें है।" मैंने उन्हे ऐसा कहने की मनाही करते हुए कहा, "अगर ये चीजें जल गई होती तो क्या होता? अच्छा हुआ जो वे किसी के काम आगई। मै खुश हूं और तुम्हें भी इसपर प्रसन्न होना चाहिये।" यह सुन कर वे चुप होगये।

उन दिनो वहां के मुसलमान भी डर कर पाकिस्तान भागे जा रहे थे। यह अफवाह थी कि हिन्दुस्तानी सिख सेना मुसलमानो को विना भेद-भाव के मारती-काटती आ रही है। एक रात तो सचमुच सारे मुसलमान भागने को तैयार होगये। मौलवी भी बहुत घबराया। उसकी स्त्री विलाप करने लगी। मौलवी की दो जवान लड़किया थी। उन पति-पत्नी को उन्ही की विशेष चिन्ता थी। रात को वे लोग बहुत परेशान रहे। चीख सुनकर मै उठी और देखा बाहर एक बहुत बड़ा हजूम इसी तरह घबरा रहा है। मै उनके बीच मे जाकर खडी होगई और कहने लगी, "भाइयो! कही मत जाओ। तुम्हे कोई नही मारेगा। यह सब पाकिस्तान का झूठा प्रचार है।" वे बोले, "देखो जम्मू में क्या हुआ है। जब वे यहां के हिन्दुओ की बुरी हालत देखेगे और देखेगे कि शहर लाशो से भरा हुआ है तो क्या वे हमे जिन्दा छोडेगे?" मैने कहा, "मै वायदा करती हू कि मै तुम्हे बचाऊगी। मेरे पास कुछ नही है। ये बच्चे और अपनी जान है। तुम सब एक जगह इकट्ठे रहना। मै तुम सब के आगे रहूगी। पहली गोली मेरे सीने मे लगेगी। बाद मे तुम्हारी बारी आयेगी। जब हमारी फौज दोमेल पहुचेगी तब हम सब मिलकर वहा चलेगे। मै सबसे आगे लाल झंडा लेकर चलूगी। मै सौगन्ध खाकर कहती हू कि अपना बलिदान देकर भी मै तुम्हे बचाऊगी।"

मेरी इन बातो का उनपर पूरा प्रभाव हुआ और वे सबके सब मेरे दाये-बाये फिरने लगे। कुछ लोग मुझसे बोले, "तुम्हे तो अच्छी तरह मालूम है कि किस किस ने पाकिस्तानियो का साथ दिया है। इन्हे हमने नही बुलाया था। हम सब हिन्दू-मुसलमान एक थे। इन्होने बाहर से आकर यहा यह कहर बरपा किया है।

मुझे इनकी इस घबराहट पर बड़ी दया आ रही थी। मैं सोच रही थी कि जैसे भी हो इन्हे बचाना चाहिये। मुझे स्वप्न में भी कभी यह विचार नही आया कि चूकि इन लोगो ने मुझे इतना नुकसान पहुंचाया है इसलिये मुझे इनका साथ नही देना चाहिये।

मेरे पास से वे लोग अब्दुल अजीज नाम के एक व्यक्ति के पास गये और उनसे मेरी सारी बात कह सुनाई। उसने उन्हे कहा, "वह जो कुछ कहती है वह सच है। तुम उसकी अच्छी तरह से हिफाजत करो। वह समय पर तुम लोगो को बचायेगी। मेरी ओर से भी उनसे प्रार्थना करना कि अगर वह चाहे तो मेरे घर आकर खुशी से रह सकती है।"

ससार में ऐसे भी लोग है, जो दूसरो के लिये अपना सर्वस्व अर्पण करते है। उनमें जाति, मजहब, रग वा नस्ल का भेद-भाव नही रहता। अब्दुल अजीज इसी मनोवृत्ति का एक अमर मानव था। जन्म से मुसलमान, पेशे का दर्जी, वह शुरू से ही काश्मीर नेशनल कार्फ्रेस का सदस्य और स्थानीय आन्दोलनो का अगुआ था। आक्रमण से कुछ दिन पहले ही जेल से छूट कर आया था। उसने जब देखा कि हिन्दू महिलाओ पर अत्यधिक बर्बरतापूर्ण अत्याचार हो रहे है, वे गलियो में दर-दर भटक रही है, उन्हे रहने के लिये कोई ठिकाना नही है, तो उस सच्चे और नेक मानव ने शेर की तरह दिलेर बन कर चार सौ हिन्दू देवियो और बच्चो को अपने घर पर रखा। अपना सामान बाहर रखा, खाना बाहर पकवाया, पर पीडित बहनो को आदर का स्थान दिया। पाकिस्तानियो ने उसे बहुत तग किया, परन्तु वह सदा यही कहता रहा, "चाहे तुम मुझे जान से मार दो, पर मैं एक बहन को भी घर से नही निकलूगा।" इसी बात पर कबाइलियो ने पहले तो उसका सब सामान लूट लिया पर जब वह फिर भी अपने प्रण से नही टला, तो एक दिन उन जालिमो ने उसे पकड कर कैद कर लिया। बाद में सुना कि उन्होने उसे जान से मार डाला।

अब्दुल अजीज के समर्थन के बाद सबने मेरा कहना मान लिया। दो दिन बाद जब हालत कुछ सुधर गई तो वे लोग मुझसे कहने लगे, "बहन,

तूने उस दिन हमारे पाच सौ आदमियो को बेघर होने से बचाया, तेरे एहसान हम कभी नही भूलेगें।"

: १३ :

मौलवी के घर में

अब मुसलमानो में भी कबाइलियो का डर बढने लगा था क्योंकि वे लोग भागते हुए उन्हें भी लूट लेते थे। हमने तो यहा तक सुना कि वे लोग उनकी स्त्रियो और लड़कियो को भी उठाकर ले जाते थे। मौलवी को भी भय लगा। उसने अपने संदूक आदि दीवार मे रखकर ऊपर लकडी के तख्ने लगा दिये। फिर उन्हे मिट्टी मे पोत दिया।

इसी डर के कारण मुसलमान अब दिन-रात कुरान शरीफ पढते रहते थे। उनका खयाल था कि जब कबाइली आयेंगे तो उन्हे कुरान पढते देखकर तंग न करेंगे। लेकिन उनका यह खयाल ठीक न निकला। एक दिन कबाइलियो की एक टोली एक काश्मीरी मालदार मुसलमान का घर लूटने लगी। वह कुरान पढ रहा था। उसने कहा, "भाई, मै भी मुसलमान हूं और तुम भी मुसलमान हो। देखो, मैं इस समय कुरान शरीफ पढ़ रहा हूं। तुम्हे इसकी तो इज्जत करनी चाहिये।" उन्होने उत्तर दिया, "हमारा मजहब जर है। तुम क्या पढ़ रहे हो? इसकी हमें बिल्कुल परवा नही है।"

और उन्होंने उसका सब कुछ लूट लिया। सुना गया कि उन्होने कुरान शरीफ तक के वर्के फाडकर इधर-उधर फेंक दिये जिसके कारण स्थानीय मुसलमानो में बड़ी हलचल मची और बाद मे पाकिस्तानियों को एक ऐसी टोली वहा भेजनी पडी जो रोजाना मसजिद मे जाकर नमाज पढती थी। यह सब इसलिये किया गया था जिससे कि स्थानीय मुसलमानो को उनके सच्चे मुसलमान होने का विश्वास हो।

वर्तमान वजीर प० ताराचन्द कभी-कभी मेरे पास आकर मेरी जरूरत के बारे में पूछ-ताछ कर जाता था। मै उसे अक्सर उदास पाती थी। न जाने

ये लोग उसे कितना कष्ट देते थे। वह मुंह से कुछ नहीं कहता था। परन्तु उसकी निराशा भरी आखें सब हाल साफ-साफ बतला देती थीं। उसकी दो नवजवान लडकिया और एक लडका था। वे लड़कियो के कारण वहां फंसा हुआ था। कुछ दिनों बाद पता चला कि उसकी वजारत छीन ली गई। बेचारे को सिर छिपाने का ठिकाना न रहा। किसी तरह एक मुसलमान दर्जी के पास जगह मिली। आखिर इसी गम में वह एक दिन चिरनिद्रा में सो गया। सुना गया कि उसकी लाश कब्र मे दफना दी गई। बाद में उसके तीनो बच्चे शरणार्थियो के साथ रेडक्रास की सहायता से वहा से निकल आये।

जब वह पहली बार मेरे पास आया था तो उसके साथ एक काश्मीरी मुसल्मान था। वह भूतपूर्व माल अफसर था। उसका परिवार श्रीनगर में था। मुझसे मिलने के कुछ दिन बाद न जाने वह कैसे श्रीनगर पहुंच गया। पिछले दिन वह मुझे श्रीनगर में मिला। कहने लगा,"अगर तुम उस दिन मेरी हिम्मत न बंधाती तो मै अपने परिवार को फिर न पा सकता।"

इस तरह हमें मौलवी के घर रहते दस दिन बीत गये। आटा समाप्त होने को था। मेरे और श्रीमती मोदी के एक वक्त खाने के कारण कुछ बचत जरूर होती थी, फिर भी खर्च बहुत था। अक्सर मौलवी मुझसे कहता, "बहनजी, अनाज के बिना आपका क्या होगा।" मै उससे कहती, "जिसने आजतक बचाया है, वही आगे भी बचायेगा।"

पहनने के कपडे भी फट गये थे। नये बनाने का कोई प्रश्न नहीं था। इसलिए उन फटे हुए कपड़ो में ही टाकियां लगा लेती थी? साबुन नहीं था। इसलिये गर्म पानी में राख डालकर कपड़ो को उबाल लेती थी। एक दिन बाहर के कुछ बालको को मेरे बच्चो ने अपने कपड़े पहने देखा और मेरे पास आकर अश्रुपूर्ण नेत्रो से बारी-बारी से कहने लगे, "माताजी, देखो उसने मेरा फ्राक पहना है। देखो मां, उसने मेरा कोट पहना है। तुम हमें इनसे ये माग दो न। देखो, हमें कितनी सर्दी लगती है। हमारे कपड़े हमें वापस दिलादो मा!" मैंने जवाब दिया, "तुम्हे क्या हो गया है? तुम कपड़ो को ही सब कुछ समझते हो।,क्या मैं इन कपड़ो के लिये झगड़ा मोल

लू। मांगना तो दूर रहा, मै तो इन्हें यह जताना तक नही चाहती कि ये हमारी चीजें हैं। जहां तुम्हारे पापा चले गये, वही पर घर का सव आराम भी गया। जाओ जिन वच्चो ने तुम्हारे कपड़े पहने हैं, उनके साथ प्रेम से खेलो और उन्हें इस वात का ज्ञान न होने दो कि तुमने कपड़े पहचान लिए है।" यह सुनकर वे सव चुप हो गये। उसके वाद भूखे पेट, फटे हाल रहकर भी उन्होंने किसी वस्तु की लालसा प्रकट नही की।

एक दिन सायंकाल के समय हम सव बैठे हुए थे। द्वार वद था। मौलवी मसजिद मे गया हुआ था। अचानक द्वार खटखटाने की आवाज़ हुई; खोलकर देखा तो एक पाकिस्तानी अफसर और तीन सिपाही कुछ आदमियो के सिर पर वोझ लादे वाहर खड़े है। अफसर ने पूछा, "वजीरानी साहिवा यहा है क्या ?" हम सव पहले तो एक दूसरे का मुह ताकने लगे। पर फिर तुरन्त ही मैंने आगे वढकर कहा, "क्या वात है ? मै हूं!" उसने वडे अदव से सलाम किया और कहा, "वहनजी ! मै सुवह से आपको ढूंढ रहा हूं। कही पता नही लग रहा था। न जाने हमने कितने घर छान डाले। रहमदाद खा ने आपके लिए यह राशन भेजा है और हिदायत की है कि वहन से कहना, फिकर न करें, मै कुछ दिन वाद आ रहा हू। सव इंत-जाम कर दूगा।" यह कहकर वे राशन की गठरिया रखकर चले गये। उनमें गुड, नमक, और आटा था।

उनके जाने की खडखड़ाहट सुनकर मौलवी भी दौडा आया और पूछने लगा, "वहनजी, कौन था ?" मैंने उसे सारा हाल कह सुनाया। उसने इत्मीनान की सास लेते हुए कहा, "हमने आपके यहां रहने का भेद छिपा रखा था। उन्हे कैसे मालूम हुआ ?" मैने उससे कहा, "सुनो, मैं छिपकर कही नही रह सकती। मैने उस प्रभु की शरण ली है, जैसे वह रखेगा, रहूंगी।" मौलवी मेरी वातो से वडा प्रभावित होता था। देर-देर तक मै और वह ईश्वर-सवंधी वातचीत करते रहते थे। मेरे पास से उठकर वह अपनी वीवी से कहा करता था, "देखो, जो खुदा पर भरोसा रखते है उनकी मुराद कैसे पूरी होती है।" उसकी स्त्री राशन देखकर चिढ गई। वैठे-वैठे हमें घर पर

ही सब कुछ मिल जाना उसे पसंद नहीं था। धीरे-धीरे उसका बर्ताव बिगड़ने लगा। मैंने उसे राशन देकर सन्तुष्ट करना चाहा परन्तु उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह तो हमें तड़पते ही देखना चाहती थी। मौलवी ने भी उसे समझाया, "तुम इनसे कुछ न कहो। सब अफसर इन्हे जानते है। ऐसा न हो कि हमें मुसीबत उठानी पडे।"

उन दिनों एक पाकिस्तानी अधिकारी स्थानीय अवस्था पर नियत्रण रखने के लिये यहा आगया था। वह एक सिविलियन पठान था। एक दिन वह मेरे पास आया। उसके साथ तीन सशस्त्र सैनिक थे। वह मुझसे और बच्चो से बड़ी शिष्टता से मिला। उसने हठ करके मेरी आपबीती सुनी और जब मैंने अपने कान का जेवर देने की बात बताई तो उसने पूछा,"क्या आप बता सकती है कि वह जेवर आपने किस को दिया था?" मैंने स्पष्ट इन्कार कर दिया। यह तो अपने रक्षक के प्रति विश्वासघात करने जैसी बात थी। वह चुप हो गया। जाते समय कहने लगा, "जब कभी कोई मुश्किल पेश आए तो मुझसे कहना। मै जब तक यहा हू आपकी हर तरह से मदद करूगा।"

: १४ :

मेरे भाई

कुछ समय पश्चात् एक दिन सायकाल के छः बजे पता लगा कि रहमदाद खां आ गया है। मैंने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की। बाहर जाना खतरे से खाली नही था, पर मै किसी बात की चिन्ता किये बिना वजीर के पास पहुंच गई, वही खा ठहरा हुआ था। तब कुछ-कुछ अंधेरा हो चला था। वहा पहुचकर मैंने देखा कि कई अफसर इधर-उधर घूम रहे है। मैंने संतरी द्वारा रहमदादखा के पास अपने आने की सूचना भेजी। वह तुरन्त बाहर आया। बड़े आदर से भीतर ले जाकर कहने लगा, "आपने यहा आने की तकलीफ क्यो उठाई? कल मै आपके पास खुद ही आनेवाला था।" मैंने कहा,

"एक तो मे आपको धन्यवाद देने आई हू । दूसरे मुझे आपसे कुछ कहना भी है ।" वह बोला, "सवेरे मैं वही आऊंगा । तब बातें होगी ।"

अपने कथनानुसार खां सुबह आया । उसके साथ एक और व्यक्ति था । उसका परिचय कराते हुए खा कहने लगा, "यह एक बड़े नामी डाक्टर है । मेरी गैरहाजिरी मे यह आपका खयाल रखेगे ।" साथ ही पूछा, "बहन ! क्या तुम यहा से बाहर जाना पसन्द करोगी ?" मैंने इन्कार किया । उसने भी अनुरोध नही किया । फिर मैंने कहा, "भाई, यहा स्त्रियो पर बड़े अत्याचार हो रहे है । तुम जैसे शरीफ आदमी के होते यह सब ठीक नही है । इससे सफलता नही मिल सकती । तुम लोग भगवान् को क्यो भूल रहे हो ? मैं तुम्हारी कैद मे हूं । मुझे कुछ कहने का अधिकार नही है परन्तु मै यह कहे बिना नही रह सकती कि हिन्दुस्तान लडे या पाकिस्तान, जो अत्याचार करेगा वह गिर जायगा ।" जवाब दिया, "अब मैंने औरतो की हिफाजत का पूरा-पूरा इतिज़ाम कर दिया है ।" मै बोली, "ठीक है, मै सारा दिन बैठी रहती हू । अगर तुम मुझे इन दुखी स्त्रियो की देखभाल का काम सौंप दो तो बहुत अच्छा हो ।" इसपर उसने 'न' करते हुए कहा, "यह काम अभी तुमसे नही हो सकता ।"

उन दो के अतिरिक्त, एक तीसरा व्यक्ति भी वहा था । वह तब तो चुपचाप हमारी बातें सुनता रहा पर दूसरे दिन अकेला ही मुझसे मिलने आया । उसने बाहर से मेरे नौकर द्वारा मुझसे मिलने की इजाज़त मागी । मेरे आज्ञा देने पर वह अन्दर आया । वह लगभग पचास वर्ष का था । उसने साधारण-से कपडे पहने हुए थे, और वह 'खा' नाम से प्रसिद्ध था । वह आकर मेरे पास बैठ गया और कहने लगा, "मै डाक्टर का साथी हूं । हम सब तुम्हारी कोठी में ठहरे है । बहन, वहा मैंने एक कमरे मे हड्डियो का कुछ चूरा टीन के तख्ते के नीचे देखा है । मुझे बताया गया है कि वह तुम्हारे मालिक का है । क्या तुम उसे नदी में डलवाना चाहती हो ?" मैने कहा, "डलवाना तो चाहती हूं पर नदी पर कैसे जाऊ ?" असमर्थ हू ।" वह बोला, "अपना नौकर मेरे साथ दो, मै उस चूरे को कृष्ण-

गगा में डलवा आऊंगा ।" यह कहकर वह मेहता साहब का गुणगान करने लगा । फिर मेरी आवश्यकता की पूछताछ की । इतने में मौलवी भी वहा आ गया । उससे वह बोला, "सुनो मौलवी साहब ! यह मेरी बहन है । इसकी हर तरह हिफाज़त करना । जो इसे कुछ तकलीफ पहुची तो तुम्हारी खैर नही ।" मुझसे पूछने लगा, "क्या तुम रामायण पढ़ती हो ?" मैंने कहा, "कभी पढ़ती थी पर अब गीता और रामायण मेरे पास कहां है ।" इस पर मौलवी ने कहा, "मेरे पास गीता उर्दू में है, मै वह आपको पढने को दे दू गा ।" खा ने कहा, "हा, जरूर देना ।" उसके बाद मुझसे पूछने लगा, "कुरान शरीफ पढोगी क्या ?" मैंने उत्तर दिया, "अगर हिन्दी मे होगी तो जरूर पढूगी । परन्तु डर से नही पढूगी । एक हिन्दू की हैसियत से मेरे लिए सब मजहबी किताबें एक है । मै इसकी उतनी ही इज्जत करूगी जितनी अपनी धार्मिक पुस्तक की करती हू ।" मौलवी ने हिन्दी में छपा हुआ एक 'सिपारा' और उर्दू गीता लेकर दी । खा के कहने पर कुछ और भी किताबे उसने मुझे पढ़ने को दी जिनमे मुगलकाल की शहजादियो की कुछ दर्दनाक कहानिया भी थी । खा कुछ देर बाद ओम् को दूसरे दिन कोठी पर आने की बात कह कर चला गया ।

मै मौलवी की पत्नी से सदा अत्यन्त नम्रता से पेश आती थी । परन्तु वह मेरे साथ के तीन पुरुषो से तंग थी । मुझसे कहती थी, "हमारे यहां पर्दा होता है । मै किसीके सामने नही आती । लेकिन ये तुम्हारे आदमी यहा रह रहे है । मुझे यह अच्छा नही लगता । मैं तुम्हारी वजह से चुप हूं । तुम इन्हे रुख़सत क्यो नही कर देती ?" मै उसे समझाती, "बहन ! यह मेरे नौकर नहीं, बच्चे है । मैं इन्हे अपने से दूर करके मौत के मुह में नही भेज सकती । जायेंगे तो हम सब इकट्ठे जायेगे । हम एक दूसरे का साथ नही छोड सकते ।" वह यह सुन नाक-भौं सिकोड कर रह जाती । परन्तु जब कभी लडाका जहाज बम फेंकने आता था, तो मौलवी की स्त्री को मेरी आवश्यकता का अनुभव होने लगता था । उस समय भय से उसका हृदय

काप उठता था। वह मेरे पास आकर बैठ जाती थी और मुझे पकड लेती थी। उसका रंग पीला पड़ जाता था।

एक दिन मौलवी की लड़किया मुझसे कहने लगी, "क्या तुम्हे हमारे हाथ का खाने में परहेज है? तुम हमारा पका हुआ खाना क्यो नही खाती ?" मैंने कहा, "तुम जानती हो, मैंने एक ही वक्त सफाई से खाना खाने का व्रत रखा है। तुम लोग गोश्त वगैरा खाते हो, इसलिए मै तुम्हारे यहा नही खाती। यदि तुम मिट्टी से हाथ धोकर सफाई से खाना पकाओ, तो मै जरूर खाऊगी। मुझे तुमसे छूत नही है। लडकियो ने मेरे कहने के अनुसार एक बार मेरी बच्चियो के साथ मिलकर खाना पकाया। तब हम सबने नि सकोच वह खाना खाया।

दूसरे दिन सवेरे खा स्वय आकर ओम् को साथ ले गया और मेहता साहब के शेष फूल कृष्णगगा में डलवा आया। नदी तट पर उसने ओम् से कहा, "देखो, इनको किनारे पर नही बल्कि बीच धारा मे डालना, ताकि ये बह जाय। ऐसा करने से माताजी के दिल को तसल्ली होगी। हमे उन्हे खुश रखना है।" ओम् और शिवदयाल मुझे माताजी कहते थे। इसीसे खां मुझे कभी बहन जी, कभी माताजी कहा करता था। वह रोज आकर घटो बैठकर बातचीत करता। इसपर कइयो ने उसपर पाकिस्तानी होने का शक किया। उसकी बातो और उसके पहिरावे से लगता था कि वह कोई बड़ा आदमी है। हम उसकी बातो मे तग भी आ जाते थे, कभी-कभी उसपर शक भी होता था कि कही यह धोखा तो नही दे रहा है। मनुष्य के भीतर ही तो सब पाप होते है। पर संदेह होने पर भी मैंने अपने साथवालो से यही कहा, "चाहे कुछ हो, इसने मुझे बहन कहा है। मुझे इससे कुछ भी भय नही।" वैसे शहर मे उसकी बड़ी धाक थी।

डाक्टर भी हमारे यहा कभी-कभी आता था। श्रीमती मोदी का स्वास्थ्य वैसे तो अच्छा था, परन्तु गोली का घाव अभी नही भरा था। डाक्टर ने मल्हम-पट्टी करने के लिये एक दूसरे डाक्टर की, जो पहले काश्मीरी पडित था, ड्यूटी लगा दी थी। यह रियासती फौज का डाक्टर था और अब

मुसलमान बन गया था। वह प्रतिदिन आता और पट्टी करके चला जाता। मैंने उसे कभी मुस्कराते नही देखा। हमेशा आहे भरता रहता था, पर हमसे उसने कभी कोई विशेष बात नही कही। उसकी टोली मे लगभग १० आदमी थे और वे सब हमारी कोठी में ठहरे हुए थे। वे मेरे पास आते रहते थे। इससे मौलवी की भी उनसे जान-पहचान हो गई थी और वे लोग मस्जिद मे नमाज पढने आने लगे थे। जुमे के रोज वहा सभाये भी होने लगी थी। पाकिस्तानी लीडरो के भाषण प्राय वही हुआ करते थे।

कभी-कभी डाक्टर और खा महाज पर ऊड़ी जाते थे। उनकी कोठी के बाहर सदा पेडो के पत्तो और घास से ढकी एक लारी तैयार रहती थी। हवाई हमले मे बचने का यह अनूठा उपाय सोचा गया था।

एक दिन मै कमरे में बैठी हुई थी कि डाक्टर और उसके पाच साथी आये। उनमें एक प्रोफेसर मकबूल कुरैशी भी था, जो कुछ ही दिन पहले श्रीनगर से छुट्टी पर आया था। वह मेहता साहब का 'क्लासफेलो' रहा था और हमारे यहा भी कई बार आया था। उस दिन मेरी तबियत ठीक नहीं थी। उन्होने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मै बाहर निकलना नही चाहती थी, परन्तु वे आगन मे बैठ गये और कहने लगे, "हम तो मिलकर ही जायेगे।" मै बड़ी मुश्किल मे पड़ी। क्योकि मौलवी की स्त्री और लडकिया बाहर नही जा सकती थी। मै उन्हे अन्दर नही बुला सकती थी। इसलिये मै उनके इस प्रकार आग्रह पर क्रोध से भर उठी, शीघ्रता से बाहर आई और गर्ज कर बोली,"बताओ, तुम्हे मुझसे क्या काम है ? क्यो मुझे तंग करते हो ? जब मेरी तबियत ठीक नही, तो मै तुमसे बातचीत कैसे कर सकती हू।' मेरी क्रोधपूर्ण बात सुनकर वे बोले, "माफ करना, बहन जी ! हमतो आपकी बाते सुन कर आपसे मिलने आये है। यदि आपको कुछ तकलीफ होती हो तो हम चले जाते है।" पर वे गये नहीं। मेरी तालीम और मेरे खानदान की बाबत पूछने लगे। एक व्यक्ति मेरे लड़के सुरेश की ओर देखकर कहने लगा, "मुझे इन बच्चो पर तरस आता है। बेचारो की पढाई बरबाद हो गई। अगर आप

इसे मेरे पास पढ़ने भेजे तो मै इसे पढाऊगा।" मैने कहा, "आपकी इस हमदर्दी का शुक्रिया! लेकिन मेरी एक प्रार्थना है कि आप मुझपर, मेरी हालत पर और इन वच्चो पर तरस न खायें। मुझपर दया करने का अधिकार केवल भगवान् को है। मनुष्य तो वरवाद करना जानता है, आवाद करना नही। आज तक उसने लाखों जानवरो की जान ली है, पर जिन्दा एक को भी नही कर सका। खैर! मै वहुत कुछ कह गई हू। वुरा न मानिये।" वे उठे, कहने लगे, "माफ़ करना। जव आपकी तवियत ठीक होगी तव फिर आयेंगे।"

वाद में सुना गया कि यह टोली घर-घर मे घूमकर लडकिया देख रही थी।

: १५ :

शैतान हमदर्द के रूप में

मुझे खाने-पीने की दिक्कत से पेचिश हो गई थी। शिवदयाल जाकर पठान डाक्टर को वुला लाया। उसने आते ही मुझे अच्छी तरह देखा और शिवदयाल को साथ लेकर खुद वाजार गया और एक मुसलमान की दूकान से औषधि लेकर भेजी। वह प्राय मेरे पास आता था। वडा तअस्सुवी था। जवसे वह मुज़फ्फरावाद आया था, मुसलमानो मे यही प्रचार करता था, कि उसने हिंदुस्तान मे मुसलमानो पर वहुत जुल्म होते देखे है। और तो और वह मेरे से भी अक्सर ऐसी वाते करता था। पर मैं उसे झाड़ देती थी।

एक दिन आगन मे मै उससे वातचीत कर रही थी कि ऊपर से लडाका जहाज आगया। वह भाग कर वृक्ष की आड़ मे हो गया। मैंने हंसकर कहा, "डाक्टर साहव, आप भीतर छिप जाइये। कही आपपर ही वार न हो। जनता को आपकी वड़ी जरूरत है।" वह झेंपते हुए वृक्ष की ओट से निकल कर मेरे पास आया और कहने लगा, "नही, हम नही डरते। मै तो ऐसे ही पेड़ के नीचे हो गया था।" वाद में पता लगा कि मस्जिद मे तकरीर करते हुए

उसने कहा था, "मेहता साहब की स्त्री ने मुझसे छिपने के लिए कहा था पर उन्हें क्या मालूम कि पठान छिपनेवाले नही।"

इन दिनो काश्मीर राज्य के दो अधिकारी यहां भागकर आये थे। आशिक हुसैन और मिया नासिर। दोनो काश्मीरी मुसलमान थे। यहा आते ही पहले, को वजीर और दूसरे को कप्तान पुलिस का पद मिला। दोनो मेरे पास आये और अच्छी तरह बातचीत करने के बाद कहने लगे, "कोई तकलीफ हो तो हमें कहना। हम आपकी हर तरह से मदद करेंगे।' यह भी कहा, "हम आपके लिये स्पेशल राशन का इन्तिज़ाम कर देंगे।" मैंने कहा, "अभी मेरे पास राशन है। जब समाप्त हो जायगा तब आपने लेना ही पड़ेगा।"

इस अर्से मे रहमदाद खां तबदील होकर कही और चला गया था। इधर मौलवी को भी नौकरी मिल गई। उसे कण्ट्रोलर का पद मिला। मुझसे मिलने के लिये काफी लोग आने लगे थे। मैं बहुत तग आ जाती थी, पर कुछ कर नही सकती थी। एक दिन एक सत्तर वर्षीय पठान आया। देखने में भला आदमी लगता था। कहने लगा, "मैं आपसे अकेले में कुछ बातें करना चाहता हू फिर कभी आऊंगा।" फिर बोला, "हमसे कोई पूछता है, कैसे आये हो? तो हम कहते है, ऐसे ही देखने-सुनने के लिये। अपने पास से खाते है। किसी की चीज को छूते नही।" खुद ही यह भी सुनाने लगा, "मैं बहुत साल हिंदुस्तान में रहा हूं। आनन्द भवन भी जाता था। वहा अक्सर हमें हिंदू-मुसलमानो को इकट्ठे मिठाई मिलती थी। देखो, आज यह क्या हो रहा है?" मैंने कहा "यह सब हमारी मूर्खता है। बदले की आग मे जलते हुए हम शांति खो बैठे। मनुष्य पशु बन गया है।" वह फिर मुझे कहने लगा, "तुम सबके सामने क्यो आ जाती हो। यह अच्छा नही। अपने बच्चो का ध्यान तुम्हें रखना चाहिये।' मैंने सदा की भाति जवाब दिया, "मुझे भगवान् के सिवा किसीका डर नही है। मौत का तो हम खुशी-खुशी स्वागत करते है।" यह सुनकर वह शान्त हो गया और फिर आने को कह कर चला गया।

एक वार आजाद काश्मीर सरकार का शासक सरदार इब्राहीम वहा आया। मस्जिद में उसका भाषण हुआ। वह मेरे पास भी आया। उसके साथ खां और एक जम्मू का वकील, दुर्रानी था। यह वकील मुझे अच्छी तरह जानता था। उसकी वहन मेरी घनिष्ठ सहेली थी। सरदार भी मेहता साहव को जानता था। जिस समय वे पुंछ मे गवर्नर थे तो सरदार वहा वकालत करता था। मुझसे वह वड़ी शिष्टता से पेश आया। उसे देखकर यह अदाजा लगाना कठिन था कि इसी के इशारे पर इतने अत्याचार हुए है। कहने लगा, "जो कुछ आपपर आज तक गुजरी है उसके लिये मैं आपसे माफी मांगता हू। मेहता साहव की मौत का मुझे अफसोस है।" मैंने कहा, "सरदार साहव, मुझसे किस वात की माफी मागते है? माफी भगवान् से मांगिये और सरदार साहिव! क्या स्त्रियो, और वच्चो पर जुल्म करके कोई सफल हुआ है? आप तो पढे-लिखे है। क्या कही इतिहास मे आपने पढा है कि अत्याचार करनेवाली जातिया सदा विजयी रही है? याद रखिये, ईश्वर के हाथ मे न्याय की तुला है। जिस ओर अत्याचार अधिक होगा, वह पक्ष अवश्य ही गिर जायेगा। वह चाहे हिंदुस्तान हो या पाकिस्तान।" वह वोला, "नही, हम ऐसा नही करते। अगर हम ऐसा करें तो हममे और सिखों मे फरक ही क्या रहा?" मैंने पूछा, "फिर यह सव किसने किया? क्या आप प्रधान नही है?" खां वीच मे वात काटकर वोला, "हम काश्मीर को कभी नही छोडेंगे।" उन दोनो की आपस मे कुछ वातों पर वहस-सी हुई, जिसे मै न समझ सकी। उसके वाद सरदार ने कहा, "मै चाहता हू कि अगर ये स्त्रिया हिन्दुस्तान जाना चाहे, तो इन्हे जल्दी भेज दूं।" मैंने झट उत्तर दिया, "सव जाना चाहेगी। आप कहे तो मै सवकी दरख्वास्त लेकर भेजू।" वह वोला, "ऐसे थोड़े ही होता है। मै लाहौर जाकर रेडियो पर कह दूंगा। वाद में आपको भेजा जायेगा। अभी अगर आपको किसी चीज की जरुरत हो तो वताइये?" श्रीमती मोदी से भी पूछा। मैंने कहा, "मुझे इज्जत की मौत चाहिये और कोई आवश्यकता नही। मुझे अव जीना दूभर हो गया है।" वह कहने लगा, "मैंने तो आप की हिम्मत की वहुत

तारीफ सुनी है। यह आप क्या कह रही है ? अब डरने की जरूरत नही है"। मैंने जवाब दिया, "कठोर-से-कठोर इन्कलाब मे भी मैं नही डरती पर यह ऐसे कब तक चलेगा। मुफ्त का खाना-पीना हमें अच्छा नही लगता।" इसपर सरदार मुझसे कुछ न कहकर मौलवी से कहने लगा, "आपने इन्हे रखकर बडी अच्छी बात की है।" फिर मुझसे बोला, "आपको किस-किस चीज की जरूरत है, बोलिये ?" मेरे उत्तर देने से पूर्व खान बोला, "इनके पास है ही क्या ? बच्चों को देखिये, फटे कपडे पहने हैं। खाने को आटे के सिवाय कुछ नही। कपडे धोने को साबुन नही। फिर भी यह आपसे कुछ नही मांगेगी।" सरदार कहने लगा, "मैं सब ठीक करा दूगा। आपको किसी बात की फिकर नही करनी चाहिये।" यह कहकर वे सब चले गये।

कुछ दिन बाद सरदार ने चार जोड़े कपड़े भिजवाये, जिनमे कुछ पुराने भी थे। बाद में सुना कि लानेवाले ने वे रास्ते में बदल दिये थे। कुछ साबुन भी भेजा था और वजीर को राशनादि की भी हिदायत दे गया था। मैंने कपडे रख लिये।

एक दिन जंगलात का एक भूतपूर्व रेंजर मेरे पास आया। वह पहले काश्मीर राज्य का मुलाजिम था। आजकल स्वतन्त्र रूप से काम करता था। शायद स्यालकोट का रहनेवाला था। मुझसे कहने लगा, "आपके पति जब काश्मीर में थे तब मै आपके घर आता-जाता था। चूकि आपके पति मेरे दोस्त के दोस्त थे उस नाते मै आपकी कुछ मदद करना चाहता हू। मेरा ख़याल है कि आप अब यहा न रहें। मै आपको रावलपिंडी पहुंचा दूंगा और वहा से जम्मू जाने का इन्तिजाम हो सकता है। और लोग भी चलना चाहें तो कोई हर्ज नही। यहा गल्ला लेकर दस लारिया आई है और अब खाली जा रही है।" मैंने कहा, "मैं सोच कर उत्तर दूगी।" उसने कहा, "अच्छा। मै हस्पताल के क्वार्टर में ठहरा हुआ हू। वही पता भेजना।" वह चला गया। हम लोगो ने इस बारे में सलाह की और न जाने का निश्चय किया।

यह अच्छा ही हुआ, नहीं तो जैसा कि बाद में पता लगा उन्होंने हमे खत्म करने का विचार कर लिया था।

मौलवी के घर रहते हुए अब मुझे दो महीने बीत चुके थे। वे लोग तंग आ गये थे पर खान और अफसरो के डर के मारे कुछ कह नही सकते थे। चमनलाल से, जो हमारे यहा आया करता था, मौलवी को बड़ी चिढ थी। कहता था, "यह काग्रेसी है और बड़ा चालाक है।" चमन हमे फौज के आगे बढ़ने के समाचार सुनाया करता था।

एक दिन डाक्टर अपने साथ एक पठान को ले आया। वह लगभग पैंतालीस साल का था। उसका कद लम्बा और वस्त्र साधारण थे। डाक्टर ने कहा, "यह जौहरी है। बम्बई मे इनकी दूकान है। यह पंडित नेहरू के भी मित्र है। आपकी बड़ी सहायता कर सकते है।" मेरे पास उस समय श्रीमती मौदी, तीन साथी और बड़ा लड़का सुरेश था। वह सुरेश की ओर सकेत करके कहने लगा, "यह आपका लड़का है? क्या आप इसे मुझे देंगी? मैने शादी नही की है। मेरा कोई बच्चा नही है।" मै बोली, "मेरी दुनिया अब इतनी ही है। क्या अब इसे भी तुम माग रहे हो ?" डाक्टर ने रोककर कहा, "नही, योंही कह रहे है।" उसने फिर मुझसे मेरा नाम पूछा और मेरे बताने पर कहा, "मै तुम्हारी किस्मत देखना चाहता हू।" मै बोली, "क्या देखेंगे आप? मुझे तो सब कुछ नजर आ रहा है।" डाक्टर कहने लगा, "बड़े ज्योतिषी है।" ज्योतिषी साहब ने कुछ सोचने का नाट्य करते हुए कहा, "तुम्हारे सुख के दिन खत्म हो चुके है।" मैने कहा, "यह तो सबको नजर आ रहा है।' वह बोला, "पर तुम चाहो तो अब भी अपनी जिन्दगी को सुखी बना सकती हो। तुममें एक बुरी आदत है, उसे छोड़ दो। तुम किसीका यकीन नही करती। अगर तुम्हे कोई अच्छा दोस्त मिले तो उसकी बात मान लो। तभी तुम्हारे दिन फिरेगे नहीं तो तुमपर बहुत मुसीबतें आयेगी। तुम्हारे बच्चे धूल मे मिल जायेंगे। तुम अन्धी हो जाओगी।" मैने उत्तर दिया, "अगर सत्य पर दृढ़ रहते हुए उस भगवान् की याद मे मेरी आखे जाती रहती है तो खुशी से मै उसे सहन करूंगी।" इसपर उसने कहा,

"एक बात मैं आपसे और कहना चाहता हूं पर सबके सामने नहीं।" मैं बोली, "आप अकेले में कह सकते हैं।" उसी आंगन में थोड़ी दूर पर एक तख्त था। मैंने वहीं चलने को कहा। भगवान् का नाम लेकर और अपने स्वर्गस्थ पति का स्मरण कर मैं उठ खड़ी हुई। श्रीमती मोदी ने मुझे रोका, "कृष्णा, क्या कर रही हो? मत जाओ।" मेरे तीनों साथियों का भी रंग उड़ गया। मैंने उन्हें दिलासा देकर कहा, "भय की कोई बात नहीं है। मुझे इसकी बात सुननी होगी।"

वहां उसने मुझसे कहा, "मेरा भाजा हिन्दुस्तान में फंसा हुआ है। मैं चाहता हू कि तुम मेरे साथ चलो ताकि मैं तुम्हारे बदले में उसे प्राप्त कर सकू।" और भी एक आध निस्सार बात उसने कही। मै उसकी नब्ज तो पहले ही पहचान गई थी फिर भी विनय से बोली, "सुनो, तुम मुझे अपना पता दे जाओ। मै वायदा करती हू कि जब मैं हिन्दुस्तान जाऊंगी तो तुम्हारे बच्चे को खोजकर अवश्य भिजवा दूंगी।" वह अपनी ही हांकता गया, "देखिए, मै आपको पंडितजी के पास लेजाऊंगा।" मैंने कहा, "मै हिन्दुस्तान जाऊंगी तो खुद पंडितजी से मिलूंगी। आपके लड़के के लिये जरूर यत्न करूंगी। पर अब तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी। मैं यहा इसी हाल में खुश हू।" यह सुनकर उसके होश ठिकाने आये, और जल्दी से अपना पता देकर चलने को उठा। जाते-जाते पहले तो उसने नरमी से कहा, "कोई तकलीफ हो, तो मुझे खत लिखना।" फिर एकदम भाव बदलकर धमकी भरे स्वर में कहने लगा, "तुमने मेरे मन को दुखाया है। आज पठान का राज है। कल देखी जायगी।" मैंने कहा, "जिसका मुझे भरोसा है, हर हाल में वही मुझे बचायेगा। वह तुमसे कहीं बड़ा है।" यह सुन उसकी आखें लाल हो गई। वह चाहता तो बांह पकड़ कर बलात् मुझे ले जा सकता था। बातें बनाने की उसे क्या जरूरत थी। परन्तु क्या मेरे सर्वशक्तिमान ने कष्ट के समय द्रौपदी के चीर नहीं बढ़ाये थे?

बात खत्म हुई। साथ का डाक्टर जिसे मैं आज तक शरीफ समझती रही थी, बोला, "हमें अब इजाजत दीजिए।" नकली ज्योतिषी भी बोला,

"हम शीरा, मे जाता हूं।" जाते हुए उसने मेरा हाथ अपने हाथ मे ले कर अपने माथे से लगाया। मेरी समझ मे यह पहेली न आ सकी दूसरे दिन खान आया। कहने लगा, "वहन, मै तुम्हे हुक्म देता हूं कि तुम अव किसी गैर के सामने न आना। वायदा करो कि नही आओगी।" मैने कहा, "मुझे स्वीकार है। आगे ऐसा ही होगा।" खान चला गया। घंटे भर वाद ही तीन कवाइली आये। मै अन्दर थी। शिवदयाल और ओम् से जो, वाहर थे, पूछने लगे, "वह कहा है?" ओम् ने कहा, "अन्दर है।" उन्होने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मैने ओम् से उन्हे इनकार कहला भेजा। वे कहने लगे, "तो फिर हम अन्दर आयेगे।" मैने कहला भेजा, "घर मेरा नही है। जिनका है उनसे आज्ञा ले लो।" वे वोले, "चाहे कुछ हो तुम्हें आना ही पड़ेगा।" एक घटे तक यही वहस चली। आखिर वे निराश होकर लौट गये।

: १६ :

नरक या स्वर्ग

अव फौज प्रतिदिन हमारी कोठी मे आती, पर्वत के दामन मे ठहरती और रात को महाज़ पर चली जाती। एक वार रात के दस वजे हम अपनी दु:ख-वीती पर मिल-जुल कर वाते कर रहे थे कि मौलवी की दोनो लड़कियां मेरी लड़कियो से कहने लगी, "आओ, वाहर गाना सुने।" वे चली गईं। मेरी वुद्धि इस समय जैसे घास चरने गई हुई थी, मैने पूछा तक नही कि गाना कहां है? वात यह थी कि कोठी में तीन सौ के लगभग सिपाही उतरे हुए थे। वे ऊड़ी महाज़ पर जा रहे थे। रात को खा-पी कर वे ही लोग गा रहे थे।

कुछ देर तो सव लड़कियां दीवार की आड मे खड़ी होकर गाना सुनती रही, फिर पास के खेत मे लघु-शका को चली गईं। अभी वैठी ही थी कि जिस ओर वीणा थी, उसी ओर से पठान आ निकले। वे इन्हें घेरे में लेना ही चाहते थे कि वीणा ने कहा, "वह देखो! पठान आ गये।" वे सभी आंख झपकी में घर आ गईं। मौलवी की छोटी लड़कियां भी आ

गईं, पर बड़ी को एक पठान ने बाजू से पकड़ लिया। यह लड़की सबसे पहले भाग सकती थी क्योंकि वह घर के सबसे अधिक समीप थी, पर न जाने क्यो वह सहम-सी गई थी। वह चिल्लाई। उनसे कहने लगी, "मैं मुसलमान की लडकी हूं, छोड़ो।" फिर कलमा भी पढा। पर वे न माने। कहने लगे, "तुम काफिर की लड़की हो।" इतने मे उसका भाई आया, पास ही चचा रहता था वह भी आ पहुंचा। उनके कहने पर भी वे न माने। तब उसका भाई मस्जिद मे से बाप को बुला लाया। मौलवी ने कहा, "यह मेरी लड़की है।" तब कही उस बेचारी को छुट्टी मिली। वह लड़की अन्दर आई तो उसकी मा सिर पीटने और रोने लगी। रोते-रोते वह पति को गालियां सुना रही थी और कह रही थी, "तूने हिन्दुओ को अपने घर में रखा है तभी मेरी लडकी पर मुसीबत आई है।" मै भी सोच रही थी। हमारे ही कारण इसे यह कष्ट सहन करना पड़ा है। अगर कही यह अपहृत हो जाती, तो क्या होता ? मुझे तो वह भी अपनी लड़की के समान लगती थी। मैंने उससे कहा, "सच है बहन! हमारी वजह से ही तुम्हें यह सब कष्ट उठाने पड़ रहे है। कोई और जगह मिलने पर हम एक-दो दिन में यहा से चले जायेंगे। भगवान् को धन्यवाद दो जिसने इस समय तुम्हारी लडकी को बचाया।"

दूसरे दिन सवेरे ही मैंने खान को बुला कर कहा, "मै और कोई मकान लेना चाहती हूं।" वजीर से भी कहा, परन्तु कोई भी दिल से मेरा यहा से कही और जाना नही चाहता था। पर मै थी कि एक मिनट भी वहा रहना नही चाहती थी। उधर मौलवी भी अब डाक्टर के पास घंटों बैठा रहता था। मुझे शक होने लगा कि कही हमारे साथ यहा कोई धोखा न किया जाय। इसी बीच में एक दिन प्रो० मकबूल वहां आया। वह अब वहां का कोई अफसर बन गया था। मुझसे कहने लगा, "श्रीमती मेहता! तुम कितनी खुश-किस्मत हो कि तुम्हारे पास हमारा प्रेजीडेंट (इब्राहीम) चलकर आया।" मैंने पूछा, "इसमे खुश-किस्मती की कौनसी बात है?" वह बोला, "अपना मुकाबला तुम उन मुसलमान बहनो से करो,

जिनके नंगे जलूस हिन्दुस्तान में निकाले गये थे। क्या किसी ने यहां तुम्हारा जलूस निकाला ?" मैंने कहा, "प्रोफेसर साहब! मुझे उन बहनों के हाल पर दुःख है। अगर मेरे जलूस निकालने से उन बहनो का कष्ट दूर हो सकता है, तो मैं तैयार हू। मैंने अपने आपको मिट्टी समझ लिया है। इन बातों का मुझे डर नही है।" वह एकदम बोला, "आपने बुरा माना। मैंने योंही बात की थी। क्या हम आपकी उस दिन की नेकी भूल सकते है, जब आप अपनी लडकियोंके साथ हमे बचाने को तैयार होगई थी। वह रात कितनी खौफनाक थी। मै भी यहां से चला गया था और अपनी मां को तुम्हारे हवाले कर गया था।" मैंने कहा, "वह तो मेरा कर्तव्य था। जो कुछ मैं कर सकती, वह मुझे करना ही था। मैं बदला नही मागती। आप लेना चाहे तो मै तैयार हूं।" "मुझे माफ करे। मैंने तो मामूली-सी बात कही थी," वह नम्रता से बोला।

एक दिन मौलवी ने आकर कहा, "मैं आपके रहने का इन्तिजाम रावलपिंडी मे कर रहा हू। जब तक हालात ठीक नही होंगे, आप वहां आराम से रह सकेंगी। मैंने कहा, "मैं और कही नही जाऊंगी। हा, मैंने इस मकान से दूसरी जगह जाने का प्रबन्ध कर लिया है। मै चमनलाल के घर जाकर रहूंगी।" यह सुनकर उसका मुह फूल गया।

खान ने कह रखा था कि जब मकान बदलो, तो मुझे साथ ले लेना। बदमाश फिरते हैं, कही तग न करें। पर मैंने उसे भी नही बुलाया। सायंकाल के समय कुछ-कुछ अधेरा होने पर सबसे पहले मैंने लडकियों को चमन के घर भेज दिया। उसके पश्चात् हम सब वहां गये। उसने एक अच्छा साफ-सुथरा कमरा हमें दिया। उसका मकान दगे में जलाया नही गया था। केवल लूटा गया था। इन्होंने इस मकान मे कई लड़किया छिपा रखी थी। उसमें कई तहखाने थे। दिन मे वे लड़किया वही घास में दुबकी पड़ी रहती थी। उस छोटे-से मकान मे लगभग सात डेरे लगे हुए थे। हालत सबकी शोचनीय थी। टूटे बर्तन, एक आध रजाई और कुछ बोरियां, जिन्हे जोड-सी कर उन्होंने बिछौना-सा बना लिया था, उस डेरे की बची-खुची सम्पत्ति थी। चमनलाल का परिवार सात व्यक्तियो का था। मा-बाप, एक विवाहित बहन,

उसका पति और एक बच्चा और एक १७ वर्षीय कुमारी बहन। इसके अलावा मित्रो के स्त्री-बच्चे भी थे।

यहा आकर मैंने किसी को धन के लिये और किसी को जन के लिये रोते पाया। मकान शहर के बीच में था इसलिये कबाइलियो का डर भी बराबर बना रहता था। वे निर्दयी अनियमित रूप से आते, जो मिलता उसे लूट कर ले जाते। चमनलाल का बाप नानकचन्द अर्जीनवीस कभी अच्छा धनी था, पर अब मुसीबत का मारा बेचारा दाने-दाने को तरसता था। हा, रसूख अच्छा होने के कारण स्थानीय मुसलमान कभी-कभी थोड़ी बहुत सहायता कर देते थे। वास्तव में वह जीवन नही, मरण की प्रतीक्षा भर थी। कई डेरे एक साथ होने के कारण एक दूसरे को ढाढ़स रहता था। टट्टी भीतर नहीं बनी थी, इसलिये सबको बाहर जाना पड़ता था। कबाइलियों के डर से बहुत सवेरे जाते थे। उस समय जले मकानों के खंडहरो से भी डर लगता था।

ये दिसम्बर के दिन थे। ठिठराने वाली सर्दी पड़ रही थी पर हमारे पास न पहनने को कपड़े थे न तापने को आग। जले हुए घरो से तख्ते ला-लाकर किसी तरह चाय आदि पकाते थे। मौलवी के घर पर अपनी कोठी के जगले के तख्ते ला-लाकर हम जलाते थे, बल्कि उसी की राख से मैं कपड़े भी धो लेती थी किंतु यहां न तो लकड़ी ही थी और न राख। परिणाम-स्वरूप लोगो के कपडो मे जुएं पड़ गयी थी। कई मनुष्यों के शरीर पर जुएं इस तरह रेंगती थी गोया चीटिया अपने भटों से निकल कर मार्च कर रही हों। मेरे दोनो लड़को के सारे बदन पर भी फुन्सियां निकल आयी। अमीर घरानों के बच्चे छाबड़ी-फरोश बनकर दो तीन आने रोज कमा लेते थे। मुसलमान तो कोई उनसे खरीदता नहीं था। हा, एक आध आता-जाता हिंदू खरीदे तो खरीदे। बस। आसपास के बचे हुए मकानो मे सब शरणार्थी ही थे। वे बोरियो और चीथडो से अपने तन को ढके रखते थे। कुछ समय पश्चात् पाकिस्तानियो ने राशन की कुछ व्यवस्था की। कई मुसलमानो की जबानो

यह भी सुनने मे आया कि अव हिन्दू हमारे शरीक है, उन्हे सताया न जाय। पर ये सव कहने की वाते थी ।

हमारे मकान के पास एक गुरुद्वारा था। वहा अनेक विधवाए रहती थी जिनमें से कवाइली और सिपाही चुन-चुन कर अच्छी स्त्रियो को ले जाते थे। वजीर ने इनकी हिफाजत के लिये यद्यपि कई पहरेदार नियुक्त कर रखे थे किंतु इस अन्धेर नगरी में उनकी कौन परवाह करता था? हैरानी यह थी कि नियमित शासन-व्यवस्था कायम होने पर भी यह गुंडा-गर्दी वरावर चलती रही ।

हमे यहां आये दो दिन बीते थे कि खान आया। वोला, "मैने तुम्हे वहन समझा था, परन्तु तुम्हे मुझपर भी शक है, जो तुम यहा चोरी-चोरी चली आई। इतना भेद ? फिर भी मै तुम्हे वहन कह चुका हूं इसीलिये इज्जत करता हूं । जव तक मै यहा हूं जान देकर भी तुम्हे वचाऊगा ।" मैने अपराधी के रूप मे कहा, "भाई, तुम ठीक कहते हो। मैं अपनी गलती मानती हैं ।" इतना कह कर मैने चाकू की नोक से अपनी अगुली मे से खून निकाला और उसके माथे पर तिलक लगाया। फिर सूत लेकर उसके हाथ में राखी वाधी और तव उसने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "सुनो वहन, मेरे कवीले मे दो सौ आदमी है। कोई तुम्हे वहन कहेगा, कोई फूफी और कोई मासी। जहा तक होगा, तुम्हे वचायेगे। तुम्हारी हिफाजत हमारी हिफाजत होगी। तुम्हे अव अपना वोझ मुझपर छोड़ देना चाहिए। क्या तुम वता सकती हो कि तुम्हारा माल किसने लूटा है ? मै वह सव ला दूगा।"

"मुझे मालूम है कि मेरा सामान किस किस ने लूटा है। पर मैंने अपनी चीजें वापिस न लेने की प्रतिज्ञा की है। मै फटे हाल गुजरा करूगी परन्तु चीजें नही लूगी। जव मै अपने हीरे (पति) को वापिस न पा सकी, तव इन काच के टुकड़ों को वापिस लेकर क्या करूंगी।" यह कहते-कहते मैंने उसे शुरू से आपवीती सुनानी आरम्भ करदी । जव मै किसी को कान के जेवर देने की वात सुना रही थी तव वह वोला, "वताओ,

वह किसे दिया था ?" मैंने कहा, "मैं नही वता सकती ।" उसने हाथ की छड़ी से छुरा खीचकर कहा, "देखो, मेरे पास यह है । पठान किसी को मारना गुनाह नही समझता । तुम्हें वताना होगा ।" मैंने गरदन सामने झुकादी । उसने छुरा फिर गुप्ती में डाल दिया और कहा, "मत वताओ । मैं समझ लूगा ।" नीचे जाकर उसने नानकचन्द से कहा, "तुमने मेरी वहन को यहां पनाह दी है और तुम्हारे लड़कों ने जेल में उसकी जान वचाई है। मैं वायदा करता हू कि तुम्हे कोई नुकसान नही पहुचेगा । यहा पर अभी वहुत कुछ होगा । हा, तुम वताओ तुम्हारे पास सुना है पिस्तौल है । वह निकाल कर मुझे दे दो और कुछ गहने भी है वे भी दे दो ।" उसने उत्तर दिया, "खान, हमारे पास कुछ नही है । सव कुछ लूट लिया गया है । हम तो दर-दर भटक कर दस दिन वाद इस खाली मकान मे आये है । तुम चाहो तो तलाशी ले सकते हो ।" उसने कहा, "मौलवी तुम्हारे लड़के को काग्रेसी होने की शिकायत करता है । परन्तु मै अव समझ गया हू ।" यह कहकर वह चला गया और जवतक वह वहा रहा वरावर हर प्रकार से हमारी सहायता करता रहा ।

: १७ :

कुछ और घटनाएं

तीनो लड़कियो के लिए तो कपड़े मिल गये थे पर वाकी वच्चो के पास कुछ नही था । उनको नंगा देख कर मैंने जीन के उस टुकडे के कपड़े सिलाने का निश्चय किया जो मेरे पति ने वुशर्ट सिलवाने के लिये दर्जी को दिया था । और जिसे मैंने उससे लेकर दान देने को रखा हुआ था । खान ने एक दरजी को वुला भेजा । वह दोनो लडको की सिलवारें काटने लगा । उन दिनों पठानो के भय से हर कोई वहां सिलवार पहनता था । मैंने दरजी को रोक कर कहा, "मैं नकली मुसलमान नही वनूगी और न वच्चो को वनने दूगी । तुम हिन्दू ढंग के पाजामे वनाओ ।" उसने ऐसा ही किया । उन कपडो की सिलाई खान ने अपने पास से दी ।

एक दिन खान ने मुझे उदास देख कर पूछा, "क्या तुम्हें अपने मालिक की याद आती है, वड़ी सरकार ?" वह कभी-कभी मुझे वड़ी सरकार कह-कर पुकारता था और जव वाहर से आता तो कहता "वड़ी सरकार ! आदाव अर्ज।" मैंने कहा,"हा, कभी-कभी यह ध्यान आता है कि निशानी के तौर पर उनका एक कपड़ा तक मेरे पास नही रहा ।" यह सुनकर वह चला गया और थोड़ी देर के वाद धोवी से मेरे पति की एक पुरानी कमीज ले आया। मैंने गद्‌गद् होकर उसको धन्यवाद दिया और कहा,"अव मै इसे सभाल कर रखूगी। जव ये लड़के अपने वाप के वरावर होंगे तव इसे इन्हे पहनाकर कहूंगी कि अपने पिता के वलिदान को याद रखते हुए तुम सदा सच्चाई के रास्ते पर चलने की कोशिश करते रहना।"

एक दिन खान मेरे कान का जेवर ले आया। न जाने उसने कैसे उसका पता लगा लिया था। आते ही उसने चमन की मा को मेरे कमरे में वुलाकर कहा,"तुम मेरी वहन को समझाओ कि वह इसे वापिस ले ले। मैंने उसे वहन कहा है। मै उसकी चीज़ दूसरे के पास नही देख सकता।" मुझे उसकी भावना अच्छी तो लगी पर मै उसकी वात कैसे मान सकती थी। मैंने दृढ़ स्वर मे जवाव दिया, "हम इस समय दाने-दाने को मोहताज है पर मै धन के लालच में अपने वचन को झूठा नही कर सकती। अगर तुम मुझे वहन समझते हो, तो यह उसीको वापिस दे दो जिससे लाये हो और वायदा करो कि उसे कुछ कष्ट नही पहुचाओगे।" मैंने देखा कि खान को क्रोध आ रहा था पर उसने नम्र होकर यही कहा, "वायदा करता हू, वहन कि इसे मै अभी उसे वापिस कर दूगा।"

इन्ही दिनो किसीने एक दिन श्रीमती मोदी से कहा कि तुम्हारे पति की लाश एक नाले में पड़ी है। हमारे तीनो साथी और चमन उसकी तलाश मे निकले। वहुत ढूढने पर वह सचमुच एक नाले मे पाई गई। तव मैंने श्रीमती मोदी से कहा,"हमे उसके दाह-सस्कार का प्रवध करना चाहिये। मै वजीर को लकडी के लिये लिखती हूं। देखू तो वह कितने पानी में है और उसकी क्या नियत है।" सव लोगो ने मुझसे कहा, "ऐसा मत करो। कही कोई विपत्ति

न आ जाय ? भला पाकिस्तान में दाह-सस्कार कौन करने देगा?" मैंने जवाब दिया,"चाहे हम दाह-सस्कार करे या न करें परंतु मैं वजीर की नियत जानना चाहती हूं ।" मैंने वजीर को लिखा और उसने पाच मन लकडी के लिए मन्जूरी दे दी । परन्तु मन्जूरी लेने के वाद भी किसी में दाह-संस्कार करने की हिम्मत न थी । मैं, श्रीमती मोदी, चमन की माता, तीनों साथी तथा चमनलाल उस जगह गये जहां पर लाश पड़ी थी । पास ही गगा वह रही थी। चारो पुरुप लाश को उठाकर हमारे पास ले आये । उसे एक टीन के तख्ते पर रखने देखकर श्रीमती मोदी विलख-विलख कर विलाप करने लगी। यद्यपि हत्या को हुए दो माह वीत चुके थे पर लाश विलकुल ताजा मालूम पड़ रही थी। उसमें से न तो किसी प्रकार की दुर्गन्ध आ रही थी न तन पर का गोश्त कही से सडा-गला था। पैंट उसी तरह लगी हुई थी, कमीज़ और कोट उसी तरह पहना हुआ था। कही कोई अन्तर नही था। केवल एक ओर एक घाव था। चेहरे पर अपूर्व शाति थी।

अव सवाल था कफन का । श्रीमती मोदी ने एक धोती निकाली जो उन्होने धोवी के यहा से मगाकर अपने पति की निशानी के तौर पर रखी थी । उन्होने उसके दो टुकड़े किये । एक टुकड़े को लाश के ऊपर डाल दिया, दूसरा अपने पास रखा। फिर हमने लाश को जल मे प्रवाहित कर दिया। वाद में श्री मोदी की मृत्यु का वृत्तान्त इस तरह सुना गया कि जव हमला करने वाले उनकी कोठी के पास पहुचे तो वह, उनकी स्त्री, दो नौकर और कमला घर से शहर की ओर चल दिये किन्तु उनका लड़का घर में ही रह गया। उसकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। वह कही छत पर चढ कर दुश्मनो पर वन्दूक से वार कर रहा था। इनकी कोठी शहर से नीची थी। उसमें कुछ दूर जीना चढ कर शहर मे जाना पडता था। जीना चढ़ते समय केवल एक नौकर को छोड वाकी सवको गोली लगी । जैसे-तैसे वह लोग शहर के एक नामी आदमी के घर पहुंचे । वह हिन्दू था । उसका मकान काफी वडा था और वहां पर सैकडो परिवार खतरे से वचने के लिये आये हुए थे । वहा पहुचकर श्री मोदी ने सवको विठाया और स्वय हाथ मे वदूक लेकर चल पडे । मुज़-

फरावाद में माकड़ी नामक एक जगह है जहां पर उनका एक मुसलमान दुश्मन रहता था। उसका सडक वनाने का कोई विल उन्होने पास नही किया था। मौत उन्हे धकेल कर वही ले गई। जव उन लोगो ने इन्हे देखा तो कत्ल कर दिया और लाश को दफना दिया। फिर कुछ दिनो वाद लाश को निकाल कर नाले में फेंक दिया।

श्रीमती मोदी तथा उनके साथी उस मकान मे दो-तीन दिन रहे। सुना गया कि उस मकान में से कुछ लोगो ने हमला करनेवालो का मुकावला भी किया था परन्तु अन्त में सव पकड़े गये। कहते है कि वहा पर किसीको पानी तक न मिला, विवश होकर स्त्रियो ने वच्चो को मूत्र पिलाया।

इन दिनो पाकिस्तानी एक और चाल चल रहे थे। उन्होने सव सरकारी दफ्तरों और जमीनों तथा हिन्दुओं की सव जमीनो और वागो को नीलाम करना शुरू कर दिया। जो कुछ हिन्दू किसी तरह वचे हुए थे, वे अपने सामने ही अपनी जमीनो और वागो को नीलाम होते देख रहे थे। पर वोल नही सकते थे। मैंने कई मुसलमान भाइयो से कहा, "तुम अभी इन्हें मत खरीदो।" परन्तु उन्होंने मेरी वात न मानी। इस चाल से पाकिस्तान को काफी रुपया मिला।

इन सव विपदाओ के वीच मुझे विमल की एक वात कभी नही भूल सकती। वह हर समय फौजी वातें पूछता रहता था। उसने अपनी उम्रवाले लड़को की एक वाल-सेना भी वना ली थी। एक तीर-कमान अपने गले मे डाल कर वह दिन भर उन्हे कुछ सिखाता रहता था। जव कभी वह सुनता कि कवाइलियो का झुड गली से निकल रहा है तो झट खिड़की से झाकने लगता। उसने कभी छिपने का नाम नही लिया। अपने साथियो से अक्सर कहता, "छिपना मत,नही तो तुम्हारा नाम कायरो में लिख दूगा।" एक दिन हमारे तीनो साथियो ने उससे यह शर्त लगाई कि अगर तुम इतने गिलास पानी पियो और इतनी रोटियां खाओ तो तुम पठानो को जीत सकते हो। उस लड़के ने कई गिलास पानी पिया और कई मोटी-मोटी रोटियां खाई जो एक सात साल का वच्चा चार वार में भी नही खा सकता।

सारा दिन उसे इस प्रकार दौड़-धूप करते देखकर मुझे उसपर बड़ा तरस आता था। परन्तु न जाने उसके इस फौजी खेल मे कितनी भावी आशाएं छिपी हुई थी।

एक दिन रेंजर साहब बदूक उठाये और गले मे कारतूसो की माला पहने फिर आ पहुचे। आते ही मुझसे कहने लगे, "मुझे तुम्हारी यह हालत देखकर तरस आता है। तुम कितनी तकलीफ उठा रही हो? मै तुम्हारे साथ कुछ नेकी करना चाहता हूं क्योकि मेरा एक दोस्त तुम्हारे पति का दोस्त था। क्या तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो? तुम चलो, अपने बच्चो को तथा कोई और जवान लड़कियां हो तो उन्हे भी ले चलो ताकि वह सब इस मुसीबत से छूट जायं। तुम्हें किसी से डरने की जरूरत नही है। देखो मेरे पास २०० कारतूस हैं और १५० रु० भी है।" वह नही जानता था कि उसकी बातो से मैने क्या कुछ समझ लिया है। मैने उसके चेहरे पर एक गहरी नज़र डाली। उसने सिर नीचा कर लिया। मैने कहा, "मै मजबूर हूं। मै आज आपके साथ नही जा सकती। क्योकि आज रात ही मैने एक स्वप्न देखा है। कहीं से आकर किसी फकीर मर्द ने मुझसे कहा कि तीन दिन तक यहा से बाहर मत जाना। मै तो इन बातों पर विश्वास करती हू। इसलिए मैं तीन दिन तक तो कही नही जा सकती। हा, शायद उसके बाद आपके साथ चल सकू।" यह कहकर मैने उसके शैतानी चेहरे पर फिर एक नज़र डाली। इस बार भी वह मेरी नज़र से नजर नही मिला सका। गर्दन नीची किए हुए ही उसने कहा, "शायद आप मुझपर भरोसा नही करती। मै जो कहता हू वह आपके भले के लिए कह रहा हू। चाहे कुछ भी हो मै रात को लारी लाऊंगा और आपको चलना होगा।" मैने कहा "मै आपकी हमदर्दी के लिये आपको धन्यवाद देती हूं परन्तु मैं जा नही सकती।" वह कहने लगा, "आप वहम की इन बातों पर क्यो भरोसा करती है? मै रात को लारी लाऊंगा।" मैने कुछ उत्तर नही दिया। देती भी क्या? वहां तो इनका राज्य था। वह चाहता तो बलात् मुझे पकड़ कर ले जा सकता था। जाते-जाते वह यह भी कह गया, "मेरी लारियां दोमेल में है

और मै डाक वंगले मे ठहरा हुआ हू ।" उसके जाने के वाद हमारे जहाजो ने कुछ वम दोमेल पर फेंके। न जाने उसका और उसकी लारियो का क्या हुआ। वह फिर नही आया।"

एक दिन वातो-वातो में खान मुझसे कहने लगा, "वहन ! तुम्हे और तुम्हारे वच्चों को विलखते देख कर मेरा मन चाहता है कि उस आदमी की तलाश करू जिसने मेहता साहव को मारा है। उसे मै मारूं ताकि उसकी औरत और वच्चे ऐसे ही तड़पे जैसे तुम और तुम्हारे वच्चे तड़प रहे है ।" मैंने उससे कहा, "क्या मै उसका घर तवाह करके सुखी हो सकूगी और क्या मेरा दु.ख कम हो जावेगा। नही, मै तुम्हे ऐसा करने को कभी नही कहूगी। मैं भगवान् पर भरोसा करती हूं वही अच्छे-वुरे काम देखता है। और वही सजा देता है। या तो हम भगवान् को छोड़ दें और स्वतंत्र वन जाये और या फिर उसे मानें और उसके सिद्धान्तो पर चलें।"

वह चुप हो गया। उसके पास इसका कोई उत्तर न था।

: १८ :

वह हत्याकांड

एक दिन कवाइली अच्छे-अच्छे नवयुवको को राशन के वहाने वुला कर लेगये और हस्पताल मे वंद कर दिया। जव लोग देर तक वापिस नही लौटे तो उनके रिश्तेदार उनकी तलाश में निकले। उन लोगों ने इनको भी वन्द कर दिया। नानकचंद को भी वुलाया गया लेकिन जव वह जा रहा था तो उसे रास्ते में खान मिला। उसने नानकचन्द को घर वापिस लौटा दिया।

दूसरे दिन शहर मे वड़ी हलचल मची। सव भय से कांप रहे थे। सवके मुंह सूखे हुए थे। पूछने पर पता चला कि जो साठ हिन्दू कल हस्पताल मे वंद किये गये थे, रात को उन सवको वड़ी वेदर्दी से कत्ल कर दिया। सुना गया कि उन्हे रात को दस वजे हस्पताल से वाहर निकाला गया और हमारी कोठी में लाकर एक लाइन मे खड़ा किया गया। उसके वाद उन्होंने

एक-एक आदमी को बुलाया, उसके कपड़े उतारे और कलमा पढ़ने पर मजबूर किया। जब वह कलमा पढ़ चुका तो एक पठान औरत ने, जो उन दिनो यहां आई हुई थी, छुरा हाथ में लिया और उस जिन्दा आदमी का कलेजा बाहर निकाल कर उसे पहाड़ी से धकेल दिया। इसी तरह उन्होंने उन सबको तड़पा-तड़पा कर मार डाला। बाद में यह दर्दनाक और वीभत्स समाचार हमें कई शरीफ मुसलमानो ने सुनाया। सबको खतरा था। क्या मालूम किसको कब कुत्ते की मौत मरना पडे। उन अभागे व्यक्तियों मे एक चमन के घर रहता था। उसकी स्त्री पति की लाश भी देख आई थी।

दोपहर को जब खान मेरे पास आया तब मैंने उससे इस घटना का जिक्र किया। वह कहने लगा,"यह तो बिलकुल झूठ है। भला कभी ऐसा हो सकता है कि हम पनाह मे आये हुए लोगो को मारे।" इसपर मैंने उसे वह स्त्री दिखाई जो अपने पति की लाश देख आई थी। वह फिर भी बोला,"गलत है, तुम अपने नौकर को मेरे साथ भेजो। मैं देखूं तो लाश कहां है। यह लोग झूठी अफवाहे उड़ाते है।" मैंने कहा "तुम्हारे साथ मेरा नौकर जा सकता है। मैं तो तुम्हारा यकीन करती हूं परन्तु और लोग कैसे करे? वह तो लाश देख कर आये है।" वह उठा और कहने लगा कि मैं शाम को आऊंगा, तब तुम्हारे नौकर को ले जाऊंगा। शाम को वह आया और मेरे दोनो साथियो ओम् और जोधा को लेगया। बाजार मे उन्हे एक दुकान पर बैठाया और यह कह गया कि तुम बैठो, मैं नमाज़ पढ कर आता हू। नमाज़ के बाद वह आया और उन दोनों को हमारी कोठी के नीचे वाली पहाड़ी पर लेगया। उनसे कहने लगा,"बताओ कहां है वह लाश?" एक जगह खून के धब्बे देखे तो कहने लगा,"हां, यह खून है जरूर परन्तु क्या मालूम कि आदमी का है या जानवर का। तुम लोग ऐसे ही माताजी को कहते रहते हो कि आज यह हुआ, कल वह होगा। अब जाकर उनसे यही कहना कि हमने वहां कुछ नही देखा है।" वे दोनो चुप रहे। भय के कारण उन्हे कुछ और पूछने की हिम्मत नही हुई।

उन दोनों को खान मेरे पास लाया और कहने लगा, "पूछिये, क्या इन्होने वहां पर कही कोई लाश देखी है?" दोनो ने बताया, "हमें वहां कोई लाश नज़र नही आई।" वह फिर बोला, "वहां तो खून के धब्बो के सिवाय और कुछ नही है। वह खून किसका है, किसी जानवर का या आदमी का, यह किसी को पता नही। मै सवेरे जाकर देखूगा। तब आपको बतलाऊगा। मै अन्धेरे में खून की पहचान नही कर सका।"

उसके चले जाने के बाद मैंने दोनो साथियो से पूछा, "क्या तुमने वहां कुछ भी नही देखा।" वह कहने लगे कि लाश तो वहा पर कोई नही थी, परन्तु जमीन ताजी खोदी हुई नज़र आ रही थी और ऐसा मालूम होता था कि लाश मिट्टी में दबा दी गई है। यह भी मालूम देता था कि कोई चीज़ वहां से नीचे फेंकी गई है। इधर-उधर बहुत से कपडे बिखरे पड़े थे। एक जगह पर गोश्त के कुछ टुकड़े पडे हुए थे। मैंने कहा, "तो तुमने उसके सामने क्यो नही कहा कि हमने यह सब देखा था। मैंने तुम्हे किस लिये भेजा था?"

वे कहने लगे, "हम क्या कहते, हमे उससे कुछ भी पूछते भय लग रहा था और फिर उसने हमें सब कुछ इस तरीके से दिखाया कि हमें सवाल पूछने का अवसर ही नही मिला। कहने लगा, माताजी के सामने कुछ मत कहना। हम नही चाहते कि उनका दिल दुखे या उन्हें कोई कष्ट पहुंचे।" बाद मे मुझे यह पता लगा कि सचमुच वहा लाश दबाई गई थी। मेरी समझ मे यह बात नही आई कि खान ने यह भेद गुप्त क्यो रखा। लाशें दफनाई क्यो और फिर मेरे साथियो को वह दिखाने क्यो लेगया।

दूसरे दिन सवेरे खान फिर आया और बोला, "मै खून देखने गया था, अभी वही से आ रहा हू। वह एक आदमी का खून है, जिसको यहां के वजीर ने मरवाया है। सुना है कि काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने उसके सारे परिवार को कैद कर रखा है और उन्हे बडी तकलीफ दे रहा है। इसी कारण यह वजीर यहा पर हिन्दुओ से उसका बदला ले रहा है और उन्हे मरवा रहा है।" मैंने कहा, "मै यह नही मानती कि उसका

परिवार श्रीनगर में कैद हो, तो यहां के हिन्दुओं से उसका वदला लिया जाय। यह तो वेसिर-पैर की वात है।" वह फिर भी यही वोला, "चूंकि महाराजा काश्मीर के कहने पर शेख मुहम्मद अब्दुल्ला यह सब कर रहा है, तभी यहां पर हिन्दू सताये जा रहे हैं।"

इस दुर्घटना का यहां वड़ा असर पड़ा और कई दिन तक लोगो में इस वात की चर्चा रही। अन्त में इसका रहस्य खुला कि यह सब डाक्टर और उसकी पार्टी की कारंवाही थी और कुछ स्थानीय मुसलमान भी इस हरकत में शामिल थे।

इसके कुछ दिन वाद एक दिन फिर हिन्दुओं में सख्त वेचैनी फैली। वे लोग हिन्दुओं को मस्जिदों में ले जाने लगे और उन्हें मुसलमान वनने पर मजबूर करने लगे। वे स्त्री-बच्चो सवको कलमा पढ़ाने और सिखाने लगे। आसपास के गांवो से भी मुसलमानो के पंच आए हुए थे। वे हिन्दुओ को, जो उनके गावो से भागे हुए थे, ले जा रहे थे। वे शहर के लोगों को भी हमदर्दी दिखाकर गांव में ले जाते थे और वहां पर उन्हे मुसलमान वना कर रखते थे। नानकचन्द को भी उसका एक मित्र गांव चलने के लिए मजबूर करने लगा। वे सब तैयार भी हो गए, पर इतने में खान आया और उसने उन सवको रोका। कहने लगा, "तुम मत जाना, तुम यही रहो, यहां पर तुम्हें कोई तकलीफ नही होगी।" वे रुक गए परन्तु उनकी वेचैनी कम नही हुई। सारे शहर में यह चर्चा थी कि जो कोई खुशी से इस्लाम कवूल करेगा, वही पाकिस्तान में रह सकेगा। उसे उसकी छीनी हुई जमीन भी वापस मिल जायगी। हमारे डेरे पर भी कुछ लोग आये और सवको डरा-धमका कर लेजाने लगे। मेरी वड़ी लड़की वीणा और वड़ा लड़का सुरेश मेरे पास आए और कहने लगे, "माताजी! पापा ने झूठ कहना पसन्द नही किया था कि वे मुसलमान है, किन्तु क्या अब हमें मुसलमान वनना पड़ेगा?" मैंने बच्चों को अपने पास बैठाया और पूछा, "क्या तुम मौत से डरते हो?" वे कहने लगे, "नही।"

"तो फिर तुम्हे डर किस वात का है। जो मौत से नही डरते,

उन्हे घवराने की क्या जरूरत। हम नही जायेंगे," मैं वोली।

उस घर के सव लोग जाने को राजी हुए। मैंने ओम् से कहा, "भाई, अगर तुम मौत से डरते हो तो जाओ, मै तुम्हे जान-वूझकर मौत के मुंह मे नही धकेलना चाहती, परन्तु मै और मेरे वच्चे नहो जायेंगे। मै नकली मुसलमान नही वनूगी।" ओम् ने भी जाने से इंकार कर दिया। कितना निडर था वह, एक तरफ मौत थी—दूसरी तरफ मै। परन्तु उसे मेरा साथ छोड़ना पसन्द नही था। मरना पसन्द था। हम इस इन्तजार में थे कि देखें, अव हमारे साथ क्या सलूक होता है।

वे लोग वाकी लोगो को मस्जिद में ले गए, कलमा पढाया और वजू करना सिखाया। उनमें कई स्त्रियां भी थी। मेरे वारे में भी मस्जिद में पूछा गया कि उसे क्यो नही लाये। लोगों ने वताया कि वह आने से इन्कार करती है। जव वे मस्जिद से वाहर निकले, तो उन्हें खान मिला और कहने लगा, "तुम यहा पर क्यो आये हो ? जल्दी यहां से जाओ। तुम्हे यहां नही आना चाहिए था।" जव वे घर आए तो उनके चेहरो पर भय के स्थान पर शान्ति थी। उन्हे विश्वास था कि अव उन्होंने इस्लाम कवूल कर लिया है। अव उन्हे कोई नही सतायेगा।

दूसरे दिन पुलिस का एक अफसर मेरे पास आया और कहने लगा, "आप कल मस्जिद में क्यो नही आई थी ? कल तो तकरीवन सभी मर्द और औरतें मुसलमान वन चुके है।" मैंने कहा, "मै नही जाऊगी। मैं सारी चाल समझ रही हू। अगर पाकिस्तान की हकूमत मुझे लिखकर भी दे कि तू हिन्दू है, तेरे लिए यहां अनाज नही है, तो भी मैं अपना मजहव छोड़ने के लिए तैयार नही हूं। मैं आपके मजहव की उतनी ही इज्जत करती हू, जितनी अपने मज़हव की। परन्तु चार दिन की जिन्दगी के लिए मैं नकली मुसलमान नही वनूंगी। जव मैं अपने मज़हव की, जिसमें मैंने जन्म लिया है, रक्षा नही कर सकती तो मैं आपके मज़हव की, जिसे मैं भय के कारण ग्रहण करूगी, कैसे रक्षा कर सकूंगी। मै हिन्दू रहकर आपके मज़हव की इज्जत करना चाहती हूं। आप मुझे और मेरे वच्चों को मार ही तो डालेंगे,

सो हम उसके लिए तैयार हैं। मुझे मेरी कोठी में जहां पर मेरे पति को गोलियों से मारा था, ले चलिए। पहले मेरे छ बच्चों को खत्म कर दीजिए, फिर मुझे।" इसपर वह कहने लगा, "बहन! तुम बेफिक्र रहो, तुम्हें कोई मजबूर नहीं करेगा।"

: १६ :

खान का परिचय

एक दिन खान मेरे पास बैठा हुआ था, कि एक पुलिस अफसर वहां आया। खान को देखते ही उसका रंग बदल गया। वह कभी-कभी मेरे पास आया करता था और पूछा करता था कि कोई तकलीफ तो नहीं है। खान को देखकर वह चला गया। और जब खान मेरे पास से चला गया, तो वह अफसर मेरे पास आकर बोला, "क्या आप जानती हैं कि यह कौन है और कितना खतरनाक है। आपको हर एक के सामने नहीं आना चाहिए और हर किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए। कुछ दिन पहले जो आपकी कोठी में हिन्दुओं को मारा गया था, वह सब इसी की कारवाई थी।"

मैं उसकी बातों का मतलब समझ गई। मैंने उससे कहा, "तुम कहते हो कि मुझे हर एक के सामने नहीं आना चाहिये। पर तुमने हमारी हिफाजत का कौन-सा प्रबन्ध किया है? दिन में कितनी मरतबा हमें और लड़कियों को तहखाने में छिपना पड़ता है। वहां हमने घास इसलिये रखी है कि समय पड़ने पर लड़कियों को आग की शरण मिल सके। देखिये, हमारे घर के सामने की धर्मशाला वाले कैम्प में औरतें हैं। कबाइली जिसको चाहते हैं जबरदस्ती घसीट कर ले जाते हैं। मैं खान का एहसान कभी नहीं भूलूंगी। इसने सच्चे दिल से मेरी सहायता की है। आपका भी धन्यवाद करती हूं। आपने भी मुझे तसल्ली दी है।"

असल में वह खान को देखकर डर गया था। उन दिनों इनमें कुछ फूट पड़ गई थी। जिन लोगों को मस्जिद में मुसलमान बनाया गया था,

जब उनसे रिश्ते मागे जाने लगे तब उन्हें अपनी गलतियो का पता चला। कुछ थोड़ी-सी शादियां हुई भी। जहां तक मैंने सुना और देखा, अन्य स्थानों की तरह मुज़फ्फराबाद के मुसलमानों ने भी हिन्दू लड़कियो और स्त्रियों की ओर आख उठाकर भी नही देखा। हां, पाकिस्तान से आये हुए कबाइलियो और फौजियो ने बड़े अत्याचार किये।

एक दिन खान आया और कहने लगा, "बहन, अब मैं जा रहा हूं, हमारी सब पार्टी जा रही है। मुझे कुछ निशानी दो। उसे मैं अपने बच्चों को दिखाऊंगा" भला मेरे पास क्या था जो मैं उसे देती। मैंने कहा, "मेरे पास क्या है ?" उसनें वह खेस मांगा जो मैं घर से लाई थी। इसे मैंने संभाल कर रखा हुआ था। यह मेरे पति की पसन्द की वस्तु थी। यह सुनकर मेरे मन को भारी धक्का लगा। मैं उसे देना नही चाहती थी, परन्तु इन्कार भी नही कर सकती थी। मैंने मन में सोचा कि यह भी तेरी परीक्षा है, दे दे। दुःख काहे का। उठाया, और अश्रुपूरित नेत्रो से छू कर उसे दे दिया। कई मरतबा पहले बातो-बातों में मैं उससे कह चुकी थी कि यह खेस मेरे पति को बहुत प्रिय था। मैं इसे सभाल कर रखूगी। आज वही यह मुझसे माग रहा था।

सचमुच मेरे लालची मन को यह खेस देते हुए बड़ी ठेस पहुची। उसने मेरी एक तस्वीर भी ली और कहने लगा, "बता बहन ! तेरा काश्मीर मे कौन है? अगर हम वहां पहुंचे, तो उसे मैं जरूर बचाऊंगा।" मैंने कहा, "सारा काश्मीर मेरा है।" वह चुप रहा। मैंने फिर कहा, "जब तक आप यहां पर रहे, आपने मेरी सहायता की। अब ईश्वर मददगार है।"

वह बोला, "मैं तुम्हे कई बार कह चुका हूं कि मेरे साथ काबुल चलो। वहां से फिर मैं तुम्हे हिन्दुस्तान पहुंचा दूगा, परन्तु तुम मानती नही हो।" मैंने कहा, "मै एक कैदी हूं। मैं भाग कर कही नही जाऊंगी।" इस पर उसने कहा, "कल मैं अपने हाथ से कुछ लिख कर लाऊंगा और बाहर दरवाजे पर चिपका दूंगा। उसे देखकर किसी को अन्दर आने की हिम्मत न होगी।" जब वह चला गया तब इस घर के सब लोग हंसने लगे और मज़ाक करने लगे कि खान अपने आपको न जाने क्या समझता

है ? अक्सर जब वह यहां से जाता, तो इसकी बातों का खूब मजाक उड़ाया जाता था। दूसरे दिन वह एक कागज लाया, जिसपर लाल स्याही से लिखा था, "कोई हिन्दू या मुसलमान बिना पूछे इस मकान के अन्दर दाखिल न हो। अगर बिना पूछे दाखिल हुआ तो कुल कबाइली इलाका उसका दुश्मन हो जायेगा ।"

"आगा जान खां"
लीडर, कबाइली इलाका।

खान मुझे कागज दिखा कर कहने लगा, 'देखो लाल स्याही से लिखा है। इसका मतलब है कि पठान के खून से लिखा गया है। जो इसका हुक्म तोड़ेगा उसे पूरी सजा मिलेगी। मेरे पीछे यह कागज तुम्हारी हिफाजत करेगा। यह कहकर वह बाहर चला गया और कागज को दरवाजे के ऊपर—ऊंची जगह पर चिपका गया। इस कागज पर उसका पता देख कर हमें मालूम हुआ कि यह खान कोई मामूली आदमी नहीं है।

वह चला गया और उसके जाने के बाद हमें पता चला कि डाक्टर और उसकी पार्टी को उन साठ आदमियों के कत्ल के सम्बन्ध में जवाब देने के लिये वापस बुलाया गया है। खान के जाने के एक महीने पश्चात् उसका एक पत्र मुझे मिला, जो पुलिस ने खोल कर मेरे पास भेजा। उसमें लिखा था—

हमशीरा कृष्णा,

आदाब अर्ज। मैं घर पहुंच गया हूं, लेकिन मेरा ध्यान तुम और तुम्हारे बच्चों की तरफ लगा है। मैं तुम्हारे लिये खुदा से दुआ मांगता हूं कि वह हर तरह तुम्हारी मदद करे।

तुम्हारा भाई,
आगा जान खान
बन्नूं, कोहाट।

मैंने उसके पत्र का उत्तर दिया, परन्तु उसका कोई जवाब मेरे पास नहीं आया। शायद हुकूमत की तरफ से उसके पास पत्र लिखना मना था। जो

१५९५

इश्तहार उसने हमारे दरवाजे पर चिपकाया था, उससे हमे काफी सहायता मिली। आम आदमी को अन्दर आने की हिम्मत नही होती थी।

मेरे मुज़फ्फरावाद छोडने के वाद भी वह इश्तहार वही चिपका रहा। कई लड़कियो को इन जालिमों के हाथ से वचा कर वहां छिपाया गया। वे सव श्री नानकचन्द के साथ वचकर हिन्दुस्तान पहुंची।

: २० :

पाकिस्तान के आंसू

कभी-कभी वहां पाकिस्तान की ओर से हिंदुओ के लिये वड़ी हमदर्दी का दिखावा होता था। इन दिनो रावलपिंडी से शरणार्थियो की सहायता करने के लिये कालिजों के काफी लड़के आये हुए थे। पुराने कम्वल और कपड़े वांट रहे थे। एक दिन पाकिस्तान के लोगो ने गुड की रोटियो की कई पेटियां भेजी और लड़को ने इन्हे हर गली मे तकसीम किया। किसीको आधी और किसीको पूरी मिली। वच्चे, वूढे, स्त्रियां तथा वड़े-वड़े इज्जतदार आदमी किस वेतावी से भूखे भिखारियो की तरह उनपर टूट रहे थे, यह देखते ही वनता था। भूख की ज्वाला ने उन सवको वेहाल कर दिया था। रोटियां वंटती देखकर मेरा नौकर ओम् भी वहा चला गया। उसे लालच ने आ घेरा और कुछ लड़कों ने उसे पहचान कर पांच रोटियां दे दी। वह प्रसन्नतापूर्वक लेकर मेरे पास आया, हसकर कहने लगा, "माताजी, मै वच्चो के लिये मीठी रोटियां लाया हूं।" रोटियां देखकर मेरा खून खौलने लगा। मैने कहा, "ओम्! यह तुमने क्या किया? विना मेरे पूछे रोटियां ले आये। क्या तुम्हे वहुत भूख लग रही थी। क्या तुम मेरी वात भूल गये? जाओ, यह रोटिया वापस लौटा आओ। मै जानती हूं कि खुराक की कमी है। पर खुराक की कमी से क्या कोई मरता है। देखो मै केवल एक समय खाती हूं और वह भी भरपेट नही, पर इससे क्या मेरा जीवन समाप्त हो चला है? जितने लोग यहां है, मुझे उन सवसे अपने वच्चो और तुम लोगों की सेहत

अच्छी जान पडती है । इसलिये जो भी काम करो मेरी और अपनी इज्जत का ध्यान रख कर करो ।" वह कहने लगा, "अब हमारी क्या इज्जत है, माता जी? हम दूसरो के टुकडों पर पल रहे है ।" मैने कहा, "नही ऐसा नही है । हमारी इज्जत आज भी उतनी ही है, जितनी कि पहले थी और अन्त तक उतनी ही रहेगी । हम उनके कैदी है और कैदी की हैसियत से उनका अन्न खाते है । उससे ज्यादा हम कुछ नही लेते और न ही हम कोई ऐसा काम करते है, जिसमे हमें नीचा देखना पडे ।" मेरी बात सुनकर उन लोगो ने अपनी गलती मान ली । मुझे इससे बडी प्रसन्नता हुई । मुझे अक्सर यह ध्यान रहता था कि यह लोग क्या कार्रवाई करते है । एक दिन मैने जोवा और ओम् से कहा, "हमारी कोठी से थोड़ी-सी सब्जी तो ले आओ । शायद अभी वहां कुछ साग वगैरह मिल जाये और देख आना कि वहां आजकल कौन उतरा है और वे लोग क्या कर रहे है ?" वे दोनो वहां जाकर साग चुनने लगे । जब वह चुन रहे थे, तो एक सिपाही उनके पास आया । वह बलोची रेजीमेंट का था । उसने उनसे पूछा, "तुम यहा क्यों आये हो और तुम्हे किसने भेजा है ?" उन्होने कहा, "यह कोठी यहां के वजीर वजारत की थी । उनकी पत्नी ने हमें यहा भेजा है । यह सब्जी वजीर साहब के हाथ की लगाई हुई है ।" वह पूछने लगा, "उसका कितना परिवार है, कितनी लडकियां है और उनकी कितनी आयु है ।" जबाब में इन्होने कहा, "लडकिया तो छोटी है ।" इसपर उसने कहा, "खबरदार अब आगे से यहा आने की कोशिश मत करना । नही तो गोली से उडा दिये जाओगे ।" यह कहकर वह अदर चला गया । इसी बीच में ओम् भी इस कोठी के चौकीदार से, जो हमारे समय में भी वहा पर चौकीदार था, बातें करने के लिये चला गया । इतने में वह सिपाही वापस लौट आया और जोवा से कहने लगा, "तुम्हे हमारा अफसर बुलाता है, जल्दी चलो ।" जोवा घबड़ा कर उसके साथ चल पडा । अफसर ने भी वही बातें पूछी कि तुम्हारी मालिकन की क्या आयु है ? उसकी कितनी लडकियां है ? क्या उम्र है उनकी ? और तुम यहां पर बिना हमारे हुक्म के क्यों आये ? तुम्हारा दूसरा साथी कहां गया ? क्या तुमने यहा पर कुछ

धन गाड़ा है? जिसे लेने के लिये आये हो।" जोधा कांप रहा था। ओम् को यहां-वहां बहुत ढूंढा, पर वह न मिला। अब वे जोधा से कहने लगे, "तुम अपने साथी को पेश करो, नहीं तो हम तुम्हें गोली से उड़ा देंगे।" उसने कहा, "मैं उसे घर जाकर ले आता हूं।" पर वह उसे अकेला आने नही देते थे। आखिर उन्होने उसके साथ एक सिपाही भेजा। वे दोनों हमारे डेरे पर आये। सिपाही नीचे आंगन मे धूनी के पास, जो यहां पर हर समय जलती रहती थी, बैठ गया। वहां चमन की मा और बहन भी बैठी हुई थी। एक अनजान सिपाही को अन्दर आते देखकर वे बहुत घबराईं परन्तु धीरज रख कर उससे पूछा, "तुम यहा क्यो आये हो?" वह जोधा की ओर देख कर कहने लगा, "इस आदमी ने हमें धोखा दिया है। अपने साथी को इसने यहां पर छिपा रखा है, हम उसे लेने आये है। जब तक वह नही मिलेगा मैं यहीं बैठा रहूंगा।" ओम् घर पर नही था। जोधा भी वही पर सिपाही के साथ बैठा रहा। जब ओम् घंटे भर तक नही आया, तो चमन की मा ने कहा, "तुम यहां से चले जाओ। जब वह आयेगा, तो हम उसे वही भेज देंगे।" परन्तु वह उठने का नाम नही लेता था। वह सब घबराये, न जाने यह यहा क्या देखने आया है। न जाने अब क्या गुल खिलता है। जब वह वहां से नही उठा, तब जोधा मेरे पास ऊपर आया। सारी बात मुझे बताई। वहा पर चमनलाल, उसका पिता और तीन-चार आदमी और भी बैठे थे। सब लोग यह सुनकर चिंतित हो गये। चमन ज़रा तेज़ होकर बोला, "तुमने दो आने की सब्जी के लिये यह क्या नया बखेड़ा मोल ले लिया है।" गलती स्पष्ट मेरी थी। पर साग का तो बहाना था। वास्तव मे मैं चुप नही रह सकती थी। जब चार दिन शाति से गुजर जाते थे, तो नई बात देखने को मन करता था। मैं उठी और नीचे गई। सिपाही से पूछा, "तुम कैसे आये हो?" उसने कहा, "दो आदमी हमारे यहां सब्जी लेने आये थे। हमारे रोकने पर एक को इसने भगा दिया। जब तक वह आदमी हमे नही मिलेगा, तब तक हम यहां से नही जायेंगे।" मैने कहा, "भाई, इसमें गलती मेरी है। मैने ही इन्हें सब्जी लेने बगीचे में

भेजा था। यह बगीचा कभी हमारा था। दूसरा आदमी कहीं भागा नहीं है, यहीं कहीं पर है, आ जायेगा। तुम फिजूल यहां बैठ कर क्यों वक्त बरबाद करते हो। जाओ, अपने अफसर को कह दो कि जब वह आदमी आ जायेगा, मैं भेज दूंगी। यह घर मेरा नहीं है। ये लोग यहां किसी गैर का आना पसंद नहीं करते।" वह उठा और चला गया। बाहर निकलते ही ओम् उसे दरवाजे पर मिल गया। इसपर वह दोनों को अपने अफसर के पास ले गया। उसने दोनों को खूब धमकाया और कहा, "फिर कभी इस तरफ आने की कोशिश मत करना। इस बार मैं माफ करता हूं। अगर दूसरी बार यहां आये, तो गोली से उड़ा दिये जाओगे।" यह कह उन्हें वापस भेज दिया। प्रभु ने उन्हें मौत के मुंह से बचा दिया।

हमारे साथ ही गुरुद्वारे में हिंदुओं का एक बड़ा भारी कैंप था। वहां पर प्रति दिन गांव या शहर के मुसलमान आकर नवजवान स्त्रियों को विवाह करने पर मजबूर करते थे। तब सब लोगों ने मिलकर मशविरा किया और कुछ लड़कियों की शादी वहीं कैंप के कुछ लड़कों के साथ कर दी। हालांकि वह लड़के शादी के काबिल नहीं थे, पर जालिमों को यह बताने के लिये कि ये सब विवाहित हैं, ऐसा करना पड़ा। शिवदयाल ने भी एक विधवा से शादी कर ली। उसकी यह हरकत मुझे पसंद नहीं आई। क्योंकि इसकी पहली स्त्री श्रीनगर में थी। वह कहने लगा, "अगर मैं इस लड़की को बचा सकता हूं, तो मैं शादी कर लूंगा। नहीं तो इसे कोई बदमाश ले जायेगा।" उसने शादी की और हमारी पार्टी से अलग होकर रहने लगा। उसी गुरुद्वारे में ग्रंथ साहब के पन्ने इधर-उधर बिखरे हुए थे। चमन की मां ने उन्हें इकट्ठा किया और बाद में बड़ी कठिनता से कृष्णगंगा के अर्पण कर आई।

हमारे साथ ही कैम्प में एक स्त्री, जिसके पति का कुछ पता नहीं था, कहीं दूसरे सज्जन के यहां एक विवाह में सम्मिलित होने को आई थी। उसके साथ एक बच्चा था और वह अपने एक रिश्तेदार के साथ रह रही थी। वे उसे मजबूर कर रहे थे कि वह किसी मुसलमान से शादी कर ले। वे उसे खाना नहीं दे सकेंगे? वह कई दिन से भूखी थी। वह हमारे पास आई

और अपनी दर्द भरी कहानी सुना कर कहने लगी, "मैं भूखी रह कर जान दे दूंगी, परन्तु मुसलमान से शादी नही करूगी। मेरे रिश्तेदार मुझे एक मुसलमान से शादी करने पर मजबूर करते हैं। न जाने इसके बदले मे वे उससे रुपया या अनाज, क्या ले रहे हैं।" मैंने उससे कहा, "तुम मज़बूत बनी रहो, तुम्हारे साथ कोई जबर्दस्ती नही कर सकता। रही खाने की बात, सो सुबह का खाना थोड़ा-सा हमारे यहा से ले जाया करो। हम ज्यादा नही दे सकते हैं।"

जब तक हम मुज़फ्फराबाद मे रहे एक समय का खाना, जो कुछ भी दे सकते, उसे देते रहे। उन दिनो हमें अनाज की कुछ खास दिक्कत नही थी। वजीर ने हमारे लिये स्पेशल राशन मंजूर कर दिया था। घी और थोडा-सा साबुन भी मिल रहा था।

एक दिन चार बजे के करीब दरवाजा खटखटाने की आवाज़ आई और गली मे बड़ी हलचल मची। दरवाजा खोला तो देखते क्या है कि बीस-तीस बर्दीपोश सिपाही, कुछ फौज के अफसर-ब्रिगेडियर वगैरह, उनके साथ वहां के वजीर वजारत और पुलिस सुपरिन्टेंडेंट सब है। वे लोग अन्दर दाखिल हुए और घरवालो से मेरे बारे में पूछने लगे। "वह कहां है?" चमन उन अफसरो को मेरे कमरे में ले आया। उस समय वहां एक मिट्टी के दिये की धुधली-सी रोशनी हो रही थी। कई दिन के बाद आज हमने यह दिया जलाया था। मेरे दोनो बच्चे मेरे पास थे। मैंने उनसे कहा, "अब शायद तुम्हे भी अपनी बहनो के लिये मरना पड़े।" इसपर मेरा बडा लड़का सुरेश कहने लगा, "माताजी, एक को तो पापा के खान्दान के नाम के लिये जिंदा रहने दो।" मैंने उसे डाटा, "तुम कायर क्यो बन रहे हो? कायर बनकर तुम खान्दान का नाम डुबो सकते हो, रोशन नही कर सकते।" वह कहने लगा, "मै अपने लिये नही कह रहा हूं, माताजी। दो में से एक रहे।"

सबने आकर मुझे सलाम किया। मैंने उनसे कहा, "भाई, मैं रोज की दिक्कतो से तंग आ गई हूं, आप एक मरतबा ही हम सबको क्यो नही

खत्म कर देते ?" इसपर वे सब कहने लगे, "आप घबरा क्यों रही है ? हम आपकी मदद करने आये हैं। हम चाहते हैं कि आप रावलपिंडी जाकर रहें। वहीं पर आपका सब इंतिजाम हो जायेगा।" मैंने कहा, "मैं तो आपकी कैदी हूं, एक कैदी की हैसियत से आप जहां-कहीं भी रखें, रह सकती हूं।" उनमें से एक अफसर बोला, "क्या तुम हिंदुस्तान जाना चाहती हो ?" मैंने कहा, "मै अभी कही नही जाऊगी। यहीं रहूंगी।" वह कहने लगे, "हमने तुम्हारे लिये लारियो का इंतिजाम किया था, परन्तु तुम लोग तो किसी पर विश्वास नही करते हो, हम क्या करें ?" और वे चले गये।

: २१ :

मुज़फ्फराबाद ! अलविदा

एक दिन का जिक्र है। शहर में किसीके स्वागत की तैयारियां हो रही थीं। सुनते थे कि कोई नेता आनेवाला है। था भी ऐसा ही। जम्मू का रहने वाला चौधरी अब्दुल हमीद आनेवाला था। वह अब पाकिस्तान में रहने लगा था। गांव-गांव से लोगो को इकट्ठा किया जा रहा था। चौधरी साहब आये। बडा समारोह हुआ और उन्होंने बड़े भाषण दिये। उस दिन प्रातःकाल जब मैं नींद से जागी, तो मेरा मन बहुत ही उदास होरहा था। मैं नानकचंद के पास गई और धूनी के पास बैठकर उससे बातें करने लगी। मैंने कहा, "ऐसा जान पडता है कि मुझे अब यहा से जाना पडेगा। न जाने अभी किन-किन कठिनाइयो का सामना करना बाकी है।" यह कहते-कहते मेरी आंखो में आंसू बहने लगे। वह हैरान होकर कहने लगा, "कहा जा रही है आप ?" मैंने कहा, "मै नहीं जानती, परन्तु मेरे अन्दर की आवाज मुझे बता रही है कि मैं शीघ्र ही मुजफ्फराबाद छोड़ूंगी।"

परन्तु तब भी यह कोई नही जानता था कि हमें आज ही मुजफ्फराबाद छोडना पड़ेगा। हम लोग खाना खाकर बैठे ही थे कि बहुत-से लोगों के साथ चौधरी अब्दुलहमीद साहब मुझसे मिलने के लिये आये। उनके साथ बहुत

से अफ़सर थे और कुछ स्थानीय आदमी भी थे। लद्दाख घाटी के रहनेवाले एक काचरु अहम्मद शाह भी उनके साथ थे। पहले वहां पर वह रियासत की ओर से माल अफसर थे। गड़बड़ होने के बाद इन्होंने अपने जिम्मे कुछ काम नही लिया था। आज-कल यह फिर काश्मीर में माल का काम कर रहे थे और दुर्रानी भी इनके साथ था, जिसका जिक्र मैं पहले भी कर चुकी हूं। आते ही चौधरी साहब ने मेहता साहब के लिये बड़ा अफसोस जाहिर किया। मैंने कहा, "चौधरी साहब! आप अफसोस किस बात का कर रहे है ? वह तो अमर है। आप मुझे मेरे पति के इस शानदार बलिदान पर मुबारकबाद दीजिये।"

उसने कहा, "आपको मुबारिक हो।" मैंने उनको धन्यवाद दिया। वह कहने लगा, "अगर मेहता साहब ने मुझे पिछले दिनों रियासत में दाखिल होने से न रोका होता, तो मेरे बच्चे जम्मूं मे कत्ल होने से बच जाते। लेकिन मेरे दोस्त होते हुए भी उन्होने मुझे रियासत मे दाखिल नहीं होने दिया।" मैंने कहा, "चौधरी साहब, मुझे आपके बच्चो के कत्ल होने का बहुत ही खेद है। न जाने लोग क्यो पागल हो गये है। रहे मेहता साहब, वे तो राज्य के सेवक थे। उन्होंने जो किया, राज्य की हिदायत के अनुसार किया। आपके स्थान पर उनका अपना लड़का होता, तो भी वे ऐसा ही करते।" "आपकी सब बातें हमने सुनी है।" वह बोला, 'और वही बातें हमे यहां तक खीच लाई हैं। बताइये, मै आपकी क्या मदद कर सकता हू?" काचरु अहमद शाह बोला, "यह एक अच्छे खान्दान से ताल्लुक रखती है। आप तो शायद इनके पिता को भी जानते होगे?" उसने फिर मेरे पिता का नाम लिया। चौधरी कहने लगा, "मै आज ही यहां से जा रहा हूं, अगर आप मेरा यकीन करे, तो मैं आप और आपके बच्चों को जम्मूं की सीमा तक पहुंचा आऊंगा। वहां से हम आपके बदले मे अपने कुछ आदमी लेगे, जो वहां पर फंसे हुये है।"

मैं चुप रही। फिर वह कहने लगा, "आपको किसीका तो यकीन करना ही चाहिये।" इतने में दुर्रानी कहने लगा, "बहन जी, मैं भी तो साथ हूं।

चलिये आप। आपमें और मेरी वहन में क्या कोई फर्क है। जैसी मेरी वहन वैसी आप।" उसकी वहन मेरी सहेली थी, यह वात सही थी। मैंने कहा, "मैं चलती हूं। मुझे सबपर विश्वास है। इन्सान से वढकर भगवान् पर। जैसे वह चलायेगा, चलूगी। यहां भी वही साथ है, वहा भी वही साथ रहेगा। मेरे साथ दो नौकर और श्रीमती मोदी भी है। इन्हे भी साथ ले जाना होगा। इसपर चौवरी साहव वोले, "सब तो नही जा सकते और न ही मैं इन्हे ले जा सकता हूं।" मैंने कहा, "अबतक हम एक दूसरे के साथ रही हैं और एक दूसरे की सहायता से हमने दिन व्यतीत किये हैं। अब मैं इन्हे छोड़कर नही जा सकती। या तो सब को ले चलिये और या फिर सब को रहने दीजिये।" वहुत कहने-सुनने पर वह सबको ले जाने को राजी हो गया। कहने लगा, 'आप जल्दी सामान वांधिये। हम एक घंटे तक आयेगे।" हमने जल्दी-जल्दी अपने चीयड़े इकट्ठे किये और जो कुछ हमारे पास टूटे-फूटे वरतन थे, उन्हे भी वांव लिया और तैयार हो गये, दूसरी दुःखभरी मंजिल का सफर तय करने के लिये।

हम सब गिनती में ग्यारह थे। दो नौकर, मै, मेरे पाच बच्चे, सुदेश, कमला तथा श्रीमती मोदी। जितने परिवार उस घर में रहते थे, सब-के-सब हमारे पास आकर वैठ गये। सबकी आखो मे आसू थे। मुझे भी मुज़फ्फराबाद छोड़ते हुए वहुत दुःख हो रहा था। कैसे यहां पर आई थी। अब अपना सब कुछ इसी भूमि के अर्पण कर जा रही थी। रह-रह कर गला भर आता था। भविष्य का कुछ पता नही था; क्या होगा कहा जायेंगे ?

घंटे भर वाद दुर्रानी आया और चलने को कहा। हम सब उठे। रुंधे हुये कठों से सबसे मिले। सबकी आखो से आसू वह रहे थे। दुर्रानी आगे-आगे चल रहा था। मैं उसके पीछे-पीछे जा रही थी। वह कहने लगा, "वहनजी, आपको नंगे पांव चलते देखकर मुझे शर्म आ रही है।" मैंने कहा, "भाई, इसमें शर्म की क्या वात है। यह तो दिनो का फेर है। मुझे आज मुज़फ्फराबाद छोडते हुए वडा दुःख हो रहा है। आज मैं पति का

वियोग महसूस कर रही हूं। मन को शांत करने की वड़ी कोशिश कर रही हूं, परन्तु व्याकुलता वढ़ती जा रही है।"

यही वातें करते-करते हम सड़क पर पहुंच गये। सामान लारी पर रखा। वहां मौलवी भी मिला। कहने लगा, "अगर गलती से मैंने आपको कोई तकलीफ दी हो, तो माफ करना।"

लारी में तेल डाला जा रहा था। मै और श्रीमती मोदी सड़क से जरा कुछ आगे गये, जहां श्रीमती मोदी की कोठी थी। सव कुछ जलकर राख हो गया था। वेचारी आंसू भरी आखो से देख रही थी और कह रही थी, "यही पर मैंने अपने वच्चे को छोड़ा था।" उस समय हमारे टूटे हुए दिलो पर क्या गुजर रही थी, वह कहते नही वनता। भिखारी वन कर हम यहा से जा रहे थे।

लारी आई और हम उसपर सवार हुये। मैंने देखा, वही ड्राइवर और वही लारी, जिसपर कभी मै श्रीनगर से यहां आई थी। सव कुछ वही था, जमीन वही,आकाश वही, पर मेरे जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर था। मैंने ड्राइवर से कहा, "तुम्हें याद है, कुछ मास पहले तुम मुझे इसी लारी पर श्रीनगर से लाये थे?" पर मैंने देखा उस दिन के ड्राइवर में और इसमें भी जमीन-आसमान का अन्तर था। वह कहने लगा, "तुम हिंदुस्तान चली हो ना, सुनो! तुम्हारी सारी फौज को चेचक निकली है। दो दिन मे तुम्हे पता चलेगा कि तुम्हारी हिन्दुस्तानी फौज का क्या हुआ?"

पुल पर जगह-जगह पहरे वाले लारी को रोककर पूछते थे कि कहा जा रही है। इसमें कौन हैं? जवाव दिया जाता था,"आजाद काश्मीर वस।" यह सुनते ही वे इन्हें झट रास्ता दे देते थे। हमारी लारी में वहुत-से मुसलमान भी वैठे हुये थे। सवने मेरे वच्चों को वहुत प्यार से वैठाया। और इन्हें देखकर लोगो के दिल वहुत दु:ख रहे थे।

जव हमारी लारी गढी हवीव-उल्ला पहुची, (यह स्थान पाकिस्तान में है) तो वहा पर भी वहुत से आदमी इकट्ठे हो रहे थे। यहां चौधरी साहव का भाषण होना था। हमें वही वैठा कर वह भाषण देने लगे। दुर्रानी हमारे

पास रहा। अब दुर्रानी कहने लगा, "बहन जी, यहा बडी-बड़ी दिक्कते हैं। अगर आपसे कोई पूछे, कौन हो ? कहां जा रही हो? तो आप कुछ मत बताना, उनसे कहना, कि वे मुझसे पूछें। जब कोई बहुत मजबूर करे तो कहना कि, यह मेरा भाई है। इसके घर जा रही हूं।" चौधरी साहब भाषण देकर आये और ड्राइवर से चलने को कहा, ताकि समय पर एबटाबाद पहुंचें। रास्ते में कबाइली ही कबाइली थे। लारी को घूर-घूर कर देख रहे थे। जब हम एबटाबाद के नजदीक पहुंचे, तो पुलिस के एक सिपाही ने आकर हमारी लारी रोक ली। पूछा, "इन औरतो को आप कहा ले जा रहे हैं।" और हमसे पूछा, "आप अपनी मर्जी से जा रही है।" मैंने कहा, "हा।" वह फिर चुप हो गया।

लारी एबटाबाद के डाक बगले के सामने रुकी, परन्तु वहा पर कमरा न मिला। वहा पर पठान-ही-पठान थे। तब ये लोग हमें एक होटल में ले गये। इस समय रात के दस बज गये थे। दुर्रानी कहने लगा, "बहनजी, आज रात यहीं पर रहेंगे। कल शाम को आपको रावलपिंडी ले जायेंगे। आप फिक्र न कीजियेगा। सब ठीक होगा।" एक कमरा हमें दिया गया। खाना दुर्रानी ने मंगवाया। सब बच्चो तथा नौकरो ने खाया।

रात को हम सब लोग आराम से सोये। दूसरे दिन वहा पर चौधरी साहब का भाषण था। वह सारा दिन बाहर रहे और शाम को आये। उसी समय सबसे चलने को कहा। मैंने और श्रीमती मोदी ने आज भी खाना नही खाया था। कुछ फल मगाये, वे ही खाकर पानी पी लिया।

हम सब फिर उसी लारी पर बैठे और रावलपिंडी को रवाना हुए। जब हम पिंडी पहुचे तो रास्ते में दुर्रानी के एक रिश्तेदार का मकान पडता था। वह वहा कुछ सामान उतारना चाहता था। उस स्थान पर इसने लारी रुकवाई और कहने लगा, "चलिये, आप उन लोगो से मिल आइये यहा। पर कर्नल साहब रहते है, जो पहले काश्मीर में भी कर्नल थे। पिछले दिनो जम्मू में इनपर भी बहुत कठिनाइया आई। यह सब वहा से भाग कर आये है।"

मैं और सब बच्चे नीचे उतरे और अन्दर गये। यह एक आलीशान साफ-सुथरी कोठी थी। एक कमरे में धीमी आंच जल रही थी। एक बूढा आदमी कौच पर बैठा हुआ हुक्का पी रहा था और पास ही दो बूढ़ी स्त्रियां भी बैठी हुई थी। एक तरफ एक नवयुवती बैठी हुई थी और फौजी वर्दी पहने हुए एक युवक इधर-उधर टहल रहा था। हम अन्दर गये और सामने वाले गलीचे पर बैठ गये। हमें देखकर वे लोग मुस्कराये। दुर्रानी ने हमारा परिचय कराया। तब वह दोनों बूढी स्त्रियां कहने लगीं, "तू कहां जा रही है। तेरे दोनों लड़कों को रास्ते में पठान मार देंगे।" वह बूढ़ा आदमी भी यही बोला जो कर्नल कहलाता था। वह कहने लगा, "पचास हजार मुसलमान जम्मूं में दाखिल हो गये है, अब तुम्हारा जम्मूं नही बचेगा। जो अत्याचार हमारे ऊपर हिन्दुओं ने किये है, अब उनका बदला उनको मिलेगा।"

"मेरा एक लड़का अभी तक गुम है, उसका पता नही लग रहा है।" यह कहते-कहते उसकी आंखें डबडबा आईं।

सब स्त्रियां हमारी ओर देख कर कठोर हंसी हंस रही थी। वह सच्ची थीं। उसके लिये मैं उनको दोष नही दे सकती। उनपर बहुत-कुछ बीती थी। उनकी बातें सुनकर बच्चे बिल्कुल सहम गये थे। कुछ देर बाद हम उठे और लारी पर सवार हुए। उनके ये शब्द कि ये बच्चे जिन्दा नहीं पहुंचेगे बराबर मेरे कानों में गूंज रहे थे।

यहां से ये लोग हमें शहर ले गये। एक स्थान पर लारी रुकी। वे कहने लगे, "यहां पर काश्मीर के मुसलमानों का कैम्प है। ये हिन्दुस्तान से भागकर यहां आये है। आपको एक-दो दिन यहां रहना होगा। उसके बाद हम आपको जम्मूं की सीमा तक पहुंचा देंगे और आपके बदले में कुछ औरतों को वहां से ले लेंगे।"

हम अन्दर गये, तो देखते क्या है कि कुछ थोड़े से काश्मीरी, हाथो में बन्दूक लिये इधर-उधर घूम रहे है। यह डी० ए० वी० कालेज का भवन

था। हमें उन्होंने एक कमरे में ले जा कर छोड़ दिया। दुर्रानी और चौधरी कल आने को कह कर चले गये।

उस समय हम कुछ घबराये हुए थे। इतने में सब काश्मीरी इकट्ठे हो गये। लड़कों को बाहर बुलाया और उन्हें प्यार से कहने लगे, "तुम सब हमारे वतनी हो। हम भी काश्मीरी हैं।" मेरे पास एक आदमी जिसे मैं उस समय पहचानती थी, अन्दर आया और कहने लगा, "यहां पर आपको घबराना नही चाहिये। मैं हिन्दू हूं। मेहता साहब मेरे मित्र थे। मैं यहा पर आपकी हर तरह सहायता कर सकता हू। इस कैम्प की देख-रेख मैं और मेरे एक मुसलमान मित्र कर रहे हैं। हम आपके लिये राशन वगैरह ला देंगे। आप यही पर भोजन पकाइये।" मैंने कहा, "इस समय मैं और श्रीमती मोदी भोजन नही करेंगी। बच्चो के लिये भले ही कुछ मंगा दीजिये।" उसने बच्चो के लिये भोजन और हमारे लिये फल वगैरह भिजवा दिये। हम दोनो ने दो दिनों से भोजन नही किया था, अब हमने दूध पिया। बाहर से उन लोगो ने कहला भेजा, "आप चिन्ता न करें। हम भी आज यही सोयेंगे। आप आराम से सो जाइये।"

हम सबने विचारा, "क्या बात है, आखिर ये लोग हम सबके साथ इतनी सहानुभूति क्यो दिखा रहे हैं? क्या यह मेहता साहब का सचमुच ही मित्र है।" मुझे विश्वास नही आ रहा था। उन्होने कभी इसने मेरा परिचय नही कराया था। यह अपने को हिन्दू बता रहा है और यह कैम्प भी अपने ही आधीन बता रहा है। कुछ देर मैं इसी सोच-विचार में पडी रही। मेरे दोनो साथी बहुत डरे हुए थे। वे समझते थे कि अब ये लोग हमें खत्म कर देंगे। वहा हर व्यक्ति हाथ में पिस्तौल लिये घूम रहा था। आखिर नींद ने अपना दबाव डाला और सब भय जाता रहा।

: २२ :

रावलपिंडी कैंप में

प्रातःकाल सब उठे। हमारे कमरे के दरवाजे के सामने एक आदमी

बन्दूक लिये पहरा दे रहा था। उसने नल आदि का पता बता दिया। इतने मे उन लोगो ने दूध, घी और खाने की बहुत-सी सामग्री भेजी। बाहर कई काश्मीरी मुसलमान जो उस कैम्प मे रहते थे, इकट्ठे हो गये। बच्चो को देखकर कहने लगे, "हमपर भी बड़ी मुसीबते आई थी। अब हम सब यहा है। आप हमारे हमवतनी है। आपको देखकर हमे खुशी होती है। हमें भी अपने हमवतनियो की खिदमत करने का मौका मिला। बताइये! हम आपकी क्या खिदमत करे?" कोई एक बच्चे को उठाता, तो कोई दूसरे को। ये सब बेचारे समय के फेर पर अफसोस कर रहे थे। मै इन्हे देखकर बड़ी हैरान थी कि इन्हे किसने इतने प्रेम की शिक्षा दी है। इनमें हिन्दू-मुसलमान का बिल्कुल भेद-भाव नही था।

वही पर मैंने अपने शहर के दो लड़के देखे। इनका मकान मेरे पिता के मकान के पास था। उन्होने मुझे पहचाना और झट मेरे पास आये। ये दोनो मुसलमान थे। मैंने पूछा, "तुम यहां पर कैसे आये? तुम तो जम्मूं में कालिज मे पढ़ रहे थे?" दोनों की आखो मे आसू भर आए। उन्होंने बताया कि जम्मूं के मजहबी झगड़ो ने उन्हे उनके वतन से निकाल दिया है। रह-रह कर उन्हें उनका वतन याद आता है। न जाने उनके मा-बाप का क्या हाल होगा? इन दोनो की आयु करीब २५-२६ साल की थी। मैंने उनसे कहा, "चाहे जो कुछ भी हो, हमारे शहर में उस साम्प्रदायिकता का असर कभी नही हो सकता, मेरा ऐसा विश्वास है। जैसे आज तक कोई भी दंगा हमारे यहां नही हुआ, वैसे उम्मीद है कि आगे भी नही होगा।"

वे कहने लगे, "हम भी यही कहते है कि चाहे जो कुछ भी हो, लेकिन किश्तवाड़ के हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे की बरबादी नही देख सकते।"

मैने उनसे पूछा, "बताओ, तुम यहां पर कहां रहते हो और तुम्हारी कौन देखरेख करता है?" उन्होने बताया, कि यह कैम्प 'आजाद काश्मीर' की ओर से खुला हुआ है। काश्मीर के मुस्लिम पनाहगुजीनो के लिए यहां इन्तिजाम है। यहां पर इस वक्त ३०० पनाहगुजीन है। इनमें जम्मूं के केवल वे ही दो है। इनकी देख-रेख मिस्टर जी के रेड्डी और एक

मुस्लिम भाई करते हैं। यहां पर रोज सबो को बन्दूक चलाने की ट्रेनिंग दी जाती है। मैंने पूछा कि इन्हें कौन ट्रेनिंग देता है ? तो वे बोले "पाकिस्तान की फौज में बहुत-से काश्मीरी भी हैं। पाकिस्तान ने उनमे से कुछ को यहा पर भेज दिया है।" मैंने उनसे फिर पूछा, "तुम्हारी पढ़ाई का क्या प्रबंध है ?" उन्होंने जवाब दिया, "हमें इन्होने कालिज में दाखिल करा दिया है।" मैंने कहा, "मैं देख रही हूं कि यहा पर हमारे साथ बहुत ही अच्छा सलूक किया जा रहा है। यहां पर हिन्दू-मुस्लिम का सवाल ही नही है।" वे बोले, "इस कैम्प का चलानेवाला बड़ा ही नेक आदमी है। वह सबको समझाता है कि तुम्हे मजहबी तअस्सुब से दूर रहना चाहिये। और उसीके कहने पर सब काश्मीरी चलते है।" मेरा कौतूहल बढ़ा। मैंने पूछा, "यह जी० के० रेड्डी कौन है ?" इसपर उन्होंने बताया कि वह काश्मीर में एक अखबार का एडीटर था। कुछ महीने हुए हुकूमत काश्मीर ने इसका अखबार जब्त कर लिया और उसे वहा से निकाल दिया। यह सुनकर मैं समझ गई कि जो आदमी रात को मुझसे कह रहा था कि वह मेहता साहब का मित्र है, शायद यह वही हो। मुझे यह भी याद आया कि कुछ महीने पहिले जबकि यह रावलपिंडी को जा रहे थे, इन्हें मुजफ्फराबाद में गिरफ्तार भी किया गया था। मुजफ्फराबाद का कर्नल उन्हे वही खत्म करना चाहता था, परन्तु मेहता साहब ने उसे ऐसा करने से रोका था। यह सचमुच उनका मित्र था। अब सब बातें मेरी समझ में आने लगी। यह भी भरोसा हुआ कि समय पर यह जरूर हमारी मदद करेगा।

इतने मे एक सिपाही अन्दर आया। यह बिल्कुल जापानी-सा मालूम पड़ता था। वह मेरे पास आकर बैठ गया। कहने लगा, "माताजी, मैं भी काश्मीरी हू। मैं कई साल से जापान में था। आजकल पाकिस्तान की फौज में हूं। अभी मैंने सुना कि हमारे हमवतनी आये हैं, तो मैं सलाम करने चला आया।" इस तरह कई लोग आने-जाने लगे। इन सबकी जबान पर वतन ही वतन का शब्द था। बीच में कैम्प का एक और अफसर भी आया। वह

बताने लगा, "मै भी मेहता साहब का दोस्त हू।" इन सब लोगों मे वतन की एक अजीब-ओ-गरीब कशिश मैने देखी। फिर इस कैम्प का इंचार्ज आया और दोनों लड़को को अपने संग ले गया। श्री रेड्डी भी इनके साथ थे। बाजार जाकर उन्होंने दोनो बच्चो को जूते लेकर दिये। बच्चे पहनने से इन्कार कर रहे थे। परन्तु वे नही माने। जूतो के वगैर इन दोनो के पैरों मे बिवाइया फट गई थी। बड़े लड़के सुरेश को स्वेटर भी ले दिया। उसने केवल एक ही कमीज पहनी थी। फिर उस इचार्ज ने इन्हे अपनी कोठी पर ले जाकर चाय पिलाई। काफी देर बाद फिर वे उन्हे मेरे पास ले आए। बड़े लड़के ने आते ही मुझे जूते दिखाये। परन्तु उसकी आखे लज्जा के कारण उठती नही थी और उनमें आंसू भी भर आये थे। मैने कैम्प-इंचार्ज से कहा, "आपने यह तकलीफ क्यो उठाई ?" वह बोला, "बच्चे तो लेते ही नही थे। मैने जोर दिया, तब इन्होने लिये। इन्हे देखिये, इनके पैरो की क्या हालत है ? आपको हमसे सकोच नही करना चाहिये। मेहता साहब हमारे दोस्त थे।" यह कहकर वे चले गये।

समय पर वहा के सब शरणार्थी ट्रेनिंग लेने गये। मेरे दोनों लड़के भी उनके साथ गये। छोटा तो बहुत खुश था। उसके तो यह मन की बात थी, कभी एक की बंदूक लेता तो कभी दूसरे की। "बदूक कैसे चलाते है ?" यही वह पूछ रहा था।

दिन के १२ बजे वे लोग, कैप का इचार्ज और श्री रेड्डी आकर मुझसे कहने लगे कि अगर हम उनकी कोठी पर चलकर रहे, तो बहुत अच्छा हो। वहां पर हमारी देख-रेख अच्छी तरह हो सकेगी। और अभी यह भी मालूम नही कि लोगो को जम्मू भेजने का इन्तिजाम कबतक होगा। उन्होने यह भी कहा कि वे हमें वहा अकेले नही रख सकते। क्योकि हालत अच्छी नही है। यह कहकर वे चले गये। मैने श्रीमती मोदी से सलाह ली। एक अनजान व्यक्ति के यहां रहने को वे तैयार नही थी। वैसे तो यह बात ठीक ही थी, परन्तु यह कैप भी तो उन्ही के आधीन था। चारों ओर आदमी-ही-आदमी नजर आते थे। मैने कहा, "आपको चलना होगा। वहां रहकर हम अपने

वतन का बहुत काम कर सकेंगी। मैं यहा पर बहुत से काश्मीरियो से मिली। मैंने जहां तक इन सबको देखा या समझा, यही जान पड़ता है कि इन्हें साम्प्रदायिकता से नफरत है। मैं कुछ दिन यहां पर ठहरना चाहती हूं ताकि इन लोगों से मिलूं और देखूं कि इनकी अपने वतन के लिये क्या राय है।" इसपर वह चलने को राजी हो गई। यहा आकर मुझे काश्मीर की बहुत-सी बातो का ज्ञान हुआ। जैसे हमला करनेवाले कहा तक पहुचे थे? हिन्दुस्तान की फौज समय पर कैसे पहुंची और उसने कैसे काश्मीर की रक्षा की। जम्मू की भी बहुत-सी बाते मालूम हुई। यहां आकर हमें लगा कि हम परम सुख में है, हालाकि हमारा यहा रहना भी खतरे से खाली नहीं था। प्रतिक्षण यही भय लगा रहता था कि न जाने आगे क्या होनेवाला है। वैसे भी जम्मू तक पहुचना टेढी खीर थी। सारा रास्ता कबाइलियो से भरा हुआ था। यहां पर अपने कई मित्र दिखाई दे रहे थे। मुजफ्फराबाद से हम अपने आपको यहां पर ज्यादा महफूज़ समझने लगे थे। तभी कैंप के कुछ आदमी मेरे पास आकर बैठ गये और कहने लगे, "हमारे मा, बाप और खान्दान का न जाने क्या हाल है। क्या हम कभी उनसे मिल सकेंगे।" मैंने कहा, "यह तो तुम जानते ही हो कि हमलावर जहा पहुचते है, वहा आग लगाकर सब-कुछ बरबाद कर देते है और फिर गोलियो से बेगुनाह रिआया को मारते हैं। ऐसी हालत में क्या तुम यकीन करते हो कि तुम्हारे मां-बाप जीते बचे होंगे। यह तो इन लोगों का बहाना है कि काश्मीरी मुसलमानो को हम हिफाजत से रखेंगे और उन्हे खास रिआयत देंगे। मुज़फ्फराबाद में कई काश्मीरियों को इन्होंने नेशनल होने के जुर्म में मौत के घाट उतार दिया है और कई लोगो के मकान लूट लिये है। यह सब देखकर मैं कल से हैरान हूं कि तुम किसका साथ दे रहे हो? तुम अपने वतन को बरबाद करनेवालो के साथ रहकर कितना बडा पाप कर रहे हो। तुम्हें शेख साहब को देखना चाहिये कि वह अपना खून देकर अपने प्यारे वतन को बचा रहा है। उसकी हुकूमत में साम्प्रदायिकता का नाम नहीं है। इधर इस लडाई को इस्लामी लड़ाई कह-कहकर उभारा जा रहा है। मैं यह सब किसीके पक्षपात के

कारण नही कह रही हू। किन्तु जो सच वात है वही कह रही हू। जो गड्ढा अत्याचारियो ने खोदा है, वे खुद ही उसमे गिरेगे।"

"हां, जम्मू मे जो कुछ गुण्डो ने किया है, उसका मुझे दुःख है। उन्होने यह अच्छा नही किया। इसी कारण वह आगे वढ़ने से रुक गये।"

मेरी वाते सुनकर उनमे से कई कहने लगे, "हम अपने वतन को हर आफत से वचाना चाहते है, लेकिन क्या करें। यहा फंस गये है।" यह शब्द उन्होने धीरे-से कहे, मै उनका मर्म समझ गई।

उधर जी० के० रेड्डी लारी लेकर आये, जिसपर 'आजाद काश्मीर' लिखा हुआ था। हम सव उसपर सवार हुये। उस वस पर एक अमरीकन फौजी भी था। उसने फौजी वरदी पहनी थी और सिर पर पगडी वांधी थी। वह हमारे साथ चला और इसके अतिरिक्त तीन चार काश्मीरी, जो वन्दूको और कारतूसो से सज्जित थे, साथ वैठे। ये लोग हमे पुछ हाउस ले गये। यह पुछ प्रात के राजा की वहुत वडी कोठी है। यहां कई मोटर साइकिले तथा लारियां थी। सव पर 'आजाद काश्मीर' लिखा हुआ था। वाग के अहाते मे दफ्तर था जहा प्रत्येक वस्तु पर 'आजाद काश्मीर' लिखा था। आफिस मे कई आदमी काम कर रहे थे। हमे अन्दर ले जाया गया और एक सजे हुए कमरे मे ठहराया गया। वहा पर सव आवश्यक सामान था।

आज तीन मास के वाद हमें यह चीजे देखने का अवसर मिला था। जव मै अन्दर दाखिल हुई, तो मैने सामने ही एक वड़ा कदावर आईना रखा हुआ देखा। जव मै इसके सामने आई, तो मुझे अपनी शकल दिखाई दी। तीन मास के वाद मै अपनी सूरत देखकर काप उठी। उस समय मुझे ऐसा मालूम हुआ, मानो मै किसी भिखारिन को देख रही हू। मै वहा खड़ी नही रह सकी। मेरे पाव कापने लगे। सिर मे चक्कर आ गया और दोनों हाथो से उसे पकडकर मै वही वैठ गई। न जाने कितना पानी मेरी आंखो से निकला होगा। जन्म से लेकर आज तक का सारा जीवन मेरी आंखो के सामने घूम गया। वहुत देर तक मै विमूढ-सी सोचती रही। पर सोचने की भी एक सीमा है। आखिर मैने अपने आपको संभाला।

हमारे खाने के बारे मे उन्होने कहा, "आपके नौकर आपका खाना बनायेंगे।" उनके खानसामा और बैरे वगैरह सब काश्मीरी मुसलमान थे। सब हमे देखकर खुश हो रहे थे।

इसी कोठी में श्री जी० के० रेड्डी, ब्रिगेडियर रसल के० हेजर (अमरीकन) और एक मुस्लिम भाई रहते थे। यह सब कैम्प उन्हींके आधीन था, सब-के-सब हमारी देख-रेख में लग गए। हमारे नहाने के लिये पानी गरम कराया गया। मैंने सब बच्चो को नहलाया। नहलाने से टब का पानी एकदम मैला पड जाता था। तीन महीने की मैल बदन पर लगी हुई थी। हालांकि वहा पर भी मै इन्हे कभी-कभी नहला देती थी परन्तु इतना पानी कहा मिलता था कि अच्छी तरह साबुन का प्रयोग किया जा सकता। स्नानादि के बाद हमारे कमरे में एक बैरे ने आग जला दी। सब बडे आराम से बैठ गए। रात का खाना आया और सबने खाया। बहुत दिन के बाद हमें यह सब आराम मिले थे, इसलिए सबको नींद ने आ घेरा। बच्चों को सुलाकर मै बाहर निकली। देखा, दो काश्मीरी राइफिले लेकर हमारे दरवाजे पर पहरा दे रहे है। उन्हे देखकर मै भी निश्चित होकर सो गई।

प्रातःकाल ब्रिगेडियर वगैरह हमारे कमरे मे आये और कहने लगे, "आप लोगो को फिक्र नही करनी चाहिये। जल्दी ही हम आपको जम्मू पहुंचाने का इन्तिजाम करेंगे।" ब्रिगेडियर ने यह भी कहा कि वह खुद हमारे साथ चलेगा, ताकि हमें रास्ते मे कोई तकलीफ न हो।

बाहर से अनेक काश्मीरी, जिनमें दूकानदार, फैक्टरी के मुलाजिम, आदि थे हमारे बारे में सुनकर वहा इकट्ठे होने लगे। जिस काश्मीरी ने भी सुना, वह हमसे मिलने आया। कई तो बच्चो के लिये फल तक लेकर आये थे। इनमे से बहुत-से मेहता साहब के मित्र भी थे। एक ने सबके पाव नाप लिये और सबके लिये जूते खरीदने गया। मैंने बहुत मना किया, परन्तु वह नही माना। बोला, "हम आप लोगो को ऐसे हाल मे नहीं देख सकते। आप हमारे मेहमान हैं।" श्रीमती मोदी और मैंने जूते नही पहने। बाकी सबको उन्होंने पहना दिये। मै इन लोगो का प्रेम देखकर कुछ नही कह सकी।

कितना भी क्यों न हो, मैने काश्मीरी मुसलमानो के अन्दर साम्प्रदायिकता का ज़हर वहुत कम पाया है। किसीके वहकावे में आकर कुछ क्षण के लिए भले ही वे रास्ते से हट गये हो, पर उनमें यह ज़हर ज्यादा समय तक नही टिक सकता। जिस मिट्टी से वे वने है उसका असर उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। जव मैंने देखा कि वहा पर कोई गैर नही है तो मैंने उनसे कहा, "क्या तुम अपने वतन का नाश होते देख सकोगे? तुम किस भूल मे हो ? जब ये लोग वहां पहुचेंगे तो क्या तुम्हारे रिश्तेदारों को छोड देंगे। इन्होंने जो कुछ किया, इन्सानियत को छोडकर किया है। अगर जंग ही करना था तो वहादुरो की तरह करते, न कि चोरो की तरह धन और औरतो की अस्मत लूटते फिरते। इन्होंने इन्साफ के नाम को धब्बा लगाया है।" ये वाते सुनकर उनमे से एक आदमी कहने लगा, "हमने पाकिस्तानवालो से कहा था कि पठानो को ऐसे वेलगाम न छोडो। लेकिन उन्होंने नही माना।" मैंने कहा, "तुम्हे सच्चाई का साथ देना चाहिये और इन्साफ पर चलना चाहिये। इस-पर एक आदमी ने वहुत धीरे से कहा, "यहां पर ज्यादातर शेख साहव के हामी है। वस, इससे ज्यादा मैं आपको कुछ नही वता सकता।" थोड़ी देर वाते करने के वाद वे चले गये।

दिन मे दुर्रानी आया और कहने लगा, "चौधरी साहव को किसी काम से कही वाहर जाना पड़ा है। अव मै आपको एक-दो दिन में जम्मूं की सरहद तक पहुचा आऊगा।"

उसके जाने के वाद आजाद काश्मीर का डिफेन्स मिनिस्टर अली अहमद शाह मेरे पास आया और देर तक मेहता साहव के वारे में वातें करता रहा। यह पुंछ का रहनेवाला था। कहने लगा, "हम सव पुछ में कितनी अच्छी तरह मिलकर रहते थे। न कही कुछ था और न ही ऐसा होने की कोई उम्मीद थी।" मैंने उन्हे मेहता साहव के फोटो दिखलाये जो कि वहा की गवर्नमेंट की प्रदर्शनी में लिये गये थे। उसमें पुछ के सव अफसर थे। एक आह खीचकर कुछ समय तक वह चुप वैठा रहा, शायद उसे वतन की याद आ रही थी। फिर मुझसे कहने लगा, "आपको किस चीज की जरूरत है ? कहिये।"

वहा श्री जी० के० रेड्डी वगैरह भी बैठे हुये थे। सब कहने लगे, "इनके पास आप क्या देख रहे है ? कपड़े की इन्हे बेहद जरूरत है ?" इसपर मैंने उनसे प्रार्थनापूर्वक कहा, "मै कुछ नही लेना चाहती। जब तक लिये वगैर काम चल नही सकता था, तब तक बहुत लिया। पर अब तो दो दिन की बात है। अब मैं कुछ न लूगी। आप सब लोग मेरे लिये इतना कुछ कर रहे हैं। इनके लिये मैं आपको धन्यवाद देती हू।" कुछ देर बाद वह चला गया और उनने कपडे के कई थान भेजे। परन्तु मैंने वे लेने से इन्कार कर दिया। श्री जी० के० रेड्डी ने बहुत कहा, पर मैं नही मानी। मैंने श्री रेड्डी तथा उसके साथियों से मुजफ्फराबाद के कुछ लोगों को निकलवाने के लिये प्रार्थना की। आते समय उन्होंने हमसे कहा था कि हम उन्हें भूलें नही, उनके छुटकारे का प्रबन्ध करें। मैंने तब उन्हे तसल्ली देते हुए कहा था कि जब समय मिलेगा तो मैं उनके निकलवाने की अवश्य कोशिश करूगी। इन सबने उनके नाम नोट कर लिये और मुझे तसल्ली दी कि वे अवश्य ही उन लोगो की सहायता करेंगे। उन्होने मुझसे कहा कि अलीबेग कैम्प, मीरपुर की दशा बहुत बुरी है। अगर भारत से या जम्मू से उसके लिये कुछ आर्थिक सहायता मिले, तो मैं उनके पास जरूर भिजवाऊ। अलीबेग कैम्प की बातें सुनकर मन बहुत ही दुःखी हुआ।

श्री रेड्डी ने कहा कि वे लोग पैट्रोल का प्रबन्ध कर रहे है। परसो हमें जम्मू सीमा तक पहुचा देंगे। ब्रिगेडियर रसल के० हेजर एक कैमरा लाया और हमसे कहने लगा, कि अगर हमें कोई एतराज न हो तो वह हम सबका एक फोटो लें। इन दिनो की यादगार सबके पास रहेगी। मुझे कोई एतराज नहीं था। इसपर उसने हम सबका एक ग्रुप फोटो लिया। उसका बैरा हमारे खाने-पीने का खयाल खास तौर पर रखता था और बच्चो को बहुत अच्छी तरह खिलाता था। दो दिन ही में हम लोगो की हालत सुधर गई।

उसी दिन रात के नौ बजे मैं अपने कमरे से निकल कर इन लोगो के

कमरे की ओर चली। जाते समय मैंने अपने साथियो से कहा "आज मै खतरे मे पाव रख रही हू। मै नही जानती इसका क्या परिणाम होगा? परन्तु मै अपने वतन के लिये यह काम जरूर करूगी।" वे सब मना करने लगे और कहने लगे कि मुझे अपनी जिम्मेदारियो और स्थिति का ध्यान रखना चाहिए परन्तु मै वतन के सामने किसी भी चीज की कीमत नही समझती थी इसलिये मै उनके कमरे मे गई और इधर-उधर की बाते करने के पश्चात् बोली, "मै हैरान हू कि आप जैसे ऊचे विचारो के व्यक्ति इन लोगो के साथ है जिन्होने बिना सोचे-समझे बेगुनाहो पर अत्याचार ढाये है। तीन दिन में ही मैंने यहां देख लिया है कि आपने इन लोगो को हिन्दू-मुस्लिम एकता का पाठ पढाया है। मैंने और भी बहुत-सी अच्छी बातें देखी है। इसलिए मै कहती हू कि आपको इनका साथ छोडना चाहिये। अगर आप ऐसा नही करेंगे तो मै ईश्वर से प्रार्थना करूगी कि आपको तीन दिन के अन्दर ही यहा से त्याग-पत्र देना पड़े। मै जानती हू कि मै जो-कुछ कह रही हू वह मुझे कहना न चाहिये परन्तु मै मजबूर हू। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मुझे डर नही लगता।" मेरी बाते सुनकर उनमें से एक व्यक्ति बोला, "अब तो काश्मीर थोडे दिन मे पाकिस्तान के कब्जे मे आ जायेगा। कल ५०० पठान जम्मू सतवारी तक पहुच गये है।" मैंने कहा, "आप सब बाते जानते है परन्तु मै कुछ जाने बगैर आपसे कहती हू कि ये लोग कभी कामयाब नही हो सकते है। इन्होने जो गड्ढा खोदा है उसमें वे खुद ही गिरेंगे। बेगुनाहो के खून इन्हे कभी आगे नही बढने देंगे।"

जम्मू से हमारे तबादले की दो दिन तक कोई इत्तला नही आई परन्तु तीसरे दिन आ गई। हमे तीन दिन रुकना पड़ा। भगवान् की करनी, इन लोगो को आपसी फूट के कारण तीन दिन के अन्दर ही त्यागपत्र देना पडा। हमारे सामने ही इन्होने चार्ज दे दिया।

एक भला व्यक्ति, जिसकी मै जितनी तारीफ करूं थोडी है, जात का मुसलमान और बडा ही नेक और उच्च विचार का था। उसने इस कठिन समय मे मेरी जो सहायता की उसे शायद ही मै इस जन्म मे भूलूगी। वह

मुझसे कहा करता था, "बहन! तुम चिन्ता न करो। तुम्हारे बच्चों की पढाई मेरे जिम्मे। जहा तक होगा मै तुम्हारी मदद करूगा। तुम हिन्दुस्तान जाकर जबतक चाहो मेरे घर पर रह सकती हो। उसने एक तसवीह (जप माला) मुझे और एक श्रीमती मोदी को दी और कहा, "यह मेरा छोटा-सा तोहफा है। जब कभी तुमपर कोई मुसीबत आयेगी तो इससे तुम्हे तस्कीन होगी।" मैने उसको धन्यवाद दिया।

: २३ :

मुक्ति के स्थान पर जेल

एक दिन दुर्रानी सब प्रबन्ध करने के बाद हमारे पास आया और कहने लगा, "कल के लिये हमे तैयार रहना चाहिये।" अगले दिन हम वहा एक सप्ताह रह कर चले। श्री जी० के० रेड्डी और ब्रिगेडियर किसी कार्यवश हमारे साथ न चल सके पर जिस भले व्यक्ति का मै पीछे जिक्र कर आई हू वह हमारे साथ चलने को तैयार हुआ और दुर्रानी तो था ही। इसके अतिरिक्त आठ काश्मीरी बडी हमदर्दी से हमारे साथ चले।

बहुत-सा सफर तय करने के बाद जब हम जेहलम पुल पर पहुचे तो पठानो ने सामने आकर लारी को रोक दिया। कुछ लोग लारी की छत पर चढ गये और कुछ आस-पास खडे होगये। कहने लगे, "हमें भी साथ ले चलो। हम भी मोर्चे पर जायेंगे।" हमारे सब साथी नीचे उतरे और उन्हे समझाने लगे कि इसमे जगह नही है। परन्तु वे तो कुछ भी सुनने को तैयार नही थे। उन्होने बन्दूके तानकर कहा, "अगर एक कदम भी आगे बढने की कोशिश की तो हम फायर कर देंगे।" देखने-ही-देखते भीड बढ गई। ज्यादातर उसमें पठान ही थे। रास्ते मे भी हमने थोडा-सा बोझ और बन्दूके उठाये हुए पठान-ही-पठान देखे थे जो मोर्चे पर पैदल चले जा रहे थे। एकाएक यह एक नई विपत्ति आगई। हम लोग बहुत घबराये। परन्तु इतना शोर मचाने के बावजूद उन्होने लारी के अन्दर झाक कर नही देखा। नही तो आफत आजाती।

इतने मे एक पुलिस अफसर आया और दुर्रानी तथा दूसरे व्यक्तियों से पूछने लगा, "तुम कहां जा रहे हो ?" दुर्रानी ने जवाव दिया, "यह आजाद काश्मीर की लारी है। हम इन लोगों को जम्मू सीमा पर पहुंचाने जा रहे हैं।" उसने कहा, "तुम तवतक नही जा सकते, जवतक तुम्हारे पास रावलपिंडी के कमिश्नर का पास नही होगा।" इसपर दूसरा साथी बोला, "हमें पास की जरूरत नही है। हम कई महीनों से आजाद काश्मीर में काम कर रहे है। आप हमारे काम मे रुकावट क्यो डालते हैं ?" पुलिस अफसर ने वताया कि अव ऊपर के अधिकारियो से ऐसी ही आज्ञा मिली है। आप आफिस चल कर पता ले। अव मेरा माथा ठनका। मै भगवान् से सव कुछ सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करने लगी।

जव उन्होने देखा कि लारी अव आगे नही जा रही है तो सव पठान लारी पर से उतर गये। एक आफिस के आगे लारी खड़ी की गई। और हमारे साथवाला व्यक्ति अन्दर गया। मैंने दुर्रानी से कहा, "भाई, तुम सभल कर रहना ऐसा न हो कि मेरी खातिर तुमपर कोई आच आये। मुझे कुछ अच्छे शकुन नही दिखाई दे रहे है। न जाने अव किन विपत्तियो का सामना करना पड़े।" वह कहने लगा, "आप मेरी फिक्र न करे। कोई वात नही है। आज नही तो कल हम आपको पहुंचा देंगे।" इतने में वह व्यक्ति अन्दर से आया। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। लारी पर वैठते हुए कहने लगा, "इन लोगों की चाले समझ में नही आती। हर वात में शक करते हैं। अव हम वापस रावलपिंडी जा रहे हैं। वहां कमिश्नर की कोठी पर चलकर अभी पास ले लेंगे और कल आप लोगो को जम्मू की सरहद पर पहुंचा देंगे। घवराने की कोई वात नही है।" उसकी ये वाते सुनकर मैं समझ गई कि वह यह सव हमारे धीरज के लिये कह रहा है। मामला कुछ पेचीदा होगया है। दुर्रानी वही उतर गया। कहने लगा, "मुझे यहां पर कुछ काम है। कल आप लोग पास लेकर आयेंगे तो मै यही पर आपसे मिलूंगा।"

हमारी वस रावलपिंडी वापस लौटी। वहा पहुंचते ही हम सीधे

कमिश्नर के बगले पर पहुंचे। हमारे साथवाला व्यक्ति उतर कर अन्दर गया। फिर कुछ देर बाद बाहर आकर इधर-उधर टहलने लगा। वह कभी अन्दर जाता और कभी बाहर आता। चेहरा उसका क्रोध के कारण लाल हो रहा था। वह बडबडा रहा था, "ये हमपर यकीन नही करते जैसे हम चोर हैं। इतना काम करते हुए भी ये हमपर शक करते है।" उसने श्री जी० के० रेड्डी को फोन किया और वह शीघ्र ही मोटर साइकिल पर वहां पहुंच गया। सबने अन्दर जाकर कुछ बाते की जो मुझे नही मालूम हो सकी। इसके बाद वे सब हम लोगो को लेकर 'गुड हाउस' आये। यहां आकर उन्होने पहरे के लिये कुछ पुलिस मगाई। उस समय यह मामला मेरी समझ में नही आ रहा था। किसीसे पूछ भी नही सकती थी। वे सब घबराये हुए थे। रात को काफी पहरा था। ब्रिगेडियर भी कमरे के एक-एक कोने को हाथ में पिस्तौल लिये देख रहा था। वह रात भर इसी तरह घूमता रहा। हमें इन लोगो ने यह नही बताया कि कुछ पठान आज रात को यहां पर हमला करनेवाले है। उन्हे मालूम होगया था कि यहा पर कुछ हिन्दू औरते है। खैर! रात को हमला नही हुआ। मै यह नही जान पाई कि यह सब कैसे रुका।

श्री जी० के० रेड्डी वगैरह ने हमें विश्वास दिलाया कि दो-तीन रोज मे पास मिल जायगा तो वे हमको जम्मू सीमा तक पहुचा देगे और अब वे लोग भी यहा पर नही रहेगे। सब के चेहरो मे उदासी टपक रही थी। इसी तरह पास की इन्तिजार मे दो तीन दिन निकल गये पर पास न मिला। एक दिन श्री रेड्डी ने आकर कहा, "अब आपको जम्मू नही भेजा जायगा। आपका जाना बन्द होगया है पर हम कोशिश कर रहे है कि ये लोग आपको पेशावर भेज दें। वहा से आपको हिन्दुस्तान भिजवाया जा सकता है। हम पेशावर के प्राइम मिनिस्टर से बाते कर रहे है। आज वह यहा पर आने वाले है। शाम को उनसे सब बात तय करेगे। वह हमारे दोस्त है जहा तक होगा वह आपको हिफाजत से भिजवा देंगे।" शाम को जब श्री रेड्डी और वही व्यक्ति जो हम लोगो को पहुंचाने गया था, कयूम साहब से मिलने

जाने लगे तो मेरे छोटे लड़के विमल से कहा, "तू कहता है कि मैं पठानों से नही डरता, चल आज तुझे एक वहुत वड़ा पठान दिखाये। देखते है कि तू उससे डरता है या नही।" वह जाने के लिए तैयार होगया और वे लोग उसे साथ लेकर मिलने गये। परन्तु वह कही वाहर गया हुआ था। दूसरे दिन ये लोग उसके पास फिर गये और वापस आकर मुझे वताया, कि अव ये लोग हमें जेल भेज रहे है। उन्होने वहुत कोशिश की पर सव वेकार हुआ। हां, जेल मे वे हमें यूरोपियन वार्ड मे रखा सकने मे सफल होगये है। यह सुनकर मैं कुछ घवरा गई।*

मैंने सव वच्चो, श्रीमती मोदी तथा दोनो नौकर ओम् और जोवा को जेल जाने की वात वताई। वे सव घवराये और मुझे कहने लगे कि मैं जो हर एक वात पर विश्वास कर लेती हू यह उसी का फल है। चौधरी तो उस दिन से फिर दिखाई ही नही दिया। दुर्रानी ने जव कठिनाई देखी तो वही रह गया। मैं क्या कहती। सोचा कुछ था हुआ कुछ।

---

*उस समय मुझे किसी ने यह नही वताया कि जेल भेजने का क्या कारण है? हा, वहुत दिन वाद मुझे मालूम हुआ कि पाकिस्तान सरकार को फौजी पुलिस की सी० आई० डी० ने यह इत्तला दी थी कि मुझसे वहुत से काश्मीरी लोग मिले हुए है। मैंने उन्हें वहुत-कुछ कहा है वल्कि वहा के वहुत से फौजी भेद भी मैं ले गई हूं। इसलिये मेरा जम्मू जाना खतरनाक है। मुझे जेल मे रखना चाहिए।

यह सव गलत वात थी। मैंने कोई फौजी भेद नही लिया था। न मुझे किसी आदमी ने यहां के फौजी भेद वताये थे। हां, मैंने केवल इतना ही किया था कि पाकिस्तान के वारे मे काश्मीरियों की राय पूछी थी। यह कोई जुर्म नही था। कई व्यक्तियो ने मझे यहां तक कहा था कि जव तुम भारत जाओ तो हमारे संदेश ले जाना। और हमारी अमुक अमुक वात पंडित नेहरू और शेख साहव से कहना। यह वातें भी कोई फौजी भेद की न थी।

सब आनेवाली नई विपत्ति का इंतजार करने लगे। एक दिन शाम को जेल की लारी छः सिपाही और दो पुलिस के अफसरों को लेकर आई। श्री रेड्डी और उनके साथी ने एक बोरी में बहुत-सी खाने-पीने की सामग्री हमारे साथ ले जाने के लिए रखी। मैंने उन्हें बहुत रोका परन्तु वह कहते जाते थे कि न जाने कब कैसा समय आयगा। उस समय इसे इस्तेमाल कीजियेगा। हमने सब चीजें इकट्ठी की। वह समय बड़ा दर्दनाक था। उनके घर के सब नौकर तथा छोटे-बड़ों की आंखों में आंसू थे। कई काश्मीरी बाहर से भी आये हुए थे। उनकी आखें भी डबडबा आयीं। खानसामा ने आकर एक अफसर को आसू भरी आखों से कहा, "खुदा के लिये साहब, इनको अच्छी तरह रखना।" वह हैरान होकर पूछने लगा, "ये तुम्हारे कौन लगते है?" उसने उत्तर दिया, "ये हमारे वतनी हैं।" यह कहते-कहते उसका गला भर आया।

हम सब लारी के पास आये। बच्चे सहमे हुए थे। हम भी घबराये हुए थे, परन्तु लाचार थे। जब हम लारी पर बैठने लगे तो श्री जी० के० रेड्डी ने मुझे तीस रुपये दिये। मैंने लेने से इन्कार किया। वह कहने लगा, "हो सकता है किसी समय बच्चों के लिये जरूरत पडे, रख लीजिये।" पुलिस अफसर भी कहने लगा, "रख लीजिये न, बतौर कर्ज के ही सही, रख लीजिये। जब आपके पास होगा तो वापस कर देना।" मैंने ले लिये। श्री रेड्डी ने कहा, "आपको कुछ दिन वहां पर रहना पड़ेगा। फिर आपको यह लोग जम्मू भिजवा देंगे।" मैंने श्री रेड्डी और उनके साथी को बहुत धन्यवाद दिया और कहा, "हमारे लिये आपने इतने दिन तक जो कुछ किया उसे मैं कभी भी नहीं भूलूंगी।" सबने बच्चों को प्यार से लारी पर बिठाया। मैं भी लारी पर सवार हो गई। इतने में वह काश्मीरी बैरा आया और उसने मेरा हाथ पकड़ कर अपने हृदय पर रखा। मैंने देखा, उसका हृदय धक-धक कर रहा था। उसने रोते हुए कहा, "अम्मा! ये बेगुनाह बच्चों को जेल ले जा रहे हैं। मेरा तो दिल फटा जा रहा है।"

मैंने उसे धीरज देकर कहा, "प्रभु हमारे साथ हैं। उन्होंने हर जगह

हमारी सहायता की है वही अब भी करेगा।" इस बैरे ने हम लोगो की बहुत खिदमत की थी। वह बच्चो को बड़े ही लाड-प्यार से खिलाता था । उसके प्रेम के कारण थोड़े ही दिनो में सबके शरीरो मे ताकत आने लगी थी। अब हमारे लिये वे आराम के दिन भी स्वप्न बन गये।

हम जेल पहुंचे। बाहर फाटक पर लारी रोकी गयी और हमें अन्दर ले जाया गया। एक अफसर ने कहा, "आपको बी क्लास में रखा जायगा। लेकिन नौकर आपके साथ नही जा सकते।" मैंने कहा, "तब तो फिर जहां पर नौकर रहेगे वही पर हम भी रहेगे। हमे बी क्लास की जरूरत नही है।" मैं जानती थी कि अगर हमने इनका साथ छोड़ दिया तो वे खत्म कर दिये जायेंगे। जेल के बाहर रावलपिंडी में कौन किसी हिंदू को जिन्दा देख सकता था। आखिर मेरे बहुत कहने पर वे मान गये।

जेल का बडा फाटक खुला। काफी अन्दर चले जाने के बाद एक और दरवाजा खुला। उसके अन्दर एक छोटा-सा बाग, बीच में बड़ा-सा आंगन और एक तरफ बड़ा-सा बरांडा था। उसमे तीन चार कमरे थे । वही कमरे हमको दिये गये। जगह अच्छी साफ-सुथरी थी और काफी फूल वहां पर लगे हुए थे। साथ मे एक रसोई भी थी। हम यहां आ गये तब उन्होंने पूछा, "बताओ तुम्हारे पास क्या है? माफ करना जेल का कानून ही ऐसा है?" मैंने वह जेवर जो मुजफ्फराबाद में मेरे पास था और वह तीस रुपये जो श्री रेड्डी ने दिये थे निकाल कर दिये। जेवर उन्होंने तोल लिया और कहा, "यह आप नही रख सकती। यह यहां के दरोगा के पास रहेगा। जब आप जायेंगी तब आपको वापस दे दिया जायगा।" यहां पर जितने मुलाजिम और अफ़सर वगैरह थे सब बड़े आदर से पेश आ रहे थे जिसे देखकर हमें बड़ी तसल्ली हुई। दारोगा तो हिंदू था। पहले तो यह देखकर मैं हैरान हुई परन्तु बाद मे पता चला कि जेल के अफसर ने उसे अपनी जिम्मेदारी पर कुछ दिनो के लिये रख लिया है। जेल अधिकारियो ने हमारा काम करने के लिये कैदी मुकर्रर किये थे जो बारी-बारी से आकर हमारा काम कर जाते थे।

इस अहाते का दरवाजा बन्द रहता था और पठान उसकी रखवाली करते थे।

हमें खाने-पीने की काफी सामग्री मिलती थी। दूध, घी, अंडे वगैरह सब ही चीजें दी जाती थीं। इसके अलावा सब्जी भी काफी मिलती थी। बच्चों के खेलने के लिए कैरम बोर्ड, ताश तथा लूडो सब उन्होंने दिये थे। कुछ पुस्तकें भी दी थीं। मुझे पूजने के लिये श्रीकृष्ण की एक तस्वीर और धूप आदि तथा गीता और रामायण आदि पढ़ने के लिये भी मिली। यहां पर हम अपने आपको स्वतन्त्र महसूस करने लगे। कहां तो तीन मास तक बच्चे चैन की सांस भी नहीं ले सकते थे और वहां अब उन्हें इस प्रकार खेलकूद का अवसर और सुभीता मिला।

मैं और श्रीमती मोदी दोनों प्रातःकाल चार बजे उठकर बाहर आंगन में नल के नीचे खूब आनन्द से स्नान करती थीं। उस सुनसान जगह पर तारों की टिमटिमाहट में स्नान करना बहुत ही सुखद लगता था। सायंकाल के समय घंटों तक हम प्रेम से भगवान् का भजन करते थे। यहां पर किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं थी।

'ए' क्लास में कुछ मित्र 'नेता' थे। उन्होंने जब हमारे बारे में सुना तो कहला भेजा, "आपको फिक्र नहीं करनी चाहिए। अब तो थोड़े ही दिनों की कठिनाई है। शायद हम सब यहां से इकट्ठे जायेंगे। तब हम आपकी हर प्रकार से सहायता करेंगे। जैसे आपने अब तक हर बात का मुकाबला किया है उसी प्रकार आगे भी दृढ़ रहिये।"

उन दिनों यह खयाल किया जाता था कि जल्दी ही पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के कैदियों का तबादला हो जायगा। हमारा खयाल था कि हम यहां पर केवल चार पांच दिन के लिये आये हैं। परन्तु दिन गुजरते गये और हमारे जाने की बात भी दूर होती गयी। सारी पार्टी मुझे कोसने लगी कि तुमने यहां आकर गलती की। अब सारी उम्र यहीं पर सड़ना पड़ेगा। पर मैंने उन्हें समझा-बुझा कर शान्त किया और बताया कि भविष्य के बारे में कभी भी निराश नहीं होना चाहिए।

ऊपर मैंने जिस दारोगा साहव का जिक्र किया है वह घटो हमारे पास वैठा रहता था। अपने वच्चो को हमारे वच्चों के साथ खेलने के लिये भेजता था। वह हमसे कहा करता था कि न जाने ये लोग आपका इतना ख़याल क्यो रखते है ? शायद ऊपर से हिदायत है। एक दिन सचमुच इस वारे मे यहा के कमिश्नर का फोन भी आया था। श्रीमती मोदी के पैरों में कुछ तकलीफ हो गई थी। एक कम्पाउडर रोज आकर पट्टी कर जाता था। मेरी और श्रीमती मोदी की कमीजे विल्कुल फट गयी थी। जेल के दारोगा ने दो नई कमीजे और दो चप्पले वनवा दी थी। यहीं पर मैंने अपने पिता, देवरो तथा अन्य रिश्तेदारो को पत्र लिखे। यहा से काश्मीर को पत्र नही जा सकता था। इसलिये पहले उन्हे भारत मे एक परिचित के नाम भेजा गया। वहा से उन्होंने उन्हे काश्मीर भेज दिया। इस प्रकार तीन महीने के वाद मेरे रिश्तेदारो को मेरे वारे मे मालूम हुआ।

जो पठान हमारे दरवाजे पर पहरा देते थे वे कभी-कभी अन्दर आकर हमारे साथ वाते करते थे। कहते थे कि आजकल उन्हें वड़ी तकलीफ है। वे दिन-रात काम पर लगे रहते है, पर उनका ध्यान घर पर रहता है। आजकल कवाइलियो ने गांव-गांव में लूट-मार मचा रखी है। इन्हे सभालना अव वड़ा मुश्किल हो गया ह। कुछ को तो हुकूमत ने लड़ाई के लिये वुलाया है पर कुछ खुद ही लूट-खसोट करने आ गये है। यह लोग और भी कितनी ही वाते करते थे परन्तु मैं उन्हे यही समझाती कि प्रेम से काम लो और साम्प्रदायिकता को दूर फेंको। यह तुम्हारा साथ नही देगी। मैं देखती थी कि सव मेरी वातो को वड़े ध्यान से सुनते थे। कभी-कभी हम उन्हे खाना भी खिलाते थे।

तिथि के हिसाव से मेहता साहव को शहीद हुए तीन मास हुए और अष्टमी आयी, तो मैंने जेल-कर्मचारियो से कहा, "भाई! मेरे पास खाने-पीने का काफी सामान है मैं कुछ कैदियो को भोजन कराना चाहती हूं।" वे लोग मान गये और कुछ साधु कैदियो को भोजन कराने ले आये। इन दिनों वापू ने भारत मे आमरणव्रत रखना आरम्भ किया था। कुछ जेल के मुसलमान

कर्मचारी आकर मुझसे कहने लगे, "देखो ! हिंदुस्तान की चाल, वह सब तरफ रुख बदलता है।" मैंने उनसे कहा, "आज नहीं तो कल तुम लोग इस बात की बड़ी इज्जत करोगे। अभी तुम्हारे दिलों में द्वेष की अग्नि धधक रही है जब यह ठंडी हो जायगी तब तुम्हे भले-बुरे का ज्ञान होगा।"

: २४ :

फिर नरक में

इस जेल में दो सप्ताह व्यतीत हो गये। इन्ही दिनो दारोगा ने अपना परिवार अम्बाला भेज दिया। एक दिन रात को स्वप्न में मैंने एक वृद्ध महात्मा देखा। उसने मुझे कहा, "तीन दिन में तुम यहा से जा रही हो।" प्रात. काल मैंने सबको यह स्वप्न सुनाया तो किसी को विश्वास न आया। पर तीसरे दिन जब हम खाना खा रहे थे तो दारोगा ने आकर कहा, "आपको मुबारक हो। आप लोग आज जम्मू जा रहे है। शीघ्रतापूर्वक तैयार हो जाइये। परन्तु किसी दूसरे को पता नहीं लगना चाहिए। कमिश्नर की ऐसी ही हिदायत है।" हम सब तैयार होगये। सब प्रसन्न थे कि अब हमारे दु:खो का अन्त आ पहुचा है। ठीक चार बजे कमिश्नर ने दो अफसरो के साथ अपने यहा से स्टेशन वेगन भेजी। जब हम जाने लगे तो सब कैदी, कर्मचारी आदि जो इतने दिनो में हमारा काम कर रहे थे बडी हमदर्दी से प्रार्थनाए करने लगे कि ईश्वर इन बच्चो को कुशलता पूर्वक इनके वतन पहुचावे। जाते समय जेल का दारोगा जेवर और तीन रुपये मुझे वापस दे गया। मैंने सबको धन्यवाद दिया और कार पर सवार हुई। वह लोग हमें कमिश्नर की कोठी पर ले गये। वहा काफी फौजी सिपाही थे। एक मुसलमान हमसे आकर पूछने लगा, "क्या तुम गेरबनिया बनी हो?" मैंने कहा, "नही, हम हिंदू है गेरब नही है और न बनेंगे।" वह नाक-भौं सिकोड कर चला गया। इतने में दोनों अफसर आये। वह दोनो देखने में पठान लगते थे। उन्होंने हमें लारी पर बैठने को कहा। हम लारी पर बैठ गये। उसने

और भी कुछ आदमी थे जिनमे से एक मुज़फ्फरावाद का भी था। यह सब मुसलमान थे। मैंने पूछा, "ये अफसर कौन है ?" जवाव मिला, "एक वजीर वजारत, मीरपुर, पेशावर के प्राइम मिनिस्टर का भाई और दूसरा सी आई. डी. का सुपरिन्टेंडेट है। यह लोग आपको लेजाने के लिये आये हैं।" सी आई डी के अफसर ने हमारी लारी के शीशो पर परदे लगवा दिये ताकि वाहर के लोग न देख सकें। मुझसे आकर कहने लगा, "क्या करें ? हालत ऐसी ही खराव है। लोग कावू से वाहर हो गये हैं। यहां से आपको बड़ी हिफाज़त से ले जाना पडेगा।" आगे-आगे मोटर चली, उसके पीछे एक ट्रक जिस मे कुछ सैनिक तथा रजाइया भरी हुई थी। वाद मे हमारी लारी थी और उसके पीछे फिर एक और ट्रक था। हम सवका यही खयाल था कि ये लोग हमे जम्मूं सीमा पर ले जा रहे है ।

जव हम जेहलम पहुचे तो काफी अधेरा हो गया था। वहां पर हम रुके। और एक मकान के एक कमरे में सोये। प्रातःकाल हमारे कमरे मे वही मुज़फ्फरावाद वाला आदमी आया, जो लारी में हमारे साथ था। मैंने उससे पूछा, "यह लोग हमे जम्मू सीमा पर कव ले जायेगे ?" वह कहने लगा, "यह लोग आपको जम्मू नही, मीरपुर जिले मे ले जा रहे हैं।" यह सुनकर हम सव हैरान रह गये। उन्होने हमें धोखा क्यो दिया ? मैंने वजीर वजारत (डी. सी) को अपने कमरे मे वुलाया और पूछा, "हमे आप लोग कहा ले जा रहे हैं ?" वह कहने लगा, "मै आपको जिला मीरपुर ले जा रहा हू।" मैंने कहा, "आपने हमारे साथ धोखा किया। हम समझ रहे थे कि आप लोग हमे जम्मू सीमा पर ले जा रहे है। आप हमें फिर मुसीवत में फसाना चाहते हैं। क्या आपको उस प्रभु का डर नही ?" यह कहते हुए मेरा गला भर आया और आखो मे आसू आ गये।

वह कहने लगा, "आप फिक्र न करें। आपके साथ कोई धोखा नहीं किया गया है। मुझे आप नही पहचानती, मै भी काश्मीर मे सवजज था। मै आपके पति को जानता हूं। मै पेशावर के प्राइम मिनिस्टर का भाई हू।" उसने अपना नाम वताया और कहने लगा, "मुझे कुछ दिन पहले ही मालूम

हो गया था कि यह सब होने वाला है। इसलिये मैं अपने बच्चों को पेशावर पहुंचा आया था। अब मैं आजाद काश्मीर के साथ काम कर रहा हूं। क्या मेहता साहब को पता नही था कि यह सब होने वाला है ? उन्हें चाहिए था कि वे वहां से हट जाते या आप लोगों को श्रीनगर भेज देते।"

मैंने कहा, "मेहता साहब अपने परिवार और मुजफ्फराबाद के लोगो में भेद नही समझते थे। क्या उन सबकी जानों से हमारी जानें कीमती थीं ? अगर वह चाहते, तो उस समय भी छिपकर बच सकते थे; परन्तु उन्होंने कर्त्तव्य के आगे चार दिन की जिन्दगी को ठुकरा दिया।" वह कहने लगा, "खैर, उन्होंने जो किया अच्छा किया। पर इन बच्चों को और आपकी जिन्दगी कैसे कटेगी। क्या आपने कभी इसके बारे में भी सोचा है?" मैंने कहा, "उसकी मुझे कोई फिक्र नहीं है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि अच्छी बातो का नतीजा कभी बुरा नही होता। वह सत्य पर बलिदान हुए हैं और सत्य पर ही हम चल रहे हैं और वही हमारा साथ देगा।" इसपर वह बोला, "आपको कोई फिक्र नहीं करनी चाहिए। आपको हम अलीबेग कैम्प में नही भेजेंगे। आपके लिये हमने अभी दो हफ्ते पहले दुतियाल नामक जगह पर नया कैम्प खोला है। वहा पर एक बड़ा शरीफ बूढा ठेकेदार है। उसीके मकान मे यह कैम्प खोला गया है। मैंने बडे-बडे घरो की औरतो को,जो मुसलमानो के घरों में थीं, निकलवाकर यहा पर रखा है। वहा से सभी को एक साथ हिन्दुस्तान भिजवाया जायगा। उनके बदले मे हमें मुसल्मान औरतें वहा से मिलेंगी। आप आजाद काश्मीर के कैदी है इस लिये आपको रावलपिंडी में नही रखा जा सकता। मैं आज दिन में काम पर जा रहा हूं। शाम को आकर आपको दुतियाल पहुंचा दूंगा।" मेरी बडी लडकी वीणा ने उसे पहचान लिया। पूछा, "आपकी लड़की मेरी क्लासफेलो थी, अब वह कहा पर है ?' इसपर वह कुछ समय चुप रहा और फिर ठंडी आह भर कर कहने लगा, "वह सब लोग पेशावर मे है। तुम्हें फिक्र नहीं करनी चाहिये, बेटी। सब अच्छा होगा। मैं आज-कल यहा का डी० सी० हूं। मै आप लोगो का हर तरह खयाल रखूंगा।"

इतना कहकर वह चला गया ।

मै विचार करने लगी कि हर नई मुसीवत में प्रभु कोई-न-कोई सहारा वना देते है । सव वाते हमारी परीक्षा के लिये होती हैं । मैंने श्रीमती मोदी से कहा, "हम वडे खतरे मे जा रहे है । वह मुज़फ्फरावाद से भी कठिन है । मैंने ही आप सवसे चलने के लिये कहा था, पर मैं नही जानती थी कि अभी हमें और ठोकरे खानी है ।" सव पार्टी घवरा गई परन्तु चुप रहने के अलावा और चारा ही क्या था ।

शाम को डी० सी० आया और हमसे चलने को कहा । तव काफी अंधेरा हो चुका था । ट्रको में रजाइयां भरी हुई थीं । उन्हीके ऊपर हमे विठाया गया । वह सफर कितना भद्दा था । वच्चे यह सव देखकर ठडी आहे खींचने लगे । मैंने कहा, "अव तुम्हे फिर एक और वडी परीक्षा की तैयारी करनी होगी जो वीते हुए दिनो से भी कठिन है । परन्तु हिम्मत रखो और खुशी से इन ट्रको पर चढो । भगवान् तुम्हारी परीक्षा ले रहे है ।" ट्रक तेजी से चल पडी । साथ ही वह लोग मोटर मे चले । रास्ते भर पठान ही पठान नज़र आते थे । तेजी से चलने के कारण हमें वैठने मे वड़ी कठिनाई हो रही थी । गिरने का भय लगा रहता था । तेज हवा के झोके चल रहे थे । जैसे-तैसे हम एक स्थान पर पहुचे । यहा ट्रक रुकी । डी० सी० ने कहा, "दुतियाल यहां से दो मील पर है । आपको पैदल जाना पडेगा क्योंकि वहा ट्रक नहीं जा सकती । मै यहा से दूसरी जगह जा रहा हू । आपके साथ एक और आदमी जायगा । वह आपको कैम्प तक पहुचा देगा । परन्तु आपके नौकर वहा नहीं जा सकेंगे । वहां मर्दो को रखने की इजाज़त नही है ।" मैंने कहा, "यह नहीं होगा । हम जहां जायेंगे ये भी साथ ही जायेगे । मै इन्हे किसी भी हालत मे अलग नही कर सकती ।" वह कहने लगा, "अच्छा । मुझे आपके लिये यह कायदा तोडना पड़ेगा । आप इन्हें साथ ही ले जाइये । मीरपुर के मगला-भाई जागीरदार का परिवार वहा पर भेजा गया था परन्तु जागीरदार को यहां रहने की इजाज़त नही मिली थी और वह अलीवेग कैम्प में भेज दिया गया था । वही पर कुछ दिन वाद उसे किसीने कत्ल कर दिया ।"

हम सब एक आदमी के साथ अपनी नई मंजिल का सफर करने चल पड़े। रास्ता खेतो में से होकर जाता था। मुजफ्फराबाद के उस व्यक्ति ने मुझसे कहा था कि जरा संभल कर जाना। यहा के लोग बड़े जालिम हैं; परन्तु इसका इलाज सिवाय धीरज और ईश्वर-विश्वास के और क्या था। थोडी देर में हम वहा पहुच गये। साथवाले व्यक्ति ने बाहर से आवाज़ दी। एक आदमी ने दरवाजा खोला और हमे एक कमरे में ले जाया गया। कमरा क्या था, नरक था। इसमें पचास स्त्रिया तथा बच्चे थे। जमीन पर घास पड़ी हुई थी, उसी पर सब लेटे हुए थे। कमरे में धीमी-धीमी रोशनी हो रही थी। सारा कमरा खचाखच भरा हुआ था, कही पर पाव रखने की जगह नही थी। वहां पर इतनी दुर्गन्ध थी कि हमारा दम घुटने लगा और एक मिनट खडा रहना मुश्किल होगया। सब स्त्रिया घबराई हुई-सी नज़र आती थी और सूख कर काटा होगई थी। तीन-चार बूढी स्त्रियों को छोड बाकी सब नव-जवान महिलाए थी। वे हमसे कहने लगी, "आप यहा पर क्यो आई है ? यहा पर बहुत मुसीबते है। रोज पठान यहा से गुजरते है। कई बार उन्होंने यहा आने की कोशिश की है। बहन, इस जिन्दगी से तो मरना ही अच्छा है। हम चक्की पीसती है। हमारे मुखो मे सूखा बाजरा खा-खा कर पस पड गई है।" दो-चार स्त्रियो ने तो अपने मुह भी खोल कर दिखाये। सचमुच जख्म ही जख्म थे। फिर कहने लगी, "देखो, कितनी जुए हमारे बालो में पडी है। वे हमारे बिस्तरो के ऊपर रेग रही है।" उन्होने मुझे रोशनी में वह बोरिया दिखाई जो वह ओढे हुए थी। सचमुच इनपर जुए रेग रही थी।

हम सब यह देखकर बहुत घबराये और हमारा धीरज जाता रहा। फिर दो-चार को छोड़कर वे सब कलमा पढने लगी। मैने पूछा कि यह क्या है तो वे कहने लगी, "हम तो पक्की मुसलमान है। तीन-तीन महीने तक हम उनके घरो में रही है। अब हमे यह लोग यहा लाये है। कहते है कि तुम्हें हिंदुस्तान भेजेंगे। देखा जायगा जब भेजेंगे। अभी तो ये लोग हमारी और भी बेइज्जती करना चाहते है। यह कैम्प जो इन्होने बनाया है इसकी हर

जगह यही शोहरत हो गई है कि जगह-जगह की नवजवान तथा सुन्दर स्त्रिया यहा पर है। हर समय पठान और आजाद काश्मीर के आदमी बुरी नीयत से यहा आते है। परन्तु हमारी किस्मत से यहा का कैम्प कमाडेट अच्छा है। वह किसी को अन्दर नही आने देता। इसी कारण वे लोग उसके भी वैरी हो गये है। अगर तुम यहा पर रहोगी तो सव कुछ मालूम हो जायगा।" मेरे साथी यह सुनकर रोने लगे और कहने लगे, "न जाने इस डी सी को क्या सूझी जो हमे यहा ले आया ?" मै अन्दर नही ठहर सकी और वाहर आगन मे आकर खड़ी हो गई। इतने मे कैम्प कमाडेट जिसे वहा ठेकेदार कहते थे, अन्दर आया। इसकी आयु करीव पचास साल की थी। देखने से वह कोई भला आदमी जान पड़ता था। आते ही मुझे कहने लगा, "आपको यह लोग यहा क्यो ले आये, यहा तो वडी तकलीफे है। यहा पर तो हर समय कवाइलियो का डर लगा रहता है। इस कैम्प की शोहरत फैल गई है कि यहां पर जवान स्त्रिया है और वे लोग भी यही है जिनके घरो से यह औरते निकालकर लाई गई है, वे इन्हे फिर भगाकर ले जाना चाहते है। क्या कहू यह औरते भी वड़ी अजीव है। कहती है हम हिन्दुस्तान नही जायेगी। हमे उन्हीके साथ भेज दो। यहा पर मै हू और एक मेरा नौकर है। इसके अलावा मैने अपनी एक रिश्तेदार औरत खाना पकाने के लिये रखी है। अपना सव खान्दान जेहलम पहुचा आया हू। अपने सव मकान इस अहाते मे कैम्प के लिये खाली कर दिये है। मेरी भी लडकिया है, मै इन्हे उन्हीके समान समझता हू। मुझे तो खुदा पर भरोसा है। वही वचाएगा। जिस काम की जिम्मेदारी मैने ली है उसको आखिर तक निभाऊगा। आजाद काश्मीर वालों ने कोई खास इन्तिजाम नही किया है। कल की वात है कि पठानो का लीडर वादशाह गुल कुछ अपने पठान सिपाहियो के साथ यहां आया। साथ मे एक लारी तथा मशीनगन भी लाया था। वह यहा से कुछ जवान लडकियो को लेने आया था। वताइये, अगर खुदा ही मेरी मदद न करता तो मै उनका मुकावला कैसे कर सकता था। यहा आकर उन्होने दरवाजे खटखटाने शुरू किये और गालिया दे दे कर कहने लगे, 'खोलो

किवाड़, नही तो हम तोड़ देंगे ।' मैं ऐसा नीच काम कभी भी नही कर सकता था कि इन बेगुनाह, पनाह में आई हुई लडकियो को उनके हवाले कर देता। चाहे वे लोग मुझे मार ही क्यो न देते । यह लोग इस्लाम के नाम पर धब्बा लगा रहे है लेकिन मैं दुनिया को बता दूगा कि सच्चा इस्लाम क्या है ? और वह क्या फरमाता है । जब वह लोग बहुत दिक् करने लगे तो मैं पिछली दीवार फाद कर गाव में चला गया और वहा पर मैंने गाववालो को इकट्ठा किया और कुछ आदमियो को गोविन्दपुर थाने पर इत्तला देने के लिये भेजा। गाववालो को देखकर वे लोग चले गये । मैं उन मुसलमानो में से नही हूं जो कि मजहबी तास्सुब की वजह से अपना ईमान खो बैठते है । कल आपको और भी यहा की बातें सुनाऊगा। ऊपर की मजिल में और भी औरतें है । आज आपको बाहर की तरफ के कमरे देते है । कल मै अपने साथवाला कमरा आप के लिये खाली कर दूगा। आप लोग अपना सब इन्तिजाम अलग करलें। रात को जरा सभल कर सोना। जालिमो का बड़ा खतरा रहता है। इन दो हफ्तो में उन्होने कई बार यहा पर हमले करने की कोशिश की है ।" मैंने कहा, "आपके विचार बडे ही अच्छे है । मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई । मैं आपसे बहुत कुछ सीखूगी । आपको क्या कठिनाई हो सकती है । आपकी सहायता सच्चाई करेगी जिसको आपने अपनाया है ।"

हम सब लोग बाहर के कमरे में आये । यहा भी काफी सामान था। नौकरो ने सामान एक तरफ रखा और नीचे घास बिछा कर उसपर हमारे बिस्तरे बिछाये, परन्तु रात भयानक दिखाई दे रही थी। सब इस नई आनेवाली विपत्ति के कारण घबराये हुए थे । मै भी हौसला हार चुकी थी। विशेषकर मुझे इन स्त्रियो की दशा पर रोना आ रहा था। साथ ही लडकियो और ओम् व जोधा की भी चिन्ता थी । न जाने किस समय इन्हे जान से हाथ धोना पड़े ।

इसी सोच मे मेरी आखो से आसू बहने लगे, कितनी कोशिश की कि दिल को सभालू; परन्तु बेकार। तरह-तरह के विचार मन मे आये । क्या

भारत की नारी मे इतनी कायरता आ गई है, जो वह अपने आत्म-गौरव को खो वैठी है। उसे तो जन्म से ही मरना सिखाया जाता था किन्तु अव तो इन लोगो मे कष्ट सहन करने की कोई शक्ति ही नही रह गई है। यह सोचकर मैने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो अपने ऊपर विपत्ति लेकर इन्हे भारत ले जाऊगी और इन्हे हिम्मत देने की कोशिश करूगी ताकि यह दुःख का मुकावला खुशी-खुशी कर सके।

इसी तरह रात वीत गई। प्रात काल वारी-वारी से स्त्रिया मेरे कमरे मे आने लगी और अपनी दुःख-भरी गाथा सुनाने लगी। जिसे सुनकर दिल काप उठता था। मुझे अपनी वीती इनके दुःखो के सामने तुच्छ जान पडी। मैं इतना रोई कि मेरे सभी साथी परेशान हो गये। वे हैरान थे कि इसको आज क्या हो गया है? पूरे दो दिन तक मेरी यही दशा रही।

दुतियाल कैम्प से कोई चार मील दूर गोविन्दपुर गाव था। आज़ाद काश्मीर वालो ने जिले का दफ्तर यही पर रखा था। थाना भी यही था। इस इलाके मे पठान वहुत फैले हुए थे। वे यहा के मुसलमानो तक को भी लूटते थे। उनके पशु वगैरा मारकर खा जाते थे। इसलिये आजाद काश्मीर वालो ने जिम्मेवार अफसर सव पठान ही रखे थे। पुलिस भी पठानो की रखी थी परन्तु फायदा कुछ नही था। जव पठानो का काफिला निकलता तो किसीको हिम्मत नही पडती थी कि उन्हे रोके। इन स्त्रियों के मुख से जो सुना, उससे यही अनुमान होता था कि मीरपुर के मुसलमानो ने हिन्दू स्त्रियों, वच्चो तथा मरदो पर जितने जुल्म किये थे, शायद ही उतने किसी जगह हुए हो।

सायकाल के समय गोविन्दपुर से तीन कालिज के लडके आये। ये पेशावर से यहा के कैम्पों की देख-रेख करने आये थे। इनमे से एक यहां के डी सी का भतीजा था और वाकी दो उसके मित्र थे। ये मेरे पास आये और मेरी लाल आंखे देखकर वोले, "आप इतनी घवराई हुई क्यो है?" मैंने कहा, "कल से इन स्त्रियो की दशा देखकर मेरा मन कावू से वाहर हो गया है।" वे कहने लगे, "आगे सव ठीक होगा। अवतक जो होना

था सो हो गया।" मैंने कहा, "आप यह क्या कह रहे है। क्या आपने यह कैम्प मजाक के लिये बनाया है। दिखावे भर के लिये दो बूढे सिपाही रख छोड़े है। प्रतिदिन पठानों का खतरा रहता है। इनकी यह दशा है कि न इनके पास बिस्तरे है और न कपडे। घास पर पडी रहती है और दो-दो रोटिया खाने को मिल जाती है।" वे कहने लगे, "ये सब बाते हम डी. सी. से कहेंगे।" उनमें डी सी का भतीजा बहुत ही शरीफ दीख पड़ा। कहने लगा, "अगर आप अलीबेग कैम्प की हालत देखें या पूरी तौर से सुने तो आपको मालूम होगा कि यहा पर इनको कितना आराम है।"

वह कैम्प क्या था काफी बडे अहाते में चार पाच मकान एक साथ बने हुए थे। बीच आगन के एक कुआ था। आस-पास मीलों तक खेत-ही-खेत थे। पास में थोडी दूरी पर मुसलमानो के नौ दस घर थे। इन मकान के निचले हिस्से में पचास औरते और बच्चे थे। इन सबका खाना एक जगह बनता था। बारी-बारी से वे स्वय खाना बनाती थीं। उन्हे एक मिट्टी की हडिया मिली हुई थी। उसीमें दाल बनाती थी और तदूर मे रोटिया लगा लेती थी। दूसरी मजिल में तीस के करीब औरते और बच्चे थे। ये अपना खाना अलग पकाती थी। यहा मुझे कुछ मीरपुर की जानी-पहचानी औरते मिली। श्रीमती मोदी की भी कई परिचित थीं।

सायकाल को सी आई. डी का सुपरिन्टेंडेंट मेरे पास आया और मुझे अलग बुला कर कहने लगा, "मुझे बताइये कि आप अपना जेवर या रुपया मुजफ्फराबाद मे जमीन में गडा हुआ तो नही छोड आई है। अगर हो तो हम वहां से मगवा कर आपके लिये यहा खर्च करेंगे।" मैंने कहा, "मेरा जेवर या रुपया जो कुछ भी था वह कोठी मे ही रह गया। मैंने कही गाड़ा नही था।"

मैंने फिर उससे बडी नरमी से कहा, "मैंने यहा आकर बहुत कुछ सुना है। अगर तुम हमारा या इन बहनो का पूरा प्रबन्ध नही कर सकते तो यह कैम्प क्यो बनाया है? आपको इनके साथ अच्छी तरह सलूक करना होगा और जो यहा पर पहरा देते हैं, उनसे भी यही कहना होगा।"

उसने पहरे वाले वूढे सिपाहियो को मेरे सामने वुला कर कहा, "इनका खास ध्यान रखना। अगर कोई भी शिकायत आई तो तुम लोगो को गोली से उडा दूगा।"

इन सिपाहियो की वावत मैंने वहुत कुछ सुना था कि इनका कैम्प की स्त्रियो के साथ वहुत वुरा सलूक था। डी सी भी आया, उसने सवको एक एक-नई रजाई दी और हमारे पास जो पुरानी रजाइयां थी वह ले ली।

: २५ :

भारत नहीं जाएंगी

एक दिन कैम्प कमाडेट मुझसे कहने लगा, "वहन जी! ये औरतें हिन्दुस्तान नही जाना चाहती। इनमे से केवल थोड़ी-सी है जो जाना चाहती है। मै इनको वहुत समझा चुका हू परन्तु ये मानती ही नही। अव डी सी. के सामने इनके वयान होगे, जो जाने पर राजी होगी उन्हे भेजा जायेगा, जो नही जाना चाहेगी, उन्हे जिनके घर से लाये थे, उन्हींके घर वापस भेज दिया जायेगा। देखिये, इतने अमीर घरो की औरतों को कसाई, मजदूर, किसान तथा मोची वगैरह भगा कर ले गये। यह उनके पास तीन-तीन महीने तक रही। इस काम मे आप मेरी मदद करें और जव मै वाहर जाऊ तो आप इनकी देख-रेख करे। आपको इस कैम्प पर पूरा हक है।"

उसकी वाते सुनकर मै वहुत प्रभावित हुई और मैंने उसकी सहायता करने का निश्चय किया। मैंने सव स्त्रियों से कहा कि कल हम सव प्रातःकाल तथा सायकाल मिलकर भगवान् का भजन करेगी। कुछ तो मान गई परन्तु कुछ कहने लगी, कि वे तो मुसलमान है। वे भजन में शामिल नही हो सकती। मैंने उन्हें समझाया कि आना होगा क्योकि भजन करने से किसीका धर्म नही जाता। दूसरे दिन ईश्वर-भजन के लिये जो स्त्रिया आईं उनसे मैंने कहा, "दो साल हुए, मुझे श्रीनगर में एक महात्मा मिले थे, जिन्हे सव मगन वावा कहते है। उन्होंने मुझे सदा मगन रहने का

उपदेश दिया था। उन्होंने मुझे कुछ ऐसे भजन बताये थे जिनसे सचमुच मुझे बल मिलता रहा। वही भजन मैं यहा बताऊंगी। और देखो आज तक तुमपर जो बीती, सब जबरन थी, तुम्हारा कोई दोष नही था। अब आगे जो बुरा करोगी वह पाप होगा क्योंकि वह तुम जान-बूझकर करोगी। इस मुसीबत से तुम्हे सबक सीखना चाहिये, अपना कर्तव्य नही भूलना चाहिये।"

मेरी बाते सुनकर वे कहने लगी कि उनपर क्या बीती है? क्या बताये। उनके सामने उनके पति और बच्चे कुल्हाड़ो से कत्ल किये गये है। कातिल कहते थे कि वे काफिरो पर छ आने की गोली खर्च नही करेगे। वे उन्हें अपने घर ले गये और उनसे निकाह किया। उनके गोदी के बच्चे रास्ते में फेंक दिये गये। एक स्त्री ने कहा, "मैंने पहाडी से नीचे छलाग लगाई कि जान निकल जाय। कमर टूट गई पर जान नही निकली।" दूसरी बोली, "मै कुए में कूद गई थी। वे मुझे कुएं से निकाल लाये।" एक ने अपना बदन और मुह दिखाया जिसपर बरछो के कई घाव थे। वह बोली, "मैंने कहकर अपने ऊपर पाच वार बरछो से करवाये परन्तु मै मरी नही। हुआ वही जिससे मै डरती थी। अब तुम कहती हो, यह करो, वह करो, बताओ कहा है तुम्हारा ईश्वर?"

मैंने किसी तरह उनको ढाढस बधाया और सब मिलकर ईश्वर-भजन करने लगी। उसके बाद यह प्रतिदिन का नियम बन गया। अन्त में कई दिन के उस परिश्रम का यह परिणाम हुआ कि सब हिन्दुस्तान आने को राजी हो गईं। उन्होने डी सी को बयान दिया कि चाहे हमारे टुकड़े कर दो पर हम भारत ही जायेंगी।

कुछ ही दिनो में प्रभु की कृपा से कैम्प की हालत सुधर गई। पहरे के लिये और सिपाही आ गये। अब भी प्रतिदिन लोगो के घरो से दो-दो चार-चार स्त्रिया लाई जाती थी जिन्हे समझाने के लिये मुझे कई-कई दिन लग जाते थे। यहा तक कि मुझे उनके साथ सख्ती भी करनी पड़ती थी; परन्तु अन्त में वे सब अपने कर्तव्य को समझ जाती थी।

वाद मे छानवीन करने पर पता चला कि जो स्त्रिया भारत नही आना चाहती थी,उसमे उनका दोष नही था। उन्हे यह कहा गया था कि ये लोग तुम्हे हमारे घरो से निकाल कर पठानो के हाथ मे दे देगे। अगर तुम हिन्दुस्तान भी गईं तो तुम्हारे साथ कोई बात तक नही करेगा। मैने उन्हे विश्वास दिलाया, कि वे वेफिक्र रहे। माना यहा पठानो का डर है। परन्तु हम भी तो उनके साथ है। मैने उनसे वादा किया कि अपनी लड़कियो से पहले मै उन्हे वचाने की कोशिश करूंगी। और उन्हे हर तरह से दृढ रहने की वात सुझाई। जव उन्होने मेरे प्रेम को समझा तो वे सव तैयार हो गईं। कहने लगी, कि भारत पहुचकर, जो मै कहूगी, वही वे सव करेगी। इसपर भी वे कभी-कभी यह सोचकर निराश हो जाती थीं कि हम कभी भारत जावेगी भी या यही घुल-घुल कर मर जायेगी। परन्तु मै उन्हे कहती, "अपने भविष्य के वारे में निराश मत होओ। जो होगा, अच्छा ही होगा। तुम सवको कहना चाहिये, कि तुम भारत जाओगी।"

सव सिपाही मुझे माताजी कहते थे। गाव से भी मुसलमान स्त्रिया मेरे पास आती थी। और घटो वैठ कर तरह-तरह की वाते पूछती थी। मै उन्हे समझाती थीं कि जो कुछ इस इलाके में हो रहा है या हुआ है, वह तुम लोगो पर मुसीवत लायेगा। तुम स्त्रियां हो, तुम्हे स्त्री-जाति के इस अपमान को महसूस करना चाहिये। ये जो हिन्दू स्त्रिया तुम्हारे घरो में जा रही है, ये आग की चिनगारिया है किसी भी समय धधक उठेंगी। घरो मे कितनी फूट पड रही है। जव कोई व्यक्ति किसी हिन्दू स्त्री को अपने घर ले जाता है तो पहली स्त्री, उसके वच्चे और मां-वाप, सव मे झगडा हो जाता है और तुम्हारी जिन्दगी नरक वन जाती है। अगर तुम सव वहने मिल कर सहायता करो, तो एक तो जिस स्त्री पर अत्याचार हो रहा है, वह वच जायेगी और दूसरे तुम्हारा घर नरक नही वनेगा।" मेरी यह वात उनके मन में वैठ गई और वे इस वात की निन्दा करने लगी। उन्होने मुझे कई लड़कियो का पता वताया, जो कैम्प में रहनेवाली स्त्रियो की पुत्रियां थी। मैने कैम्प के सिपाहियो की सहायता से उन्हें लोगो के

घरो से निकलवाया। ये लोग मेरी बात मानते थे।

इस काम में कैम्प के कमांडेंट ने भी बड़ी सहायता की। अब रोना-धोना कम हो गया। शाम-सवेरे हम सब मिलकर भजन करने लगी। कुछ मुसलमानो ने इस बात पर एतराज किया कि यहां भजन क्यो पढे जाते है? रात को जब हम भजन करते थे, तो ये लोग बाहर खाली फायर करते थे और हमसे आकर कहते थे कि पठान आये है, भजन बन्द करो। हम बन्द नही करते थे, परन्तु जब उन्होने बहुत एतराज किया तो हम आहिस्ता-आहिस्ता भजन करने लगी; परन्तु छोड़ा नही। वे भी समझ गये कि अब यहा दाल गलनेवाली नही है। इसलिये उन्होने एतराज करना छोड दिया। इतना कुछ होते हुए भी वहा हर समय कबाइलियो का भय रहता था। अक्सर कबाइलियो की पार्टिया जब उस रास्ते से होकर नौगहरा के मोर्चे पर जाती थी तो कैम्प मे उसका भय छा जाता था। थी भी भय की बात। जिनके घरो से स्त्रिया यहा लाकर रखी गई थी वे उन्हे बताते थे कि यहा अच्छे-अच्छे घरों की नव-युवतियां है। इसलिए जब उनकी पार्टिया हमारे कैम्प के सामने से गुजरती तो सारे कैम्प में सन्नाटा छा जाता था। कोई स्त्री ऊचा सान तक नही लेती थी। कोई घास मे तो कोई कही कोने में छिप जाती थी। रोने मे हसने की बात यह थी कि इस भय में वे मेरी ओर देखती रहती थी कि जो उपदेश मैं उन्हे देती हू खुद उसका पालन करती हू या नही। कभी-कभी वे मुझे घेर-कर बैठ जाती थीं। तब मैं उनसे कहती, "डरो मत। दृढ रहो और पूरी ताकत से विपत्ति का सामना करो। अगर अभी से डर के कारण अपनी शक्ति खो दोगी, तो समय पर अपनी रक्षा नही कर सकोगी।" मैं आहिस्ता-आहिस्ता राम-नाम जपती थी, वे भी जपती जाती थी और इस प्रकार भय टल जाता था। मेरा छोटा लड़का विमल जब सुनता था कि कोई पार्टी आ रही है तो झट बाहर से दौड़कर मेरे पास आता और मुझसे कहता, "सुनो माताजी! पठानो की पार्टी इस तरफ आ रही है। तुम चिंता मत करो। तुम यही बैठो और लड़कियो को घास

मे छिपा दो। मै वाहर जाता हूं। मै किसीको तवतक अन्दर नही आने दूगा जवतक मै जिंदा हूं।" वह निर्भय होकर वाहर चला जाता था। मैने उसे एक दिन भी नही रोका। मै उसका दिल तोडना नही चाहती थी और साथ ही उसे यह भी नही जताना चाहती थी कि वह वालक कुछ नही कर सकता। उसके जाने के वाद मै अक्सर दोनो हाथो से अपना सिर थाम लेती थी, मा की ममता आखो से आंसू वन कर वहने लगती थी। कभी-कभी सोचती थी, जाने जिंदा लौटेगा भी या नही। कैम्प की स्त्रिया अक्सर मुझसे कहती थी कि तुम इसे रोकती क्यो नही? कही वाहर गोली चली, तो वच्चे से हाथ धो वैंठोगी। मै कहती, "मै सव कुछ जानती हू पर मै उसे डराना नही चाहती।"

इस रोज-रोज के हमले से हम सव वहुत तग आ गई थी। परन्तु सहते रहने के अलावा और कोई इलाज भी नही था। एक वार मैं सव वच्चों को लेकर वैठी हुई थी। रात का समय था। सव कहने लगे कि अव यह जीवन-लीला समाप्त होनी चाहिये। ऐसे कवतक चलेगा? यहा से छूटने की कोई उम्मीद नही है। अव गर्मी आ रही है। खेतो मे साप निकलेगे। जिस दिन इस जीवन से ऊव जायेगे, जाकर खेतो मे लेट जायेगे और सवको सांप काट लेंगे। घुल-घुल कर मरने से मौत कही अच्छी है।

एक वार पास वाले गाव में पठानो की एक पार्टी आई। आपस में कुछ कहा-सुनी हो गई। गाववालो ने उनका एक साथी मार दिया। अव क्या था, सव पठान वही धरना देकर वैठ गये। उनके पशु मार-मार कर खा गये। वहां से उठने का नाम नहीं लेते थे। कहते थे कि जव तक वे गांव वालों का एक व्यक्ति नही मार लेंगे, तव तक नही उठेगे। गाव वालो ने वहुत कहा, कि वे सव मुसलमान है। अव जाने दो। परन्तु तीन दिन तक वे लोग वही वैठे रहे। वाद में सरकारी आदमियो ने आकर उन्हे वहां से हटाया। इसी तरह एक दिन हमारे कैम्प के पहरेदार सिपाही के घर पच्चीस कवाइली आकर वैठ गये। अन्दर से आटा वगैरह सव निकाल खाया। फिर भी उठने का नाम न लिया। सव घवराये। पुलिस वुलाई गई,

वे भी पठान थे। उन्होंने आकर कबाइलियो को समझाया कि तुम अपने भाइयों के साथ क्या कर रहे हो। उठो, और अपने घर जाओ। वे कहने लगे, कि वे मोर्चे पर लड़ने जा रहे है। पुलिस के आदमी ने कहा, कि वे पच्चीस आदमी है और उनके पास एक बन्दूक है। वे मोर्चे पर जाकर क्या करेंगे? बहुत डराने-धमकाने पर वे वहां से गये। जोधा कभी-कभी कहता था कि चाहे उसे हत्या ही का पाप लगे, परन्तु जीते जी इन लडकियो को कही नही जाने देगा। जब समय पडेगा, तो इनका गला घोटकर खान्दान की इज्जत बचाएगा। इसपर लडकिया "पहले मेरा" "पहले मेरा" कहने लगती थी। ऐसी भयानक अवस्था थी पर इस अधेरे में भी प्रकाश की एक किरण थी। कैम्प का इचार्ज ठेकेदार हमारी हर तरह से सहायता करता था। न जाने भगवान् ने उसे कितना नेक बनाया था। वह हरएक के साथ हमदर्दी से पेश आता था। एक मर्तबा एक गांव की हिंदू स्त्री कैम्प मे आई। इसका सब परिवार मारा गया था। एक बच्चा बचा था। इस स्त्री ने इस्लाम कबूल कर लिया था। वह और इसका बच्चा दोनो बहुत बीमार थे। इस औरत का पेट बहुत खराब हो गया था। उसे बार बार,टट्टी आती थी और बाहर जाने की शक्ति नहीं थी। ऐसी अवस्था में कैम्प का इंचार्ज ठेकेदार उसका पाखाना खुद उठाता था। मैने उससे कहा, कि यह काम मै करूंगी। मुझे सेवा करने में शांति मिलती है। परन्तु वह नही माना। सचमुच वह महान् व्यक्ति था। वह राष्ट्र का सच्चा हमदर्द था। उसे अपने धर्म भाइयो के अत्याचारो से सख्त नफरत थी। सारी-सारी रात कुरान-शरीफ पढते मैने उसे देखा है। भगवान् से हमेशा प्रार्थना करता था कि वह इन बेगुनाह अबलाओ की रक्षा करे। इन्हे क्षमा करे। उसकी ऐसी अवस्था देखकर मैंने उससे कहा कि जब हम चले जायें, उसके बाद भी वह और लडकियो को अत्याचारियो के पजे से छुड़ा कर अपने यहां रखे। उसने ऐसा ही किया। हमारे भारत आने के बाद उसने कैम्प में कुछ और लड़कियां रखी और वे बहुत अच्छी दशा मे भारत पहुंची।

कैम्प की स्त्रियो को सबसे बड़ा दुःख तब होता, जब उन्हे कैम्प की सफाई

वगैरह का काम करना पड़ता था ? अक्सर स्त्रियां रोती थी। हाय, हमने कोई काम नही किया, आज ये लोग हमसे काम करा रहे है। जो कल हमारे टुकड़ो पर पलते थे आज पैरो से धकेल-धकेल कर हुक्म देते है। वे गाली निकालने मे भी संकोच नही करती थी। अक्सर ये सिपाही जब वहां कैंप का इचार्ज नही होता था साम्प्रदायिकता के वशीभूत होकर बदतमीजी कर बैठते थे। तब भी मै उन स्त्रियों को समझाती थी। यह दुःखी होने की बात नही है। देखो, मै भी खुद झाड़ू लेकर अपने घर के बाहर सफाई करती हू। मैं उसे बुरा नही समझती। वे मेरी बात मान लेती थी। हमें पाखाने के लिये खुले खेतो मे जाना पड़ता था। वहा भय रहता था कि कही पीछे से कबाइली छिपकर न आ जाये। मैं जब खेतों में जाती तो कैम्प का एक कुत्ता मेरे साथ जाता। जब तक मै वहां रहती वह चारो तरफ भौक-भौक कर दौड़ता रहता था। जब मै लौटती तो साथ लौट आता था। हालाकि मैंने कभी उसे रोटी का टुकड़ा नही दिया था न ही प्यार किया था। पर वह सदा मेरे साथ रहता था। सब कहते, कि देखो, कुत्ता भी माताजी की सहायता करता है। वे सच कहते थे, हैवानो ने समय-समय पर मेरी सहायता की।

इस कैम्प मे एक नवयुवती थी। यह मीरपुर के अच्छे घराने की थी। इसका पति मारा गया था पर ससुर आदि जीवित थे। साल भर का बच्चा उसकी गोद मे था। ससुर ने भय से इस्लाम कबूल कर लिया था। वह अक्सर कैम्प मे इसके पास आता था और इसे तग करता था। कहता था कि तुम उसी मुसलमान के पास चली जाओ जिसके सुपुर्द मैंने तुम्हे किया था। हिन्दुस्तान जाकर क्या करोगी? वहा तुम्हारे साथ कोई सीधे मुह बात भी नही करेगा। वह मेरे पास आकर रोती थी। कहती थी, "बहन! जिस दिन से हमने कैम्प मे भजन-कीर्तन आरम्भ किया है, किसी चीज की इच्छा नही रही है। सब दुनिया एक खेल-तमाशा दिखाई देती है। हमने अपने फर्ज को अच्छी तरह समझ लिया है। परन्तु मै क्या करू ? यह मेरा ससुर मुझे मजबूर कर रहा है। फिर मुसलमान के घर जाने को कहता है और कहता है, अगर तुम नही गई तो मुझे भी वे लोग मार देगे। असल में इसने मुझे एक गेहूं

की बोरी भर अनाज तथा कुछ थोड़े रुपयों में बेचा था।' यह लड़की बड़ी सुशील थी और बड़े प्रेम से भजन-कीर्तन करती थी। काफी अर्से तक मथुरा-वृन्दावन रह चुकी थी। मैंने उससे कहा, "ससुर को कह दो कि, चाहे वे उसे मारें या रखे, तुम्हे दुःख नही है, और कि तुम उनके घर नही जाओगी। चाहे हिन्दुस्तान मे कोई अपनाये या न अपनाये।" लड़की ने यही कहा और अन्त मे वह बच गई।

: २६ :

इसे सारी उम्र पाकिस्तान में रखो

एक दिन मीरपुर के कुछ स्थानीय आदमी रात के समय कुछ पुराने कपड़े वगैरह लेकर कैम्प देखने आये और कैम्प के इचार्ज से कहने लगे कि यहां उनके मुहल्ले की कुछ हिन्दू स्त्रिया है, वे उनसे मिलेंगे। वे सब मुसलमान थे। कैम्प का इंचार्ज इन्हे मीरपुर की कुछ औरतो के पास ले गया। इन्होने उन्हें कुछ कपड़े और शायद चार-चार, छ-छ आने दिये। वे इन औरतो ने ले लिये। जब आदमी पर विपत्ति आती है तब उनकी बुद्धि सचमुच काम नही करती। इनको यह याद ही नही रहा कि हम इन दुष्टो से पैसे-कपडे किस लिये ले रही है। इन्होने ही हम सबको बरबाद किया है। असलमे वे लोग इसी बहाने इन स्त्रियो को पसन्द करने आये थे। कहते थे कि वे इन्हें मोहब्बत से ले जायेंगे और अपने यहा रखेंगे। जब इन्हे यह मालूम हुआ कि इन कैम्प की कोई भी औरत पाकिस्तान में नही रहेगी, सब हिन्दुस्तान जायेंगी और यह भी मालूम हुआ कि मै इन सबको ये सब बाते समझा रही हूं, तो वे आग-बबूला होकर कहने लगे कि क्या अभी काफिरो की स्त्रियो मे इतना गरूर है? इन्होने डी० सी० के पास जाकर कहा कि इस स्त्री को सारी उम्र पाकिस्तान में रखो। यह बात बड़े जोर से कही गई। मुझे कैम्प के इचार्ज ने ये सब बातें बताई। मैंने उससे कहा, "तुम जाकर मेरी ओर से डी० सी० से कह दो कि अगर मेरे यहा

रहने से ये सब बहने हिन्दुस्तान चली जाये तो मैं सारी उम्र पाकिस्तान में रहने के लिये तैयार हू। मुझे कोई भय नही है।" वह बोला, "डी० सी० ने उन्हे वही धमका कर कहा था कि वे तुम्हारे बारे मे गलत खयाल कर रहे है। वे तुम्हे भारत जाने मे नही रोक सकते।"

फिर इन लोगो ने दूसरी चाल चली। एक दिन गांव मे यह अफवाह फैला दी कि यहा इन काफिरो की स्त्रियों को किस आराम से रखा गया है। रियासत जम्मू मे हमारी मुसलमान बहनों को शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने मोर्चा-खुदाई पर लगाया हुआ है। एक कमीज और निकर उनके तन पर है। अब क्या था। सब गांववाले बिना सोचे-समझे कैम्प इन्चार्ज के पास आये। वह भी कुछ तेज हो गया और मेरे पास आकर कहने लगा कि वह हम लोगों के लिये यहां क्या कुछ नही कर रहा है। सब इलाका उसका दुश्मन हो रहा है। लेकिन जम्मू में उनकी बहनो पर बडे जुल्म हो रहे हैं। मैंने उससे कहा, "भाई साहब, मै तो इस बात पर यकीन नही करती। शेख साहब के होते हुए वहा कभी ऐसा नही हो सकता। ये तो कैम्प को बरबाद करने के लिये सब गलत बाते उडा रहे है। इससे तो अच्छा है कि आप हमे एक ही बार खत्म कर दे, ताकि हम भी इन प्रति दिन के कष्टो से छुटकारा पाये।" पर वह भी क्या करता। वह तो सच्चा था, पर गाव के लोग उसे ऐसी-ऐसी बाते बता-बता कर तग करते थे। एक दिन फिर एक काश्मीरी भाई, जो इस जिले में कट्रोल अफसर था, सडा हुआ गेहू और बदबूदार चावल ले आया और कैम्प के इचार्ज को दिखाकर कहने लगा, "तुम रोज हमें तंग करते हो कि इन औरतो के लिये अच्छा अनाज वगैरह दो। देखो, जम्मू में यह कीड़े-वाला आटा तथा यह सडा हुआ चावल हमारी बहनो को दिया जाता है।" ऐसी ही साम्प्रदायिकता की बातें फैला-फैला कर ये इस कैम्प को बरबाद करना चाहते थे। इन बातो से कैम्प मे काफी हलचल मच जाती थी।

एक दिन डी. सी. के सामने एक सिपाही के घर से एक पन्द्रह साल की लड़की लाई गई। सिपाही और इस लडकी का चाचा भी साथ था। वह एक अच्छे खान्दान से ताल्लुक रखता था। पर अब मुसलमान बन गया था।

लड़की रोती जाती थी और कहती जाती थी, "मैं कैम्प मे नही जाऊंगी। वहां हिन्दू स्त्रियां है। मैं मुसलमान हूं।" इत्तफाक से ओम् वहा था। उसे देखकर डी० सी० ने कहा, "तुम इसे कैम्प मे ले जाओ।" वह और दो-तीन आदमी उसे कैम्प मे ले आये। वह रो-रो कर चिल्ला रही थी। जब वह कैम्प मे आई, किसी हिन्दू स्त्री से छुए तक नही, यही कहती जाये, "चाहे कुछ हो मै हिन्दुस्तान नही जाऊंगी। तुम्हारा छुआ हुआ तक नही खाऊंगी।" उसे सबने समझाया, परन्तु बेकार। तब कुछ स्त्रिया मेरे पास आई। मैंने उसे अपने कमरे मे बुलाया। उसे देखकर मुझे बहुत दु:ख हुआ। मैंने उससे कहा, "बेटी, तुमने क्या हल्ला मचाया है। अगर तुम जाना नही चाहती, तो दूसरी बात है, परन्तु यह पागलपन छोड कर रोना-धोना बन्द करो। तुम्हे जबरदस्ती कोई नही रखेगा। धीरज धरो, सब सुनो, समझो, फिर जैसा मुनासिब हो, करना। मैं तुम्हे कैम्प मे नही रखूंगी। तुम मेरे साथ रहो। देखो, यह सब तुम्हारी ही बहने है।" वह मेरे पास रहने को राजी हो गई। मैंने उससे कहा, "अपनी बीती सुनाओ। किसकी लडकी हो? मा-बाप कहा है?" वह देखने से खान्दानी तथा सुशील मालूम पड़ रही थी। उसने अपने मा-बाप का नाम बताया। कहने लगी, "जब हम लोग मीरपुर से भागे तो पिताजी हम से छूट गये। मै और मेरी मा तथा दो छोटे भाई अलीबेग कैम्प मे लाये गये। एक छोटा भाई रास्ते में एक दौडते हुये ऊंट के पांवो के नीचे आ गया और तडप-तडप कर मर गया। आपने अलीबेग कैम्प के अत्याचार तो सुने होगे। वहा आजाद काश्मीर वाले स्त्रियो के साथ कैसा सलूक करते थे।" यहा वह कुछ रुकी। उसका शरीर काप रहा था। कुछ सभल कर उसने फिर कहा, "जब हम वहा पहुचे, तो देखा, बचे हुये हिन्दुओ को नहर के किनारे ले जा कर कुल्हाडो से बारी-बारी मारते है। और लडकियो तथा स्त्रियो के साथ बहुत-से अत्याचार करते है। जिसका जी चाहता है वही वहा से किसी भी लड़की या स्त्री को घर ले जाता है या कबाइलियो को सौंप देता है। बारह-बारह और तेरह-तेरह आने में लड़किया मुसलमानो ने बेची है। कबाइलियो का तो मोर्चे पर आने-जाने का रास्ता ही अलीबेग कैम्प के बीच मे बनाया

गया है। आते-जाते वे वही ठहरते हैं और मनमाने अत्याचार करते हैं। किसी को कुछ कहने की हिम्मत नही। मुह से कोई कुछ वोला नही कि गोली का शिकार हुआ नही। कभी-कभी थोड़ा-सा सड़ा-गला अनाज दे देते हैं। वहुत से लोग पेचिश से वीमार है। वच्चे भूख से तडप रहे हैं। वे लोग इतने निर्दयी हैं कि वीमार आदमी को भी वाहर पाखाने जाने की सहूलियत नही देते। एक दिन एक वूढे आदमी को वहुत पेचिश हो रही थी। वह वाहर जाने के लिये उठा। थोड़ी दूर गया था कि गिर पड़ा, वेचारे का पाखाना वही निकल गया। तव एक सिपाही ने आकर उससे कहा कि, 'अभी भी उस में मस्ती है।' उसने गिड़गिडा कर कहा कि उसके वस की वात नही है। वह अभी साफ किये देता है। परन्तु जालिम ने उसे गोली से मार दिया। स्त्रियो की जो दशा है वह मं कह नही सकती। यह सव जव मेरी मा ने देखा, तो यहां से एक आदमी को वुला कर कहा। कि मैं यह लड़की तुम्हारे सुपुर्द करती हूं। तुम इसे अपने घर ले जाओ, ताकि यह इन जुलमो से वच जाय। वही यह सिपाही था। यह मुझे अपने घर ले गया। परन्तु इसकी औरत तथा मा-वाप विगड गये। यह उनसे अलग हो गया। अव मुझे इसी के पास से लाया गया है।" मैंने पूछा, "तुम्हारी मा कहां है ?" वह कहने लगी, "उसे वही से मीरपुर का एक किसान अपने घर ले गया और अपने साथ निकाह पढ़ने पर मजबूर करने लगा। परन्तु मा ने नही माना। वह जव वहुत तग करने लगा तो एक दिन जव वह कही वाहर गया था, मा ने समय पाकर कुछ मिट्टी का तेल, जो वही पडा हुआ था, अपने ऊपर छिड़का और आग लगा ली। इतने मे वह आ गया। उसने मा को मरने से वचाया। परन्तु मा की छाती तथा मुह काफी जल गया था। किसान पर इस वात का वहुत असर हुआ और वह उस कैम्प मे पुहचा आया। मा काफी जख्मी थी। इत्तफाक से एक दिन कुछ ट्रक शरणार्थियो को लिये जम्मू गये। उनमे चुन-चुन कर वूढी जख्मी स्त्रिया भेजी गई। उन्ही मे मा भी चली गई। आजकल वह हिन्दुस्तान में है।" यह कहते हुये उसकी आखे डवडवा आईं। मैंने उसे धीरज देते हुये कहा, "घवराओ नही, जैसा तुम कहोगी, हम वैसा ही करेंगी।

अगर तुम चाहो तो यहीं रहो, अगर चाहो तो हमारे साथ भारत जा सकती हो।" वह कहने लगी, "आप लोगों को भारत कौन भेजेगा? यह तो कहने की बात है। हम इसी तरह तड़प-तड़प कर मर जायेंगी या ये लोग हमें पठानों के हाथ सौंप देंगे। इससे तो अच्छा है कि आदमी एक ठिकाने रहे।" मैंने उसे समझाया, "जब कोई काम हम करने लगते हैं तब उनकी भलाई या बुराई दोनों के लिये हमें तैयार रहना चाहिये। हम सत्य पर रहकर दोनों बातों के लिये तैयार हैं। अगर हिन्दुस्तान भेजा तो भी, अगर तड़पाने को यहां रखा तो भी। हमें देखो, हम निर्भय होकर दिन काट रही हैं। हम इन धमकियों से नहीं डरती। जब तक हिम्मत है, किसी की ताकत नहीं कि हमें अपने कौल से गिराये। तुमने अपने देश की वीर नारियों का इतिहास तो पढ़ा ही होगा। हम भी उन्हीं की संतान हैं। जब वे हंसते-हंसते सब सहन करती थीं, तो क्या हम नहीं कर सकतीं? हम कर सकती हैं। हम अपने आत्म-गौरव पर आंच नहीं आने देंगी।" यह सब कुछ सुनकर वह चुपचाप कुछ सोचने लगी। बीस मिनट के पश्चात् उसने मुझे कहा, "मैं तुम्हें अपनी मां के समान समझती हूं। अगर तुम मुझे अपने पास रखो तो मैं भारत जाऊंगी।" मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, "मैं तुमसे वादा करती हूं, कि अपनी लड़कियों से पहले तुम्हारा खयाल रखूंगी।" वह मेरे पास रहने लगी। उसके लिये मुझे बहुत-सी कठिनाइयां सहनी पड़ीं, परन्तु मैंने उसे हाथ से नहीं जाने दिया। वह सिपाही जिसके पास वह रहती थी, प्रतिदिन कैम्प में आ कर बैठता था और खत लिखकर भेजता था, "तुम आ जाओ। मेरा साथ मत छोड़ो। मैंने तुम्हारे लिये सबको छोड़ दिया है।" वह कैम्प के सिपाहियों से कहा करता था, "इसे किसी तरह यहां से भगा दो।" मैं इसे बाहर तक नहीं निकलने देती थी। बहुत-सी बातें हुईं। मुझे उसने कहला भेजा, "अगर तुम इसे नहीं छोड़ोगी तो तुमपर मुसीबत आयेगी। तुम्हारी लड़कियां हैं, उनका ध्यान रखना।" मैंने इन बातों की परवाह नहीं की। ईश्वर मेरे साथ था। उसकी सारी चालें व्यर्थ गईं।

एक दिन रात को बीस साल की उम्र की एक और लड़की कैम्प में

लाई गई। बातचीत से मालूम हुआ कि यह जब बारह साल की थी तब इसके पिता राजौरी, रियासत काश्मीर में पुलिस अफसर थे। उन दिनो मेहता साहब भी वही थे। मै उसे पहचान गई। वह कहने लगी, "मेरे पति को तो उसी दिन खत्म कर दिया था। मै अपने पिता के एक मुसलमान दोस्त के पास थी। उसने मुझे बडी अच्छी तरह रखा। परन्तु एक पुलिस अफसर मुझसे शादी करना चाहता है। मैंने प्रण किया है कि चाहे मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दे, पर मै शादी नही करूंगी।" यह कहकर वह रोने लगी और कहने लगी, "क्या तुम मुझे बचाने का वचन दोगी? यह वचन दो, जब यहां से जाओगी मुझे साथ ले कर जाओगी, मुझे जालिमो के हाथो से बचाओगी।" मैंने उससे कहा, "तुम धीरज रखो। जब तुम अपनी रक्षा के लिये सच्चे दिल से मौत का स्वागत कर रही हो, तब किसकी शक्ति है कि तुम्हे वह धर्म मे गिरायें। तुम वेफिक्र हो।" यह देखने मे बहुत सुन्दर थी। परन्तु विपत्ति ने उसे मसल दिया था। इसकी दोनो आंखो के किनारो पर निरन्तर रोते रहने के कारण ज़ख्म हो गये थे। कैम्प मे रहने से इसको कुछ शाति मिली।

कैम्प मे जम्मू का एक मुसलमान भाई प्रतिदिन आता था। इसका सब परिवार जम्मू मे मारा गया था। सिर्फ दो छोटे लड़के बचे हुये थे। वे भी जम्मू मे फसे हुये थे। यह अक्सर कैम्प मे आकर घटो व्यतीत करता था। कभी किसी बच्चे को उठाता, कभी किसी बच्चे को कुछ देता। मेरे पास आकर भी बैठता था। मै उसे धीरज देती रहती थी। एक दिन बातों-बातों मे उसने कहा, "बहनजी,! तुम भी कभी सुन लोगी कि जम्मू के मुसलमानो ने अपना बदला चुका लिया है।" मैंने उसे जवाब दिया था, "बताओ, तुम्हे इससे क्या मिलेगा? देखो, मुझे बदले से कितनी नफ़रत है। आखिर मैं भी तो आदमी हूं।" तब वह कहता था, "हम ऐसा नही कर सकते।" कभी-कभी वह बच्चो की याद में आंसू बहाता था। न जाने वे कैम्प में किस तरह होंगे। मैंने उससे कहा, "जब मैं जम्मू जाऊंगी, तुम्हारे बच्चो से मिलूंगी और जहां तक होगा उनकी सहायता करूंगी।"*

---

*भारत आकर मैंने उनका पता लिया था; परन्तु मालूम हुआ कि कुछ दिन पहले वे पाकिस्तान भेज दिये गये है।

अलीवेग कैम्प के आसपास रहनेवाले देहातियो ने डी० सी० के पास जाकर बहुत हल्ला-गुल्ला किया कि अलीवेग के कैम्प मे गंदगी से बहुत ही दुर्गंध फैली है। बीमारी फैलने का खतरा होगया है। कुछ गाववालो के कहने से और कुछ रेडक्रास वालो के आने की सुनकर अलीवेग कैम्प की तरफ हुकूमत ने ध्यान दिया। चार महीने के बाद उन्हे नहाने का पानी दिया गया और तीन-तीन फुट के गड्ढे खोदकर उनमें उनके सिर के बाल वगैरह दबा दिये गये। कई स्त्रियो तथा लड़कियो के भी सिर के सब बाल कटवा दिये। क्योंकि एक अजीब किस्म की जुए पड गई थी जो कि टिड्डी की तरह उडती थी। कई स्त्रियां तो डी० सी० की कृपा से हमारे कैम्प में लाई गई। जिनके साथ हमदर्दी दिखानी होती थी, उसे इस कैम्प मे लाया जाता था। हम तबतक उन्हें बाहर ही रखते थे जबतक उनके कपड़े वगैरह नही उबाले जाते थे। उनसे एक अजीब किस्म की दुर्गन्ध आती थी।

एक रोज डी० सी० ने दो-तीन पुरुष सपरिवार हमारे कैम्प मे भेजे। इन्होने इस्लाम कबूल कर लिया था। इनमे से एक डाक्टर थे,* मीरपुर का मशहूर गोकलशाह नामक व्यक्ति भी इन्ही मे था। इसका एक बीस साल का लड़का मार दिया गया था। इसकी स्त्री तथा दो तीन बच्चे थे। वह मुसलमान तो बन गया था परन्तु वहा के मुसलमान उसे प्रतिदिन पकड कर ले जाते थे और बाध कर लाठियो से मारते थे, कहते थे, "बता तूने अपना धन कहा गाड रखा है?" कहते हैं इसने कुछ रुपये कही गाड़े थे, वे निकाल कर इन्हे दे दिये थे। परन्तु अब वे इसका पीछा नही छोड़ते थे। इसकी एक सोलह वर्ष की लड़की थी। इसने उसकी एक सईद से शादी कर दी। लड़की मैट्रिक तक पढी थी और सुशील तथा सुन्दर थी। दो महीने उस लड़के ने उसे रखा। तीसरे महीने उसने कहा कि वह उसे नही रख सकेगा और किसीको सौंप देगा। लड़की ने कहा कि वह अब उसीकी है। हिन्दू बालिका की शादी एक बार होती है, उसीको वह अपना सब कुछ

*ये आजकल दिल्ली मे हैं।

समझती है। वह फौज में था। उस लडकी ने उससे वन्दूक चलानी सीख ली थी। उसकी पहली स्त्री भी थी। एक दिन मौका पाकर इस लड़की ने दरवाजा वन्द करके वन्दूक हाथ में ली और वैठ कर अपने माथे पर वार कर लिया। गोली लगते ही उसके सिर की खोपड़ी फट गई। जव वह घर आया, दरवाजा खटखटाया। कोई नही वोला, तो किवाड़ तोड़ कर अन्दर आया। वहां लाश देखी तो उठाकर यह कहते हुए वाहर फेंक दी, "काफिर लड़की तुम्हारा यही होना था।" इस घटना की गांव में वडी चर्चा हुई। उसके यहा गांववालो ने खाना-पीना तक वन्द कर दिया।

तभी सुना गया कि हमारी फौंजे आगे वढ़ रही हैं। सारे कैम्प में घवराहट फैल गई। डर लगा, भागते हुए पाकिस्तानी और कवाइली यहां आयेंगे और सवको कत्ल कर देगे। मैंने स्त्रियो को समझाया, "तुम्हे खुश होना चाहिये। हमारी फौजें आगे वढ रही है। हां, एक अफसोस जरूर है कि यहां घास-लकडी नही मिलेगी, नही तो उनके यहां पहुंचने तक हम जौहर की रस्म अदा करती।"

एक दिन डी० सी० का भतीजा आया और मुझसे वोला, "आज हिन्दुस्तान ने अपना वापू अपने हाथो मार डाला। अव तुम्हारे हिन्द का रखवाला खुदा ही है। वुरे दिन दिखाई दे रहे है," यह मनहूस समाचार सुनकर किसीको सुधवुध नहीं रही। सारे कैम्प मे हा हा कार मच गया। "हाय वापू! तुम भी इस आपत्काल में हमे छोड गये। तुम्हारी ही आशा पर तो हम यहा वैठी हुई थी," यह कहकर सव विलाप करने लगी।

इन दिनो पाकिस्तान के गुप्तचर स्थान-स्थान पर फिरकर लोगो से कह रहे थे, "देखो, काफिर आगे वढ रहे है। अगर तुम्हारे गांव मे पहुंचे, भागना नहीं, चप्पे-चप्पे पर मुकावला करना।" इससे यही जान पडता था कि भारतीय फौजे जोरो से आगे वढ रही थी। इन्ही दिनो दो विदेशी वहनें तथा एक विदेशी भाई रेडक्रास की सोसाइटी की ओर से कैम्प देखने आये थे। कटपीसो की एक-दो पेटिया, सावुन और दूध वगैरह साथ लाये थे। अक्सर वे मेरे कमरे मे आकर वैठते थे। कटपीस की पेटियां उन्होने मेरे

सुपुर्द कीं। मैंने सब बहनों को बुलाकर दो दिन में उन चार-चार गिरह के टुकड़ों को जोड़कर कपड़े सिये। उन्होंने लेकर कैम्प में बांट दिये। इनके आने से कुछ भरोसा हुआ। तभी पाकिस्तान का शरणार्थी मिनिस्टर गजनफर अली खान दो साथियों के साथ वहां आया। कैम्प कमाडेंट के साथ मेरे कमरे में भी वह आया। और आते ही एक अनजान व्यक्ति की तरह मुझे पूछने लगा,"क्या इन कैम्प मे सिर्फ औरतें ही हैं? तुम्हारे पति कहा हैं?" मैंने कहा,"माफ करें, क्या आपको अभी तक यह भी नही मालूम?" यह सुनकर वह झेंपा। मैंने कहा, "वे तो शहीद हो गये। पर अभी तक यह खून की होली चल रही है। न जाने यहा की बेगुनाह स्त्रियो का कब छुटकारा होगा।' कैम्प का इन्चार्ज कहने लगा, "देखिये आजाद काश्मीर की फौज के कर्नल वगैरह यहा लडकिया लेने आते हैं, परन्तु मैं अपने जीते जी यह जुल्म नही होने दूंगा। मैं दुनिया को बता दूंगा कि सच्चा इस्लाम क्या है और क्या कहता है।" गजनफर अली बोला, "हम जल्दी ही तुम सबको हिन्दुस्तान भिजवाने की कोशिश कर रहे हैं।'

उसके बाद एक दिन डी० सी० ने मुझसे कहा,"तुम्हें तो भेज देते हैं। बाकी कैम्प अभी यहीं रहेगा। अभी हमारी बहुत-सी बहनें हिन्दुओं के घरों मे हैं।" मैंने उससे कहा, "मैं इन्हें वचन दे चुकी हूं, कि मैं इन्हें साथ ले जाऊंगी। मैं आपसे वादा करती हूं कि जम्मू-काश्मीर में जाकर हिन्दुओं के यहा से अपनी बहिनें निकलवाऊंगी।" *

: २७ :

भारत माता की जय

आखिर एक दिन डी० सी० ने कहला भेजा, "तैयार रहो, शाम को जाना है।" सबके मन खिल उठे पर फिर भी यह चिन्ता थी कि न जाने

*जब मैं भारत आई तो अपने वचन को पूरा करने के लिये काश्मीर गई, परन्तु वहां कहीं किसी के पास मुसलमान बहन नहीं पाई।

रास्ते मे क्या होगा। उसपर वे लोग डाक्टर साहव तथा और दो-तीन दूसरे व्यक्तियों को नही भेज रहे थे। कहते थे कि जव ये मुसलमान वन गये है तो क्यो जा रहे है ? कैम्प के इन्चार्ज को मैने डी० सी० के पास भेजा। आखिर वह मान गया। सवकी गुप्त रूप से तैयारी होने लगी। कैम्प के इन्चार्ज ने मुझसे आकर कहा, "तुम यहा की सव स्त्रियो को ले जा रही हो। अच्छा है। पर सुना है जो लड़की तुम्हारे पास है तथा दूसरी, जिसे पुलिस का अफसर रखना चाहता है, इन्हे रास्ते मे उड़ाने की साजिश हो रही है।" वड़ी मुश्किल आई। मैने उन दोनो के सिर के वाल खुलवा कर उनका अजीव-सा लिवास वनाया। गरम फटे हुए कवल ओढाये। कमर झुका कर चलने को कहा। सायकाल को सव लोग निकले। उन लडकियो को लेने के लिये सिपाही आया हुआ था। और भी वहुत से पाकिस्तान की फौज के सिपाही थे। उसने सवको कहा, "देख देखकर स्त्रियो को जाने देना।" वे सवको देख देखकर आगे भेजने लगे। जो आगे निकल जाती, उसे डाट कर रोकते थे। उन लडकियो को मैने वीच मे रखा था। कभी उनके आगे रहती थी, कभी पीछे। वे दोनो काप रही थी। प्रभु की कृपा से वे अंधेरे मे पहचानी नही गई। हमे करीवन एक मील पैदल चलना था। आगे ट्रक थे। पाकिस्तान का कैम्प कमाण्डर भी वहां तक साथ आया था और डी०सी० ने मेरे पास कट्रोल अफसर को भेजा था कि उन्हे अच्छी तरह वैठा देना। वहुत से ट्रक लाइनवार खडे थे। रेडक्रास की वे विदेशी वहने तथा साहव भी थे। उनकी कार साथ थी, जिससे सवको वड़ा सहारा मिला। रास्ता आराम से कटने की आशा वंधी। सव स्त्रिया मेरे आगे-पीछे थी और कहती थी, कि मै उनके साथ वैठू। मैने उन्हे समझाया कि सवके साथ कैसे वैठ सकती हू ? तुम निर्भय होकर वैठो। मैने सवकी गिनती करके ट्रक पर चढ़वाया। स्त्री-वच्चे-पुरुप सव मिला कर लगभग एक सौ अस्सी थे। सव के पीछेवाली ट्रक पर मै वैठी। सव वच्चे तथा वे दोनो लडकिया जिन्हे मै मुश्किल से लाई थी, मेरे साथ थे। ट्रक चलानेवाले सव पठान ड्राइवर थे। इनके साथ कुछ फौजी सिपाही भी थे। ये लोग हमे कुछ ऐसी नजर से

घूर घूर कर देख रहे थे कि भय मालूम होता था। न जाने कब क्या हो जाए। हमारी ट्रक दस कदम चलकर रुकी तो उसपर दो आदमी चढ गये। एक तो किसान दिखाई देता था,दूसरा वर्दीपोश सिपाही था। उस लड़की ने,जो मेरे पास बैठी थी,मुझसे कहा, "बचाइये, वह आ पहुचा।" जब वह ट्रक पर सवार हुए तो ट्रक चल पडी। अब वह किसान स्त्रियो को तग करने लगा। कभी एक को धक्का दे,कभी दूसरी को। स्त्रिया चिल्लाने लगी और मुझसे कहने लगी, कि इसीलिये हम कहती थी कि नही जायेंगी। मैंने सब से कहा, "देने दो धक्का, अभी ट्रक रुकवा कर हम पूछते है कि यह कौन यहा बिना मतलब चढ गया।" यह सुनकर वह उठा और ड्राइवर के पास जाकर बैठ गया। मन मे बड़ा भय लग रहा था। कहीं यह इस लड़की को ले तो नही जायगा। मै इसे कैसे बचाऊगी ? टेढी जगह है, एकदम ट्रक से उतार कर ले जायेंगे, हमसे कुछ करते नही बनेगा। वह सिपाही मुझसे कहने लगा, "आप जानती है कि इस लडकी के लिये मुझे कितनी दिक्कते उठानी पडी है। मेरे घर के सब अलग हो गये है।" मैंने कहा, "मै सब सुन चुकी हू। तुमने इसे बचाया है। तुम्हारे जैसे वीर भाई अगर सब होते तो कितनी लड़किया आज बच जाती। मै तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देती हू। भगवान् तुम्हारे सहायक होगे। वही तुम्हे इस नेक काम का फल देगे। तुम्हारी वजह से यह लड़की भारत जा रही है।" ऐसी उल्टी सुनकर वह हैरान होगया और कहने लगा, "यह आप क्या कह रही है ?" मैंने कहा, "मै सच कह रही हू। भगवान् अच्छे-बुरे सब काम देखता है।" उसने कहा,"अच्छा, आप इसे अच्छी तरह ले जाइये और इसकी मा के सिपुर्द कर दीजिए।"मै चकित रह गई कि ज़रा-सी देर में उसकी बुद्धि कैसे ठिकाने आगई थी। एक जगह ट्रक रुकी। वह उतर गया। असल में इसने ही उस बदमाश किसान को चढ़ाया था कि वह जरा हल्ला-गुल्ला मचाए तो शायद वह डरकर साथ आजाये। हमारी ट्रके सराय आलमगीर पहुची। वहा सबको उतार, एक ट्रेन पर बिठा दिया गया। उसमे अलीबेग कैम्प के शरणार्थी भी थे। सब ट्रेन पर चढ

गये । पर मै आगे ही वढी जा रही थी, ट्रेन पर चढ़ते भय मालूम हो रहा था । एक डिव्बे में कुछ सिपाही थे । हमें देखकर कहने लगे, "इस डिव्बे में वैठिये ।" परन्तु प्रभु हर समय सहायक होते थे । मै आगे चली गई और बीचवाले डिव्बे मे चढ़ी । मै, वे दोनो लड़कियां, श्रीमती मोदी और सब वच्चे एक साथ थे । सिर्फ दोनों नौकर और मेरा लड़का सुरेश छूट गया । वे कही और वैठ गये होगे यह सोच कर हम चुप होगये । डिव्बे में वहुत भीड़ थी । जैसे-तैसे भीतर घुसे । रात का समय था किसी ने दियासलाई जलाकर कुछ रोशनी की । देखा कि अलीवेग कैम्प के कुछ पुरुष, औरतें तथा वच्चे हैं । सव औरतों को वड़ी मुश्किल से वैठाया । पर मुझे वैठने के लिये जगह न मिली, मै खड़ी रही । जिस लड़की को मै लाई थी उसका चाचा मिला । मैंने उसे उसके सिपुर्द कर दिया । वह वहुत धन्यवाद देने लगा । हमे सारी रात इस अंधेरी ट्रेन में काटनी थी । चार वजे सवेरे उसे हिन्दुस्तान रवाना होना था । भय से किसी के मुह से आवाज तक नही निकल रही थी । दुर्गन्ध इतनी थी कि सांस लेना मुश्किल था ।

कोई तीन वजे का समय था । चाद की थोडी-थोड़ी रोशनी भीतर आ रही थी । एक वर्दीपोश पाकिस्तानी सिपाही गाडी मे चढा । जहा सामान की सीट होती है वहा हमारे कैम्प की एक स्त्री वैठी हुई थी । एक जागीरदार का परिवार हमारे कैम्प में रहता था । वह उसी परिवार की थी । यह वहां से अच्छी तरह आई थी । इसके साथ ही मेरी लड़की शीला वैठी हुई थी । वह सिपाही उसका वाजू पकड़ कर खीचने लगा । उसके पास बच्चा था । उसने कहा, "मै वच्चा छोड़ कर आती हू ।" उसने नीचे छलांग लगाई और सीट के नीचे छिप गई । शीला ने मेरे ऊपर छलाग लगाई । मै उसे लेकर वहां आई जहा वाकी लडकिया वैठी थीं । अभी मै खड़ी ही थी कि सिपाही ने मेरा वाजू जोर से पकडा । मैंने सीट पर वैठते हुए मुड़ कर देखा, उसने सगीन निकाल कर मेरी पसली पर रखी । सव वच्चे देख रहे थे । वह कहने लगा, "वता तूने उसे कहा छिपाया ? नही तो मै सगीन अभी भोकता हूं ।" जैसे विजली कौंधी । मैंने पुकारा, "भगवन् यह क्या । जीती हुई

वाजी हार रही हू।" सामने वह स्त्री सीट के नीचे छिपी हुई थी। एक निगाह उसकी ओर थी, दूसरी वच्चों की ओर। एक विचार तडपा, नही कोई साथ नही देगा। इसे वचाना ही होगा। मैंने कहा, "भौंक दे। मैं चाहती हू कि इस दुनिया से मेरा छुटकारा हो जाय।" "क्या तू चाहती है कि तेरा इस दुनिया से छुटकारा हो जाय ?" यह कहकर उसने संगीन उठा ली और जिस ओर लड़कियां वैठी हुई थी उस तरफ गया और कहने लगा, "ये कौन लड़किया वैठी हुई है ? वह लड़की नही मिली तो इनमें से एक ले जाऊंगा।" यहा वहुत-सी लड़किया इकट्ठी वैठी हुई थी। वहा पर वैठे हुए पुरुप आवाज लगा कर उस स्त्री से कहने लगे, "निकल कर चली जा, वच जायगी।" जव उसने मुझसे पूछा, 'ये लडकिया कौन है?" तो मेरे मुह से अचानक निकला, "ये मेरी वच्चिया है।" वह कहने लगा, "सव" ? और वहां से मुडा। पर तभी उसकी नज़र सीट के नीचे उस स्त्री पर पड़ गई। उसे निकाला और कहने लगा, "तुमने मुझे धोका दिया है। मै तुम्हे इसकी सजा दूगा।" वह कहने लगी, "वीरजी (भाई) मुझे माफ करो।" इतने मे उस स्त्री की मा ने खिड़की से वाहर देखा और चिल्ला कर आवाज दी। सवेरा होगया था। वह भाग गया। मैं तो समझती हू, भगवान् ने मेरी परीक्षा ली थी। कुछ भी हुआ, प्रभु ने मेरा प्रण निभाया। और हम सव सकुशल अमृतसर आ पहुचे।

एक मजिल का अन्त होगया। दु:खो की घनघोर घटा पीछे छूट गई। नये जीवन का सवेरा चमकने लगा। भावो ने दिल को इतना जकड लिया था कि वहुत देर तक तो विश्वास ही नही आया कि हम भारत माता की गोद में पहुंच गये है। गहरे अन्धेरे में से जव कोई रोशनी में आता है तो एकाएक उसे कुछ दिखाई नही देता। कुछ भी हो यह दास्तान यही खत्म होती है। आगे की कहानी उगते प्रकाश की कहानी है। उसे सव जानते है।